

संस्करण अक्षयतृतीया 1987

मूल्य तीस रुपये मात्र

लेखक रामनिवास शर्मा

प्रकाशक
कृष्ण जनसेवी एण्ड को
दाऊजी मन्दिर भवन
बीकानेर 334001

मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स
चन्दन सागर बीकानेर

MANZHAL (RAJASTHANI NOVEL) Rs 30-00

मांझळ

राजस्थानी भाषा साहित्य एव संस्कृति अकादमी बीकानेर सूं
'पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार' सूं पुरस्कृत उपन्यास



कृष्ण जनसेवी एण्ड को., बीकानेर

म्हारी बात

भारतीय इतिहास माय अठारवी सदी अस्तित्व री रक्षा रो युग हो। सगळा राष्ट्र आपरै अस्तित्व न राखण खातर जूझ रयो हो। बी बेळा मिनखा री के हालत हुय सकै इं री तो कल्पना ही करी जाय सक। इं उपन्यास री नायिका धनकी आपर अस्तित्व री खोज माय भटकती एक लुगाई है।

राजस्थान री संस्कृति कुर्बानी री है, बलिदान री है जौहर री है। इं कारण राजस्थान री रमणी खास तौर सू ओ मान मुरतब चाव।

समाज, अस्तित्व री खोज माय भी जिस्म री भूख न भुलाय कोनी सक हा। धनकी जिस्मानी भूख सू अनभिग ही। वा आपरी अस्मिता री खोज माय लाग्योडी ही। पण समाज बी र अस्तित्व न भुलाय न बी रा एक परम्परागत रूप ही राखणो चाव हो। पण धनकी आपर परम्परागत रूप माय आपरो नूवो चरो मा' रो बोध करावणो चावै ही।

औरत री आ महती इच्छा रैव क बा पत्नी भी हुव अर सागै सागै मा भी। जे कदास मा नी बण सक तो मिनख र सागै सोवणो अकारथ मान। बाझड़ी नी कवाणा चाव। मा बण न आपरो सगळो अस्तित्व भुलावणो चाव। परवार री बूढ़ी वडरचा सू सुहागण भागण री, दूधा न्हावो अर पूता फळो री आसीस पावणो चाव।

धनकी एक समस्या है। बी समस्या रो समाधान नी तो धनकी र कन है अर नी समाज री व्यवस्था कन पण धनकी सघष माय लाग्योडी रवै। अन्त म आपरो अस्तित्व खोय न अस्मिता न राख।

इण माय मन किती सफलता मिली, ई बाबत तो विज्ञ पाठक ई बतासी।

डा सत्यनारायण स्वामी अर श्री माणक तिवाडी 'ब धु' रो घणो आभारी हू, जिका रो पूरो सहयोग मिलण सू ही पोथी छपाई जाय सकी।

श्री कृष्ण जनसेवी अर श्री दीपच द साखला रो घणो आभारी हू, जिका र उत्साह र कारण आ पोथी इण सोवण रूप माय छप सकी।

आखातीज स 2044
पारीक चौक बीकानेर

—रामनिवास शर्मा

घणमानीता आदरजोग
हिन्दी अर राजस्थानी रा ख्यात विद्वान
आचार्य श्री अक्षयचन्द्र शर्मा
न 73 वें जलमदिन र मौक
घणमान समपण

मारग

बात पसवाडो फोर। नूई अर पुराणी। पसवाड सागै नूई बाता ऊपर आ जावै अर पुराणी बातां नीच दह जाव। पसवाड साग नूई अर पुराणी बाता रा क्रम इसो चाले के आज री नूई बात काल पुराणी अर काल री पुराणी बात आज स्यात री नूई बात हुय जाव। ईं असपाडै पसवाड साग नूई अर पुराणी बातां मिल न रोळ खोळ हुय जावै। पछ अ सगळी बाता भेळी हुय नै मीठ घाव-सिरखी सतावै। वां बातां न बार बार कुचरनै देखणी पड। वै सगळी बातां काल री सी लाग, पण वांरो इतिहास बडो ही लांबो हुव। इण कारल इतिहास री छोटी अर मोटी बातां काळज मे अटक्योडी रव, ज्यू मिसरी री हांडी मे बास रा घोचा। दूखणिय रो खरूट उतरचा पछ मीठी मीठी खाज आवै अर बीन पपोळचा जी सोरो हुव, उणी तर बाता र घावां नै कुचरयां जी सोरो हुव अर आत्मा न सुख मिल। इण सोरप र सागै ई भोग्योड दुख री टीस ई सदा ही घुळघोडी रवै है।

अ सगळी बाता बहोत बरसा पली री है। पण अै अपणै-आप ही याद र दरवाज कनै आय न उण नै खडखडावण लाग जावै। इार न लारली बातां न कुचर न याद करणी पड। ब सगळी बाता हरी हुय न आख्यां र साम कठपुतळी री तर नाचण लाग जाव। मुगला र घोडां रा घूमता घूमता खुर घसीजग्या जण मराठा रो घोडलियो दिखणाद सू उतराद री धरती माथ दौडण लागग्यो। राजस्थान री रजपूती अर अवध री नवाबी मराठां र नाव सू ई थर थर काप ही। दिल्ली रो शाह आलम दूजो कण ही नवाबा री गोदी मे बठ हो पण ही महाद्जी सिंधिया री। खानगी रांड मो डोलतो दिल्ली

रो राज सिंधासण ढैवण लागग्यो हो । फिरग्या री नूंई उभरती ताकत अेके सागेई दोनां कानी गोळयां चलायी जिण सूं मराठा रो घोडलियो मरग्यो अर मुग्लां री राज घराणो ढह पड़यो । राजपूताने रा राजा चोथ देवता देवता कंगाल हुयग्या । आ सगळा री आसे फिरग्यां में अटक्योड़ी ही । अे सगळी वातां काल री सी लागै है ।

इतिहास रा पाना घणा ई छोटा हुवै । आठ सौ बरसां री, बीस पीढ्यां री लाम्बो इतिहास थोड़ा सा पाना में समायग्यो । काळे रा फंदमें फकतावळो चालै अर वो आप री चाल में बाकी सगळां नै भुलाय देवै है । को पतो कोनी चालै क कद कोई हुयो अर कद कांई हुय जासी । समय री माया, सांचाणीज, अपरंपार है । सारली बातां नै इयां चूमणो चावूं जियां धण रा होठ । मुसळमानां रो मरणो ई महलां सारै हुयो अर मराठा ई उतराद सूं लुगायां मंगावता मंगावता मरग्या । रजपूती दारू मारू रै सागै ई सायटीजगी, अर जिकी थोड़ी घणी शेष रयी वा सगळी री सगळी ठुंस लेयर सोयगी, जिकी उठायां उठै न जगायां जागै ।

हूं कठै भटकग्यो ! सुलतानां लारै, मराठां लारै, रजपूतां लारै । अै सगळा पाणी रै बुलबुलां री तरै थोड़ीक ताळ उभरनै पाछा विसूजग्या जियां बादळां में चांद ।

अर चांद ! लांबै चोड़ै आसमानी आभै में चांद होळै होळै गिगनार सी ऊंचो चढै हो । बान्ळा रा धोळा धोळा चूला चांद रै सागै खिलवाड़ करै हा । कणी ई वै चूला चांद माथै चढै हा अर कणे ई असवाड़ै पसवाड़ै भागै हा, जाणै नूंई बीनणी कणै ई घूंघटो काढै अर कणै ई मूंढो उघाड़ै । चांद तो इयां ई धण रै मूंढै सिरखो फठरो लागै हो, पण खिलवाड़ करतो तो और ई सुभावणो लागै हो—सुहागरात रो सो । मधरी चालती पून सुतर सवार री दाढी सूं लुकमींचणी रम ही । ढाण पड़योड़ी सांढ में हाल जवानी आळी जान बध्योड़ी ही । सूसाडा मारतो निदरोही सार रैवतो जावै हो । सवार कण ई पाछै कानी जोव हो नो कण ई सामनै उघड़ती काळी डूंगरी कानी । खुली

फेल्योडो रोही सामने हो। पोहर अेक रात ढलगी ही। सवार रै लिलाड माथै चिंता री हळकी हळकी लीकां मंडै ही, बिखरै ही। बो बेगै सूं बेगी डूंगरी कनै पूगणो चावै हो। सोच में भरयोडो थोडी थोडी ताळ पछै आप री दाडी माथै हाथ फेरै हो, जाणै आप रै पुराणै दिनां नै कठै ई जोवै हो। उण री सांढ उण रीज तर ढळण लागगी ही पण चालै इयां हो जाणै खेत री मारग हुव। सारलो पोड मिटतां कोनी उणं सूं पैला पाछी आयर आपरो पोड ओर मांड देवती। उण वासतै बो पैली गवांड री सो हो। उण नै ओ भी बेरो हो के उण रै सवार नै अठीनै कठै जावणो है। इण वासतै सांढ अेक चाल सूं काळी डूंगरी कानी चालै ही।

बात घणी जूनी है। सतजुग री। जणै राम बनवास भोगता हा। रावण सीता नै हरनै लेग्यो हो। सीता नै पाछी लावण वासतै राम वानरां-भालुवां री सेना बणायर लंका माथै धावो करयो हो। धावै में लक्ष्मण रै शक्ति बाण लागग्यो हो। हडमान संजीवणी बूटी लावण वासतै हिमालय पहाड माथै गयो हो। पण संजीवणी बूटी री पचाण नीं हुवण रै कारण बो सगळो पहाड ई उठायर ले जावै हो जणै भरत सोच्यो क ओ कोई राक्षस है जको राम माथै नाखण वासतै पहाड ले जावै है। आ सोचर बो बांण मारयो। बाण सीधो हडमान रै गोड माथै लाग्यो। हडमान रै बांण री सागीडी लागण सूं हाथ रै सहारे सूं कांध माथै राख्योडो पहाड हिल्यो। इण हिलण रै सागै ई पहाड रो खूणो भटकै सूं टूटग्यो अर धूळ रा थपेडा खांवतो खावतो अठ आय पडियो। जिकै दिन रै पछै अर आजे रै दिन तांई ओ डूंगरी हडमानजी री डूंगरी रै नांव सूं जाणीजै है। डूंगरी री चोटी माथै हडमानजी री अेक बगली बणगी। बगली माथै लाल-लील धजा फेरावै ही। पूं-पूं रै दिन द्रोणपुर, खरबूजी कोट अर चदेरी सूं जातरी दरसण करण वासतै आवै। सिंझ्या रा आवै अर आखी रात जागण देवै। दिनूगै पाछा टुर जावै।

सुतर-सवार कठीन ई देख कोनी हो। सीधो चालतो जावै हो। इतै मे बिरखा मे डूंगरी सूं नवणवाळो नाळो आयग्यो जिण रा दोनूं किनारा

बारट्या, करा, खेजडा अर घोरां सू भरयोड़ा हा। नाळो मारग सू च्यार पाच हाथ नीचो हुय न बवतो हो। बिरखा हुवती जण डूगरी रो सगळो पाणी सूसाटा मारतो नाळ मे समा जावतो। पाणी र साग गळगचिया, सूकी घोरा आ जावती, इण कारण बिरखा हव्या पछ नाळो आ सगळा झाड झखाडा सू भरयो रवतो अर जिक बासतं नाळ न ठावा-ठावा पग मेलर पार करणो पडतो। बोहळी ताळ सू मून सुतर सवार अठै बेत बेत' कयर नाळो पार करण सारू साद रो होसलो वधायो। थोडीज ताळ मे सवार नाळो पार करनं भाखरा र मारग माथ आमग्या। डूगरी सावळ दीखण लागगी ही। कोसा ताई लाबी चौडी डूगरी उण न खाती सूणी भीत सिरखी लागै ही। चादण सू धुप्योडी डूगरी समदर सू निकळत कलास ज्यू जगमगा वती ही। टेचरी माथ री धोळी बगली कलासपति रै चाद जिसी सोव ही।

●

डूगरी कनै

सवार डूगरी री जड़ां मे पूगण लागग्यो हो। बगसी र सामै लागत जागण री सैरां सुणीजण लागगी। मगन हुयोड़ो जागणियो इकतारै माथ गाव हो, अर लारै लार सगळा सुणणिया टेर सार हा। जागणियो आगै आगै गाव हो—

लका मोहे जावण दे, मोह काम जरूरी।
रामचन्द्रजी री सीता नारी हर लीनी रावण बळ भारी।
पतो लगावण दे, मोहे काम जरूरी, लका मोहे जावण दे।

ढोलक माथ थाप लाग ही, झीझ्या साग बाज ही। हरजस सुणतो सुणतो मगन हुयोड़ो सवार भाखर रो मारग पार करन आथूण न चालण लागग्यो। होळ होळै डूगरी री चढ़ाई आवण लागगी। साढ ऊभी राखर, पलाण री खूटी झालर सवार लटूबग्यो अर हेठ उतरन मोरी झालर आग आग चालण लाग्यो। घणी ऊचाई आवण लागी जण गुफा री चढाई सरू हुयी। सवार साढ नै जकायर पलाण उतारनै खेजडी र सार खडो करयो अर मोरी पेडो र माथ दी। चार सू आथो छुत्योडो बोरो साढ र सामै चरण सारू राखर आप गुफा कानी टुरयो। लकीर ज्यू निजर आवणआळी डगर ऊभी उठण लागगी। डगर माथ डूगरी री आधी पडदी छिया पड ही। सवार ठावा ठावा पग मेलतो चढ़यां जाव हो। सो अेक पावडा चढ्यो जण सामै बीस तीस हाथ खुली बाखळ ज्यू निजर आई। डाव हाथ कानी खुलो मूड हो, सामन गुफा रो बारणो हो, अर जीवण हाथ कानी डूगरी भीत ज्यू ऊभी ही। पून रा फटकारा जोरां चढ्या हा। गुफा र कन धूणी ही। धूणी कन ढढा

थार अर दाणा अेक कानी पड़्या हा। कानी आसण बिछयोड़ो हो। अेक कानी कमण्डळ पड़्यो हो। धूणी में अेक चिमटो ई रप्योड़ो हो। धूणी में उठता धूंवे सूं उण री चेतनता मालम पड़े ही।

सवार पसरती जोअर गुफा रै बारणै का रानी अर कमण्डळ सूं हाथ धोयर पाणी पीयो। सगारा करनै पाछो आयर रली री गिराणो सेयर सोयग्यो। हरिभजन री ओरां रै सागे नींद ई पलकां माथै उतरण लागगी। घुरगी। मौत सी घुरगी जिकी जागणियां सूं टूट ही का सूताड़ा सूं।

झांझरको हुयग्यो हो। चांद आपूण नै जावण लागग्यो हो। उण रै पहर माथ आधी रात रै जागरण री उणागो निजर आवै हो। तारा छिपण लागग्या हा। ज्योत्स्ना अभिसारिका आली रात सुरति-सुख सेयनै पाछी घर जाय ही। धून री चाल में ठराव हो, जाणै जावती वेळा बा पाछी मुड़ मुड़ नै सार देख ही। ओढणै रै पलै सूं झड़ता फूल घर रो मारग बतावै हा। रात धोळी पड़ण लागगी ही। जागणियां परभाती गावण लागग्या हा।

सवार पसवाड़ो फार नै उठ्यो। हाथ मूंडा धोयर पाणी पीयो अर डूंगरी माथ चढण लागग्यो। डूंगरी माथै चढण रो मारग सूवो कोनी हो। अेक मारग तो हो गुफा रै सारै ई छातीधूणो—जिको पुजारी री बगर हो खतर सूं भरयोड़ो। दूजो मारग हो डूंगरी रै सामनै जातरी लोगां सारू—लाम्बो चोड़ो सोरो पण ऊबड़-खाबड़। जातरी दिन रा ई सूवै मारग सूं डूंगरी माथ चढ जावता अर दिनूगै पाछा सागी मारग सूं ही नीचे आय जावता। अेकलो दोकलो आदमी डूंगरी माथ चढण री हिम्मत ई नीं करतो नी। चढती अर उतरती वेळा पूरो ध्यान राखणो पड़तो। जे कदेई भूल चूक अर असावळ सूं किणी रो पग तिसळ जावतो तो बो सेंकडूं हाथ नीचे भाखरां में पड़र रामशरण हुय जावतो। अेकलै दोकलै जातरी माथै घूमता-फिरता जरख अर गादड़ा धावो बोळ देवता। इण वासते जातरी टोळ रा टोळ बणायनै लगडिय बाबा री जय बोलता बोलता चढता अर उतरता।

सवार गुफा बननी डगर सू उतरत ज्यू डगमा भरता भरतो डूगरी माथ पडग्यो। बगली सामै अेक छोटी सोक निवारी ही। पचास अेक जातरी चौक में बठा जायण देव हा। बगली रो किवाड़ खुलो हो। मीठ तेल रो दीयो घसे हो। बगली म हाथ माथै पहाड़ उठाय बजरंग बली रा मूरती ही जिको सिंदूर अर मालीपाना साथ-साथर आप रो आकार ई खोवण लागगी ही। चादी रो अेक छतर देवळी माथ लटके हो। दीय सू निकळत काजळ बगली न माथ सू काळी कर राखी ही। छतर री मोळी आप रो रग ई गमा चुकी ही। दीयै कन धूपियो राख्योडो हो। सामै पडी थाली मे चूरमो अर चिन्नया थाल्योड़ी ही।

अगूण आम म सफेदी चमकण लागगी ही। जावतो अधारो भागत भूत ज्यू लखाव हो। होळ होळ सफेदी गरी लाल हुवण लागगी।

सूरज री पहली किरण सीधी बगली र माय बडण लागगी। जागण बद हुयग्यो हो। सगळ अेवै साग ई जय बोलर, बगली लार कुड हो बठ पाणी पीवण सारू जावण लाग्या। जातरयां र पीवण खातर ई हो उण कुड रो पाणी। सूरज री किरणां डूगरी माथ खेलण लागगी। तावडो आकरो हो। दूर दूर ताई पसरयोडो रोही तावड़ म सिनान कर हो। दरसण कर नै, सिंदूर-भभूत रो टीको लगायर जातरी टोळा मे टुरण लाग्या।

भीड हुवण सू सवार दास कर्ने ही, निसकारो न्हाखर ठरग्यो हो। ज्यू-ज्यू भीड खिडण लागी बो आग सिरकतो गयो। पुजारीजी इकतारो सामै राख्या, आंख्या मीच्या सुस्ताए र्या हा। छमछमिया कन पडया हा। कन पूगर सवार जयकार करत पगा कानी हाथ करयो। पुजारीजी महाराज आधी खुली आख्या सू पूछयो—कणै आयो ?

'नीच तो पोहर अेक रात गया ही पूगग्यो हा' सवार आग कयो—"अठ अबार ई आयो हू।'

सूरज बोहळो ऊचो चढग्यो हो। सगळी डूगरी तावडै मे रमै ही। पून रा फटकारा जोर सू लागै हा। जातरया री टोळया नीच जावती दीख ही।

डडा थोर सू डूगरी भरी ही। इकी दुकी झाडक्या ई ऊभी दीख ही। डूगरी री झाडघा मे तळाव कन ऊभा आदमी, वळध अर दूजा जिनावर गरमीगणा सा दीखै हा। पुजारीजी उठ न इकतारो, छमछमिया, अर आसण बगली मे राखर पढदो कर न भोग लगायो। ताळी बजायर परसाद री थाली बार काढी अर बारणो ढक्यो। कुछ कन पडी, तूबी न ठादी राखर कयो—'चालो, नीच हालां।'

दोनू जणा टुर पडधा।

भात बळी रो वगत हुयग्या। दोनू जणा जीमर आप आपर घघ लागग्या। सवार साढ न पाणी पावण वास्तै नीचै आयग्यो। पुजारीजी गुफा म जायर आडा हुयग्या हा। सवार साढ नै पाणी पायर पाछो आयो अर गुफा र बारणै कन आयर सूतो तो देख्यो क बोहळी सारी चमचेडा गुफा री छात सू टिर ही। बो सूतो सूतो देखतो रैयो क अर किया काम विह्वल हुयन मादा कानी आग सिरक है, मादा न मूघ है, अर उण मे काम जाग्रत करन किया जबरदस्ती उणरै साग भोग मर हू। आग आपर सबध मे सोचण लागग्यो—हू आ स्तनजीवी चमचेडा सू घणो बेसी कामी हू का प्रेम र वशीभूत हुयर ई ओ सगळो काम करू हू। ओ आखो ससार काम रो ही परिष्कृत रूप है। अ जीव जन्तु मिनखा सू ही मेळ खावै। मिनख जीवां सू मिलता जुलता है का सुधार रो साग लेयन आपरो चैरो बणावटी बणायन राख है का सगळो जीवण ही आ सगळी बाता रो अेक छोटो सस्करण है। पाप करू हू तो पुण्य काई है अर ओ पुण्य है तो पाप काई है ? पाप अर पुण्य री सीमा निर्धारण रो तो म्हारो काम कोनी पण सगळी बाता करता थका पाप री सीमा मे वडण रो विचार कोनी। तो फेर म्हारो इण र साग काई रिस्तो है जक सू ठाकरा रो समाचार सुणता पाण मिलण वास्त बहीर हुयग्यो। काई ओ आकपण है ? आकपण री व्याख्या कोनी। आ सोचता-सोचता सवार रो माथो पाप अर पुण्य र बिच भचभेडा खावण लागग्यो। हारन सवार पसवाडो फोर न आख्या मीच्या सोवण रो जतन करण लागग्यो।

जीवण अेक विडम्बना है या लाबो अर उळझ्योडो मारग । जिता बो ल्गावो है विताेई उळझणा सू भरयोडो है । आदमी वित्तोई रहस्यमय है जितो जीवण । इण वास्त आदमी रो दूसरो नांव है रहस्यमय, अर जीवण इण रहस्य रो रहस्यमय पटळ है ।

सिझ्या पडण लागगी ही । पुजारीजी दीया बातो करण वास्त गया परा हा । सवार यखत रो पसवाडो फेर हा । होळ होळै रात री चादर लाबी हुवण लागगी । चमचेडा उड उडर गुफा र बार आवण जावण लागगी ही । अेकम रा चाद आभ मे उभरयो कोनी हो, ऊगता ई आथमीजग्यो हा । पुजारीजी आरती करन पट ढकर पाछा आया ।

राणा ! ' पुजारीजी कयो की थानयोडा सा लागो हो ।'

'काई यतावां ? मायलो मन आकळ-बाकळ हुय रयो है ।' राणा पडूत्तर दियो । आग बोल्या—'आपसू सलाह सूत करण वासत ही आयो हो। पण पूनम हुवण रै कारण आप न वखत कोनी हो इण कारण बात कोनी हुय सकी ।'

आसण माथ बठता पुजारीजी कयो—'अब आपा थावस सू बाता करसा ।'

पुजारीजी र सामन बठतो थको राणो बोल्यो—मन सनेसा मिल्यो है क ठाकरसा फोत वेलग्या । मन वेगो ई गाव बुलायो है ।' मूढ माथ समस्या री लणा मड ही जण बो आग बोल्यो—'आग थारो काई विचार है ?

इत मे बाबाजी धूणी म छाणा नाखर फूक मारन आगी चेतन कर दी । छाणा हाळ हाळ जगण लागग्या । साग साग धूवा ई निकळै हा । छाणा सू निसरती लौ म बाबा राणा रो मूढो घूर घूरन देखै हो । उण हैंकारो भरयो— हा' । थोडी ताळ ताई काची मौत री सी मून बापरगी । पछ बाबाजी बोल्या—'थार जीव म गादडो है ?' इण बोल राणा र साम अेक

जीवता सो सवाल सरका दियो, जिण सू उणरो जी आकळ बाकळ हुवण लागग्यो। लारली सगळी बात नूव सिर सू आंख्या र साम नाचण लागगी। घाव, जिकै सूकण लागस्या हा, पाछा हरया हुयग्या। राणो काई बोलतो। आप कमाया कामणा किणन दीज दोष। राणा मून हो, भाठ सिरखो। जाण ओ सवाल उणन नई किणी ओर न पूछयो हो। छाणा री ओग बधगी ही। बाबाजी री निजरा राणा काली ध्यान सू देखे ही। आज सू केई महीना पली री बात है जण वो अेक लुगाई न लेयर खरबूजीकोट जावतो अठ ठैरन गयो हो। बाबजी अेक गैरो हैंकारा भरया—'हू।'

•

गांव में

सिझ्या पडगी ही। गाव छोटो ई हो। कोई पचास घरा री बस्ती ही। ठाकरा रो गाव, करसा री बस्ती। गाव रै च्यारूमेर धूवो छावण लागग्यो हो। रात आभ री लाबी चादर नै लपेटणो सरू कर दियो हो। पखेरू नीमखेजड़ा री डाळया रै चिप्या बैठा हा। मिगसर रो महीनो हो। अधार पखवाडो। डाफर की मोळी ही। ढाबर राली ओढर झूपडा में सोयग्या हा। लुगाया सासरा नै छान में बाथ दिया हा। राणो बाखळ मे चूतरी माथ बैठो धूणी तपै हो। भायला कनै बैठा हा। हताया चाल रैयी ही। इतै में रावळै सू हलकारो मिलण रो सनेसो लेयर आयो। आवण रो पडूतर लेयनै बो पाछो गयो परो। पण राणै रो मन कोनी लागो हो। होळै-होळै सगळा जावण लागग्या। राणो चौंपियै सू घडी-घडी राख फफेडे हो कै किया ई ओग मिलै। राणो सूनो-सो बैठ्यो हो। धूणी ठडी पडण लागगी ही। हार नै राणो उठ्यो अर ठाकरा सू मिलण खातर चाल्यो। सीयाळै री अधारघुप रात, अर ऊपर सू डाफर री मार। राणो धूकडो वण्योडो चालै हो। रावळै रो बारणो खुलो हो। माय बडता ई चोकी ही जठै दरोगो बठो धूणी तपै हो। अधारै मे माय बडतो राणो जिन-सो लागै हो।

'कुण हुसी ?' पोळियो बोल्यो।

'ओ, तो हू !' राणै कैयो।

हाप तपायन ठाकुरसा सू मिल लो। बै थानै बोहळी ताळ सू उडीक है।' पोळियै फेरू बोल्यो।

घडसाळ मे बडत राण कयो—'तपता ई आया हा। पली मिल ही ला।' आग ओर मे जावतो बोल्यो। ओरे म दीवट माथै तेल रो दीयो चस हो। ठाकरसा दोलडी कामळ ओढ्या ढोलिय माथ बैठा हा। राणो दोनू हाथ जोड घणी खम्मा' कयने जाजम माथै वठण लाग्या। ठाकरसा बोल्या—'ओ काई कर है!' लार सिरकता हाथ सू जागा बतावता बोल्या—'अठै म्हार कन बठ। तू म्हारो मितर तो है ही साग साग सलाहकार ई है।' कनै बठतो राणो बोल्यो—'आज बेवखत किया याद करयो?'

'हू तन केई दिना सू अडीक हो। बोहळी बाता बतावणी चावै हो। पण दिन मे जण ही मिलता, कोई न कोई कन बैठो हुवतो। इण कारण बात हुयी ई कोनी।' आग काळजो टटोळता ठाकरसा बोल्या—'कोई मन री बात है जिकी सगळा र सामन बतावण री कोनी। इण कारण हारन छेकड रात न मिलण न बुलायो है।'

आपरो हुकम हुवै तो आ जान ई हाजर है।' राण पूरी अपणायत सू कयो।

ठाकरसा बोल्या—'इस विसवास सू ई तो तन बुलायो है।'

'आ तो आप री महरवानी है क आप मन वनू मानो हो।

'कोर मानण सू ही योनी हुवै, जको आप रो है बो आप रो ही रसी। परायो तो परायो ई हुव। इण बात र कवण र सागे सागे ठाकरसा री छाती रो भार हळको हुवतो सो लाग्यो। मूढ माथै छायोडी निराशा री रेखावा उडण लागगी ही जाण गम्योडी चीज पाछी लाधगी हुव। जागा छोडोडो काळजो आगासर आवण लागग्यो हो। कनै सिरकता ठाकरसा बोल्या'—जी री बात कवू █। हासी मत करया। थारो हासो करण रो ध्यान घणो रव है। इण बात माथ गेराई सू सोचणो है।

इया कोई सगळी बाता न हासी म थोडी ई टाळू हू। हासणजोगी बात माथ जरूर हासू हू।' राण कयो।

ठाकरसा मायसै दरद नै लुकोवता सा कवण लाग्या—'आ बात कोई दस महीना पली री है जद आपां कवराणीसा र ब्याव म भेळा हुवण सारू बिकरमपुर गया हा।' याद दिरावतां थका ठाकरसा कँयो 'आपणो डेरो सुजान सर र ठाकरां र डेर कन हो हो। वै आपणा बडा सिरदार है—आ तनै ठा ई है। सिरदारां र डेर मे आपणो आवणो जावणो घणो ही रवतो। बडा सिरदार आपणी माणस न दखी जण उणा रो विचार कीं गरो हुयग्यो हो। आ बात आपां सगळा रै कानां म पडण लागगी ही। बडा सिरदार बडा ही स्याणा हा। जठ तांई ब्याव रो काम नी सळट्यो, ब की को बोल्या नी। आपार रवानै हुवण र पल दिन जीमण देयन सगळां न गरी दारू पायी। अर दारू र नश मे ई बा म्हार कन सू माणस नै मांग ली। मन ई, मजबूरी र कारण, हां भरणी पडी।' राण न साव भरण सारू उकसावता थका ठाकरसा बोल्या—'तन आ सगळी बाता रो ज्ञान है ई।'

'हा, अ सगळी बाता तो म्हारै सामन ई हुयी ही। पण इण सू जी री बात रो काई लेणो-देणो है?'—राणो भोळपण सू बोल्यो।

ठाकरसा उण र भोळपण माथ मन मन म रीसा बळया अर ऊपर सू हासता थका बोल्या—'तू समझ कोनी। ब्याव रै पछ आपा उण न बठै ही छोडनै पाछा गांव आयग्या हा। आ सगळी बाता न' परवा माथ गिणता थका ठाकरसा बोल्या 'कोई साढी पांच महीना हुया है। जकै र पछ आज तांई ना तो रात न पूरी नींद आवै है अर ना दिन रा चन पड है। आल्या फाडता फाडता ई रात अर दिन रोजी न निकळ जावै। उणर बिना ना तो कसूबो ऊग अर ना गाल्डो मदमातो हुव।' बिरह री वेदना सू फफेडीजता ठाकरसा दोराई सू अेक लाबो निसकारो नाख्यो।

'उणर कांई लूबा लटक हा जिका थे तोड लिया करता?' राणै कयो।

ठाकरसा राण री नासमझी माथ मन मसोजर रयग्या। साचाणीन, भोळा साजन बरी री गरज पाळ। उणारो कळपतो काळजो बार आव हो—

'लै सुण ! तन सगळी होय री बात बतावणी ई पड़सी । तन ओ माल्मई है म्हारे सासरे आळा भाटी सिरदार अपणें आपनें घणा ऊचा मान है। भटियाणी आपरे पीहर रो गौरव लेयनें आपरें आप सू ऊंची पड़े है। भाटी सिरदार कोई म्हासू रिसतो करणो थोड़ो ई चावे हा, पण ओक र जद बें धाड़ो मारनें पाछा जावे हा, उणां रे लारें वार हो । रात-दिन चालता चालता बेंत सवार दोनूं ई थाकग्या हा । उण आफत मे म्हारा बाबोसा रातवासो देयर उणां नें बचाया हा । उण उपगार रो नतीजो म्हारो रिसतो हो पण जीवण मे उपगार अर रिसता न्यारा-न्यारा हुवें है । आं दोनां रो आपस में कोई मेळ कोनी हुवे ।' थोड़ाक सुसतार ठाकरसा आगे कैवण लाग्या—'ढोलो रै ढमाके म्हारो भाटी परवार सू रिसतो हुयो । ओक मजबूरी ओक रिसते नें जलम दियो । उणरो फळ मनें भोगणो पड़यो । भाटी सिरदारा री थोथी बहादरी रै सागै-साग आत रो भूठो दम ई भटियाणी आपरे सागै लेयर आयी । म्हारा बाबोसा जीया जितै तो भटियाणी उणा रै उपगार सू दबी-दबी रैयी, पण उणा रै धाम पधारया पछै अर सागै ई राठोड़ां अर भाटियां र झगड़ो हुय जावण सू उण रो मन खोट लायोड़ो सरपणी-सो हुयग्यो । म्हारी भीर राठोड़ा कानी रैयी अर मोकै-मोकै भाटियां नें मैं सांगोपांग धूड़ चटायी । अ सगळा कारण इसा बणग्या जिका सूं म्हां दोनां रै जीवण मे अळगाव उपजण लागग्यो ।

'मूड मूडावणो अर गडां रो पड़णो सागै ई हुयो । आपां जद बीदावाटी कानी सू आया हा । गांव मे सीयोदाळ जोर सू फल्योड़ो हो । मनें ई जोरां रो ताव चढण लागग्यो । तू पाछो मोरचें माथ गयो परो अर ▮ अठे ई रैयग्यो ।'

•

'सगळो गांव सियोदाऊ सूं भरलो हो। बुखार आवतो जणै डील टूटण लाग जावतो। दो-दो सीरख्यां अेकै सागै ओढ्यां ई सी को मिटतो नीं। कांळजो कांपण लाग जावतो आणै सी कांळजे में बडतो ई आवै हो। दो-तीन घडी इसी ही हालत रैवती। डील ताव सूं सिकण लाग जावतो। होळै-होळै सी लागणो कमती हुवतो। पसीनो आवणो सरू हुवतो अर ताव उतरण लागतो। केई दिनां तांई आ ही हालत रैवती। नीम अर अजवाण रो घासो लेवतो लेवतो मूंडो मीठै रो सवाद ई भूलग्यो हो। जीभ जहर ज्यूं खारी रैवती। सी पडण लागग्यो जणै सीयोदाऊ रो जोर कमती हुवण लागग्यो। केई दिनां तांई हूं ई इण री फेट में रैयो हो। कीं दूबळो ई दीखण लागग्यो हो।

इण सीयोदाऊ मनै तन सूं ई नीं मन सूं ई मुडदाळ बणा दियो हो। भटियाणी रै बरताव सूं ई हूं उपम्योडो रैवतो। हूं ठेकरांई छोडर अेक मामूली आदमी ज्यूं म्हारी घण मनै रैवणो चावै हो पण म्हारी ठकराणी म मैं माव ई की हो नी। रात दिन रो मनमुटाव म्हारै हेत री हेली नै खाली ई राखतो।

आ खाली हेली किणी नै खोजै ही। भटियाणी रै सागै अेक डावडी आयी ही जिकी वखत रै वायरै सूं निखरण लागगी ही। डावडी मांणस रो मनो फेर लियो हो। मांणस कोई वा धनको पहर अेक रात गयां कसूंबो लेयर आवतो जणै सागतो कै भटियाणी मे कसर है। उणरो नखरो भारी पडतो। हूं म्हारो आपो भुलायनै उणरी पलका मे खो जावूं इसो मोको उण मन कद ई कोनी दियो। वा आपर अहंकार मे ई डूब्योडी रवती। इण दूधड चितयां मे म्हार मन कसूब सूं सागीडो हेत घाल लियो।

गुलाबी ठड पड ही। हू सोवण सारू गयो हो। धनकी कसूबो लेयर आयी। दो घडी पली डील थोडो मारी हो, मन सिरखो। तुस लै ली ही। इण कारण म्हारी आंख्यां चमकण लागगी ही। कसूबो देयर पाछो कटोरो लियां जावण लागी जण मनै इयां मालम पडयो जाण काल री छोरी आज री कामणगारी हुयगी ही। उण री चाल मे मरवण रो सो आकपण हो। छात्यां मे कसाव हो। भरयो चरो दारू सो दीप हो। कांचळी री टूकयां मन नूतती लागी। हू भूलग्यो अपण आपनै अर उणन भी बोल्यो—'डील टूटै है, थोडो दबा द नी!' बा कटोरो राखर पाछी आयी अर मन दबावणो सरू करयो।

ओर मे अधारो भगावण सारू तेल रो दीयो चस हो पण दूजी कानी कसूबो अधार न ओर गरो करण मे लाग्योडो। हू सीरख ओढयां सूतो हो जिण कारण ऊपर सू दबावणो ताव कोनी लाव हो। मैं सीरख मे हाथ घालन दबावण सारू कयो। धनकी म्हार कयां मुजब डोलिय माय बठर दबावणो सरू करयो। जण मन इयां लाग्यो जाणं डोल सू आग रा गोळा अेक साग ई निकळ है। आ आस आग र सायर सू बडवानळ ज्यू बध ही। म्हारी आख्यां मे सुरखी दौडण लागगी ही। उण री कांचळी माय हाथ राख्यो जण बा सरम सू भेळी हुवण लागगी। मून भाषा मे बोली—'इयां काई करो हो!' अर बा हिरणी ज्यू क्याऊमेर देखण लागगी। मन इयां लाग्यो जाण म्हारी जुगां री भूख आज अठ तृप्त हुसी। जको म्हारो मन सदा मुरझायोडो रयो है बो आज मुळकसी। म्हार सरीर म चेतना रा सो सो बिच्छू अेकै साग ई दौडण लागग्या हा। धनकी न मैं कण म्हार कन सोवाण सी पतो ई कोनी चाल्यो। आधी रात ढळयां पछ जण बा जावण लागी मैं कयो क तन रोजीन ई आवणो है। भटियाणीजी माणस रो भाव देखर लारै रयग्या। बखत ज्यू ज्यू बीत हो माणस रो मोल मूघो हुवतो जावै हो। दारू सू सो गुणो उणरो नसो हो। माणस र आयां पछ तो अफीम रो टर्सरियो खुलतो ई कोनी। कसूबो बटार र माय पडयो पडयां ई पूरी मादकता दे देवतो। उणरी मादकता र आग कसूबो फीको लागतो। कन आयां पछ इयां मालम पडतो क जाण उण

रो सरीर उण री नी हुयर कोई दूज रो है—मभोग सुख री उण न घणो चाव हो। ठुकराणी पाळ सी ठडी ही तो आ रति सिरखी गरम। धनकी आपर अस्तित्व न म्हार अस्तित्व मे मिलायन अेक्जुट हुय जावती। मनै इया लागतो जाण हू अेक साधारण आदमी ज्यू उणर साग जीव हू, म्हारो आपो भुलायन। ओ मौको मन ठुकराणी भी दे सक ही पण दियो कदई कोनी। इता दिना ताई भूख माय री माय पसीजै ही जिकी मिटण लागगी अर धनकी रो रूप कुदण सो निखरण लागग्यो हो। ठुकराणीसा म्हारी उपेक्षा न सतराई सू सवता रया। पण उण मन अेक आदमी रो सो जीवण दियो।

'ठाकरसा बोहळा स्याणा हा। जमान रा घणा ठडा ताता दिन देख्या हा उणा। मिनखा रो स्वभाव जाण हा इण वासत धनकी रो ब्याव पला ई रचायग्या हा। कपडा म सगळा नागा हुव है पण गवाड म कोई नागो कोनी फिर। मैं धनकी न पासवान बणावणी चाव हो पण भटियाणीजी र स्वभाव सू वाकफ हो। कोई मौको देखर काम बणावणो चावै हो पण बो मौको कदई आयो ई कोनी। उण सू पला ई विक्रमपुर सू बाईसा र ब्याव रो नूतो आयग्यो जण आपा सगळा भेळा हुयर गया हा। पण भारी हुवण र कारण भटियाणीजी साग पधारया कोनी हा। उणा रो मन ही खोट सू भरयोडो अर मिस लियो दूजो ई। आग री सगळी बात तन मालम ई है। उणर बिना म्हारो मन कोनी लाग। किणी तर उणन पाछी लाव जण ठीक हुव।

राणो सोच समझर धीरज सू बोल्या—'सगळी बाता ठीक है। राज रजवाडा म इसी बाता हुया ई कर है। पण धनकी बिना थारो मन कोनी लाग आ बात म्हारी समझ मे कोनी आयी। लुगाई जिसी लुगाई आपर कन है पछ उणर कोई फूल थोडा ई लाग्योडा है।'

आ सुणता ई ठाकरसा ठडा पडग्या अर बोल्या—आ बात थार समझण री कोनी। थारो काम तो इतो ई है उणन पाछी लावणी है।

राण हूकारो भरता कयो— जण ठीक है। उण सू मिलर सगळी बात करसू। हुकम हुव तो अबार ई जावू परो।

धर कूचा धर मजला

पतरासर छोटो सो गाव है । थोडी सी बस्ती । गांव में एक मीठ पाणी रो कूवो अर अेक खार पाणी रो । अेक जोडो हो जिकै म कान सांई पाणी रवतो । बरसा री बरती ही । गांव सू दस घडी र मारग माथ भाटी सिरदारा रो राज हो । छह घडी माथ राठोडां री धरती ही तीन घडी माथ बीदावाटी ही अर बारै घडी माथ विक्रमपुर हो । इण तर पतरासर च्यारूमेर सू घिरयोडो गांव हो जिकै बन मू भाटी सिरदार निवळता । राठोडां री मार पडती । राजपूता री तीन च्यार बवाडी ही जिकै रात दिन तलवार री मूठ माथ ही हाथ राखता । व विक्रमपुर र राजा री सेवा मे लाग्या रवता । रेख चाकरी जिती भी आवती उण सू गुजारो चलावता । ठाकर दुजनसिहजी बडा ई जीवट आळा हा । आपरै पराक्रम सू पतरासर न ठाकरां री सूची म प्रधान पद दिराय दियो हो । भाटी सिरदार ई बखत बेवखत आसरो लेवता । बुजानसर रा सिरदार थोकळसिंह रा खास ठाकर हा । दुजनसिहजी र साग दो तीन लडाइयां म गया हा । बठ चोखी ईजत हासल हुयी ही । थाकळसिहजी र धाम पधारचा पछै दुजनसिहजी विक्रमपुर जावणो छोड दियो । दुजनसिहजी र अेक कुवर हो जिण रो नाव भगवतीसिह हो । भगवतीसिह भी आपर बाबोसा जियां तलवार रो धणी हो । धर धराणो रजपूतो री थोथी अकड मू तीच ही पडतो हो । मूठ री मार र कारण सगळा मान देवता, पण रिस्तो करण री वेळा सगळा नाक मे सळ घालता । इण कारण भाटी सिरदार भगवतीसिहजी सू आपरी बेटी रो रिस्तो करचो । पण उण रिस्त म बरावरी रो माण कोनी हा, अेहसान रो तकादो हो । इण तकाद मे भटियाणी री गरब भारी पडतो हो अर अेहसान उठावतो भगवतीसिह ।

कुवर भगवतीसिह रा धणकरा वरस बीदावाटी मे बीत्योडा हा। उणरो खास भायलो राणो अनूपसिह् साग ई रयो। बाबोसा र धाम पधारघा पछ ठाकर भगवतीसिह् न केई कारणा सू गाव मे ई रवणो पडघो।

ओ जमानो अठारवी सदी रो हो। रजपूती री मूठ ढीली पड़ण लागगी ही। आख राजपूताने म मारधाड रो बजार गरम हो। काळा री फौजा बारबार जयपुर, जोधपुर अर उदयपुर माथ धावो मार ही। बिक्रमपुर अेक कडल पड हो इण वास्त अठीन आवणो उणा रो सभव कोनी हो। तो ई शेखावाटी ताई उणा रो धावो चालतो ई रवतो। दिखणियां र लार-लार पिंडारी ई धाडो मारता रवता। इण वास्त बाधावास, खरबूजीकोट अर बिक्रमपुर रा खास खास थाणा हा। शेखावाटी सू आवणिया धाडेतिया न मारग म ई रोक अर बीदावाटी माथ बिक्रमपुर रो अधिकार राख। राजपूत खोखला हुवता जाव हा। राज राज म पडयत्र चाल हा। अेक भाई दूज भाई ने मार न राज हडपणो चाव हो। भाई भाई रो दुसमण हो। आपर स्वारथ री पूरती सारू राजा दिखणिया न अर पिंडारिया न मदत वास्त नूतता रवता। इण लालच मायकर राजपूता रो शोषण हुवतो जावै हो। व धन सू अर धरम सू ई गिरता जावै हा। राज दरबारा मे रातदिन दास अर पातरिया रो जमघट लाग्यो रवतो। वाजिद अली शाह् बादशाह् बणग्या हा। महफिला जमती रवती। पडयत्र चालता रवता। अर राजसिंहासन बन, भाई अर बापर खून सू भरघा रवता। पण उणा बन सोचण समझण री बखत कोनी हो। सगळा दारू मारू रा दास अर स्वारथ रा सीरी बण्योडा हा। छोटो सो ठाकर भगवतीसिह् वातावरण र साग चाल हो। गुलामा री अेक लाबी क्तार सगळा र साग चाल ही। इणा गुलामा अथवा गोला री कोई ईजत आबरू कोनी ही। उणा र ठाकरा री मरजी सब सू बडी बात ही। उणा री बन बेटी ठाकरा री मरजीदान हुवती। मरजी रो अेक रूप घनकी ही।

राप दो-तीन दिन सोचण विचारण मे लगाया। चुपचाप विक्रमपुर जावण री त्यारी करी। राइक मन जायनैं टोडियो सायो। घी पायनैं त्यार करयो। आ सगळी बातां नैं पांच सात दिन हुयग्या जण अेक दिन दोफार ठाकरसा तावड़ मे बठा अठीनली बठीनली कर हा, राणै मन जायन जमाताजी री करी। ठाकरसा इण रो मरम समझग्या अर साळ मे कोठ नैं बात करण रो मेय न उठग्या। ठाकरसा सगळी बात सुणी अर हकारो भरयो। राणै दिनूगे-सूणो ई रवानी हुवण री बात बतायी।

•

विक्रमपुर

मुलतान सू दिल्ली जावण रो मारग रातीघाटी सू दो सौ अेक पावडा आथूण उतराद हुय न जावतो हो। रातीघाटी रा खदडा आखी साल पाणी सू भरयोडा रवता। घोडा अर वळ्गा सारू मारग माथ सेवण रा लाबा चौडा बीहड हा। मारग माथ धाडेतियां रो भय कोनी हो। विणजारा सूघ मारग रात दिन आवता जावता रवता। इग्यारवी सदी पछ पूगळ रा भाटी ताकतवर बणता गया। हेकडो ई थवणा बद हुयग्या हा। जाट मारग म धाडो मारण लागग्या जण विणजारा इण मारग न निरापद नी जाणर मुलतार सू तबरहिंद (भटिंड) हुवत ग्ल्ली र मारग आवणो जावणो सरू कर दियो। हाळ होळ ओ जागळू देश बणग्या। जाटा रा गाव बसण लागग्या। पूगळ रा भाटी रातीघाटी ताइ धाडा मारता रवता। इण वासत रातीघाटी जाटा अर भाटी सिरदारा र झगड री खास जागा हुयगी। पण जाट स्याणा अर समझदार निकळया। राजपूता न राजपूता सू भिडाय दिया अर आप अळधा रयग्या। राजपूता भाटी सिरदारा न पराजित करन रातीघाटी माथ विक्रमपुर बसायो। मिदर देवरा बणाया, गढ बणाया। होळ होळ विक्रमपुर तरकी करण लागग्यो। बस्ती सू गाव अर गाव सू शहर बणण लागग्यो। धरती रा भाग फुरग्या। अठारवी सदी ताइ लगोलग बधतो गयो। विक्रमपुर रा राजा मुगल राजघराण सू चोखा रसूकात राख्या। मुगला र दरबार म पचहजारी मनसबदारी रो ओहदो लियो। उत्तर सू लेयर दिखण ताइ मुगला री सना म सनापति रया।

समय र प्रभाव सू सुरा सुविधावा री खोज हुवण लागी। किलो छोटो पडण लागग्यो। च्यारूमेर ढळाव री जागा देखर नूव किल रो निर्माण

करायो। खाई बणाई । रात भाट माथ कोरणी करायर महल माळिया बणाया। चानणी रात मे किलो कचन सो चमकतो। शहर री बस्ती बामण बाणिया री ही। व्यापार दिनोदिन बधतो जावे हो। मुगला रै सागै दूर दूर ताई आक्रमण करणन जावता जण व्यापारिया न आपर साग ले जावता। अठारवीं सदी र आवता आवता विक्रमपुर नामो शहर बणग्यो। मुलतान सू ई सीधो मारग हुवण सू व्यापार री मढी बणण लागग्यो।

दीया बत्ती रो बखत हुयग्यो हो। ठड पडण लागगी ही। मिंदर म आरती हुवण लागगी ही। झालर री भणकार दूर दूर ताइ सुणीज ही। रात शहर न आपर आचळ र ओळ सोवावण लागगी ही। गळी कूचा मे सोपो पडग्यो हा। ठड री मोटी परत घरा री छता माथ आपरा पग राखर शहर म उतरण लागगी। राणा दिनूग रो रवाना हुयोडो आख दिन चालतो रयो। झालर-बेळा बा गणेशद्वार कनै पूग्या। शहर कन पूगण र पला राण आपस काळै टोडिय रा दोनू कान उतारन खूज मे घाल लिया हा। शहरपनाह री पोळा ढकीजण लागगी। सिया मरता लोग घरा म भेळा भेळा हुव हा। डाफर लोगा रा गाभा लपेट ही। राणो होळ होळ गणेशजी री बगेची कानी चाल हो। बा अेक बीध मे घिरयाडी ही। च्यारूमेर बाड छाप्योडी ही। सामन अेक झाटो हो जिको खुलो हा। माय बडताइ डाव हाथ कानी बिरखा रो पाणी कूड म लवण वासत कासर नालर पायतण बणायोडो हा। जीवण हाथ कानी जाळ ही। जाळ र हेठै धूणी ही। सामो साम गणेशजी रो पको मिंदर हा। मिंदर रै सार ई पाताळेश्वर शिव पावती रो मिंदर हो। गणेशजी र सामै दीयो चस हो। पुजारीजी महाराज साधना कर हा।

राण जाळ कन साढ सू उतरन उणन जकायो। पलाण उतारन जाळ री पडी र सार राख्यो। मोरी खूट र बाधर टाडिय र साम सवण रो बोरो राख्यो।

इत म पुजारीजी बार आयग्या। चुपचाप काम हुवता देखर पूछ्या—कुण हूसी ?

अचाणचूकी अवाज सुणर राणा बोल्यो—'ज माताजी री। ओ तो मैं हूं।

'ज माताजी री। कण आया अचाणचूक ई? पूगण मे बोहळो मोडो कर दियो नी?' पुजारीजी पूछ्यो।

पुजारीजी अेकै साग ई घणा सारा सवाल कर नाख्या। राण मूढ रो ढाटो खोलता उथळो दियो— थोडो काम हुयग्यो। टुरियो तो बगो ई हो पण मारग म थोडो ताळ ठैरग्यो हो। कन आवतो राणो बोल्यो—'आप लोगा रा दरसण करया नै बोहळा दिन हुयग्या हा। सोच्यो, मिलणा ई हुय जासी अर छोटो मोटो काम है जिको ई ससटाय लेसा।'

'ओ तो चोखा करयो।' पुजारीजी पाछा माय बडता बोल्या।

गणेशजी र मिंदर सारै अेक ओरो हो। ओर म दो माचा पडया हा। अेक तो खाली हा अर अेक माय ओढण बिछावण रो सराजाम पडयो हो। राण सराजाम लायन माच माय राख दियो। फाटो ढकन पाछो आयो अर बारणो ढकन दोनू जणा वाता करण लागग्या।

भखावटो हुवताई दोनू जणा उठर जरूरी काम सलटाय न आप आपरै काम लागग्या। पुजारीजी पूजाघर म बडग्या। राण साढ न पाणी पायर नोळ लगायन गणेशजी री बगेची र लारल बीहड मे चरण सारू छोड दी। बूची साढ चरण लागगी।

राणो गणेशजी रा दरसण करण न चाल्यो। पोसाक परया गणेश भगवान बैठा लाडू खाव हा। थोळ मकराण भाठ री बणियोडी मूरती मूढ बोल ही। सूरज री पली किरणा पगा म रम ही। गणेशजी रा दरसण करया पछ पाताळेश्वर रा दरसण करण वासत चाल्यो। ओछ बारण स छोटी छोटी पेडया र सार सार नीच उतरया। पारवती शिवजी री जळेरी बण्योडी ही। पारवतीजी लाल पोसाक परया साम ऊभी ही। मकराण र भाठ माय कोरणी करनै पारवती पाचू कपडा परयोडी बणायोडी ही। शिवलिंग माथ तिपाई माय राख्योडी लाव री क्ळसी सू बूद बूद पाणी टपक हो। अळघ सू देखता इया मालम पड हो जाण शिवलिंग दो भाठा जोडर बणायडो है, पण हाथ लगायर देख्या सू ओ भरम मिट हो। कारीगरी मूढ बोल ही। जळरी र हाथ लगायन लिलाड अर आख्या माय फेरयो अर पारवती र चरणा म माथो निवार मगल कामना सारू आशीर्वाद माग्या। दरसण करन पाछो शहर कानी चाल्यो।

●

गुपचुप

शहर मे मिलण भिटण सारू गणेश बगची सू बार निकळयो। डांडी-डाडी दरवाज कानी चाल्यो। डाडी र दोना कानी सूकी सेवण डांगरा री खायोडी ऊभी ही। कठैई कठई पोठा अर मीगण्या सेवण मायं पडी ही। रात नै ठड र सागै झीणी झीणी धवर पडी ही जिकी सेवण माथ मोत्या रा दाणा ज्यू चमकै ही। धवर री उण बूदां मे सौ सौ सूरज अेक साग ई निखरता दीख हा। तावडो चिलकै हो पण पून री ठड सू उण रा पग निमळा हा। ठर ठैरन चालती पून सू गाभा डील सू लपेटीज हा। हाथ ठड सू ठर हा। आगळया रा परू ठड सू अकडीज रया हा। राणा गणेश दरवाज सू शहर मे बडयो। च्यार छव रखाळा माथ माथ बठा तावडो लेव हा। दरवाज र जीवण हाथ कानी दो भूण रो कूवो हो। माळी कूवो बाव हा। खेळया पाणी सू भरी ही। भिस्ती मसक भर भर न पाणी ल जाव हा। कोठ सू पखाला भरीज ही। पणिहारया री भीड खूब माथ ही, जिकी कुभारा, आटा अर माळया र घरा री ही। सासर खेळयां सू पाणी पीव हा। सूरडा अठीन बठीन नाठ हा। गिडक तावड मे पडया सिसक हा। रामचन्द्रजी र मिंदर कनकर हुयतो राणो बजार मे आयो। बजार री दुकाना खुलगी ही। धान री दुकाना आग मोठ, बाजरी, गवार अर मूगा री ढिगल्या लाग्योडी ही। चिडया अर कबूतर अठीनै बठीन बिखरयोड नाज रा दाणा चुग हा। ढिगली र बिच लाठी रोप्योडी ही। ताकडी बाट लिया दुकानदार धान तोल हा। सासर फिरता घिरता धान मे मूडो मारण न खस हा। ग्राहक धान खरीद हा। धान री दुकाना र सार पसारया री दुकाना ही। पसारया री दुकाना र सारकर हुयनै

मारग लक्ष्मीनाथजी र मिंदर जाव हो। मिंदर घाटी उतरया पछ पाछी ऊचाई माथ हो। घाटी रो उतार सागीड़ो हो। मारग र दोनां कानी लखारा, बिसायतिया अर रंगरेजां री दुकानां ही अर घर हा।

दो घड़ी दिन चढ़ग्यो हो। पट ढकीजणआळा हा। दरसनार्थी खाथा खाथा मिंदर कानी जाव हा। छातीसूणी घाटी दोरी ही। बहली रो आवणो जावणो मुसक्ल हो। मोट्यार–लुगायां री भीड़ तर तर बधती जाव ही। राज रो मिंदर हुवण सू उण री पूरी मानता ही। पुस्टिमारगियां रो मिंदर हुवण र कारण लक्ष्मीनाथजी री दिन मे दो तीन भांकयां हुवती ही। चढ़त सूरज साग भीड़ ई बधती जाव ही। राणो ई इण भीड़ म सामल हुवन ठेट ताई धका खावतो आग बधतो जाव हो। मिंदर सातरो बण्याड़ो हो। सगळो मकराण भाठ सू बणायोड़ो हो। मूरत्या मूढ बोल ही। सिणगार फबतो हो। लक्ष्मी साचाणीज लक्ष्मी ही। सोन अर हीरा र आभूषणा सू बणाव करयोड़ी लक्ष्मी पळपळाट कर ही। लक्ष्मीनाथजी साक्षात् लक्ष्मी रा नाथ ई लाग हा। राणो सोच हो—लक्ष्मी ! थारी माया अपार है। थार बिना तो ओ जीवण ई अकारथ है। थार बिना ना तो घरआळा पूछ अर ना जात बिरादरी आळा। राज दरबार म भी थार बिना मान कानी मिल। थार रूठण सागई सगळा बिराजी हुय जाव। दरसण करन तुलसी चरणामृत अर परसाद लयर बो पाछो बार आयो अर च्यारूमेर घूम फिरन मिंदर देखण लाग्यो। रातीघाटी रा खदेड़ा इता गरा हा क हाथी रा हाथी उणा म समाय जाव अर पाछो जोया ई पतो को चाल नी क हाथी बठ गया ?

राणो दरसण करन पाछो आयो अर जामर बिसम खांचो। थोड़ी ताळ हथाया करी। पछ सजनसा र डर कानी चाल्यो। फसील र सारे सार चाल्या जाव हो। गणेश दरवाज कन सू फसाल डागा र बूच कन हुवती कसाया री बारी कानी हुयन हुकमकोट कन निकळतो ही। आ सगळो मारग भाकक्या सू भरियो हो। इणा म सूरडा दौड़ता रवता हा।

हुकमकाट र साम दा सौ पावडां माथ अनोपसागर हो जिके माथ च्यार भूण लाग्योड़ा हा। कूवें मे अथाग पाणी हो। राज रा घोड़ा अर सासर अठ ही पाणी पीवता। कूव र सामनें ई नूवो गढ खडयो दीख हो। सामन किल रा मुरज हा। नागी तलवारा लियां आदमी रात–दिन पोहरो देवता रवता। गढ़ री पोळ र साम ई नागी तलवारा लिया आदमी पोहरो देवता। पोळिया गढ़ मे आवण जावण वाळां रा पूरो ध्यान राखता। उणा री निजर सू बचर जावणो मुसकल हो। गढ़ र डाव हाथ कानी जबी तळाव हो जिणर पीद मे कदई पाणी हुवण रो आभास हो। गढ कन थोडी चल पल दीख ही। अठ सू आग तो सेवण, धतूरा, आकडा अर बोरटया री झाडक्या ही। कठई कठई जाळ अर गूदया ई निजर आवं ही। गढ र सामन जाळ अर खेजड़ा रो सागीड़ो झुड हो। गढ र उतराद काई च्यार सौ पांच सो पावडा पछ सजनसा रो डेरो हो। राज रा ताजिमी सिरदार हुवण सू उणा र डर सार दरोगा री दो तीन झूपडया ही। गोला सिरदारा री हाजरी म लाग्या रवता। दरोगण्या ठुकराण्या री सवा चाकरी म रवती। दायज म डावडी डावडा देवण सारू इणा रा टाबर काम आ जावता। जवानी रा पाप उतारण म नाव इणा रो ई हुवतो। जर-खरीद गुलाम ठाकरा र जीवण रो अेक खास अग हो। अ पाप अर पुन रा भागी हा। फूठरी गोली जे कदई ठाकरा र चित चढ जावती तो आखी जवानी ठाकरा र साग काढती अर बूढाप म नाव र परण्योड़ कन आ जावती। उण सू पला जे भूल सू पग भारी हुय जावतो तो खसम र नाव सू सगळा पाप धुप जावता। जे कदई पासवान रा पद मिल जावतो तो उण रो जीवण सोरो निकळतो अर बूढाप मे ठाकरा री तरफ सू पेटियो मिलतो रवतो।

राणो किल र पसवाड सू हुवता डर कानी निकळग्यो। डेर री सामळी भीत रोहा लगायर बणायोडी ही। आठा लगायोडी बासक ऊची पोळ ही। असवाड पसवाड री भीता काची पाकी इटा सू बणायोडी ही जिका माथ खारो चूनो लगायोडो हो। लारल छेड बाड लगायोडी ही। अेक झाटो ई

हो। वडताई पोळ र मायन पोळियो मांच माथ बठो हो। सामन वासळ हो। बासळ सू थागे अेक लाबी-चौडी चूतरी बणायोडी ही। चूतरी र सार ई कमरा, साळ अर कोटड्यां पड ही। आ सगळां माथै ठाकरा र रवण रा, पोढण रा अर रसोवड रा कमरा, परीडो अर ओरा ओरड्या बण्योडी ही। नीचला कमरा अर साळ आवण-जावणिया र बठण वासत ही। ठाकरा र ऊपर सू नीच आवण री मायन सू ही पेड्या बणायोडी ही। महफिल जमती जण दारू रा चषक बठै ही ढळता। रात न पासवाना सू हेत मुलाकात अठ ही हुया करती। चूतरी र सार लार पडती दारू री जतरी ही जठ भात भात र स्वादा री दारू काढीजती। लारल छेड चौक हो। मायन सफा अर गुभारिया हा जिका मे जुध रो समान अर दूजो अडग बडग राख्योडो रवतो। चौक र मोड बार लाबी चौडी बासळ ही जठ गाया, भैंस्या, घोडा अर ऊठा री ठाणा ही। सेवण री दूसरी ही। बळीतो पडचो हो, थेपडचा रो पिरावडो हो। लकडी रा मिरडा हा। लदाव सू बण्योडो दुमजलो सजनसा रो करो सातरो दीख हो। डर र ब्याळमेर जाळ, गूदी अर बावळिय रा रूख हा।

राण कूटवा लाडुवां रो अेक ठाठो लियो। लाधो बदळतो बदळतो सज नसा र डेर कन पुग्यो जण दूपारी ढळण लागगी ही। पोळियो सुस्ती रा पाठ कर हो। धूई सू होळ हाळ धूवो उठ हो। पोळियो माच माथ बठयो बठयो चिलम पीव हो। गटो माच र सिराथ पडयो हो। राण न पीळ रै माय बडतो देख्यो जण खखारो करन पूछयो—

कुण हुसी ?'

'ओ तो हू बळवतो रामरआळो। राणो बोल्या।

आवो पधारो सा! ज माताजी री। आज अचाणचूक ई किया आयग्या ?

ठाठो राखता राणो बोल्या— इया ई काम सारू आयो हो। धनकी री मा दीवडी मेली है वा देवण न आया हू।

'ओ तो आयो ई मरघो । काम रो काम अर मिलण रो मिलणो ।'

'आ ही सोच म आयो हू । समान ई पुगाय देमू अर ठाकरसा सू ही जै माताजी री हुय जासी ।' खाली चूतरी देखर आग कयो—'ठाकरसा अठ कोनी दीस, बार पधारयोड़ा है काई ?'

'हां ठाकरसा थोड़ा दिनां पैली ई उनराद न रवाना हुया है । आवो, बठो ।' मांच रो सिराणो राली करतो बोल्यो । पछ चिलम भाडर गटै मू तमाखू काढन चिलम पाछी भरण लागग्यो । आग कवण लाग्यो—

'दो-अेक फूक खांच लो । पछ सनसो कर देसू ।'

'फूक तो लाचोला ई । डरा वस्ती सू अळघो पड ।'

चिलम चेताय न देवतो थको पोळियो बोल्यो—'लो सा !' राण 'हा' कयर साफ रो पलो बाढर सापी माय लगायो अर चिलम खांची । पछ हाल चाल पूछण लाग्यो । कुण कठै गयोड़ा है, कद आसी । सगळा समाचारां रो भुगतान हुवण लागग्यो । राण री आख्या चयारूमेर छोह लेवती फिर ही । पोळिय सनसो देवणन चाल्यो ।

याखळ नै पार करघा चूतरी र सार जनानी ड्योढी । मांय बडर हेला पाड़यो । माणस रो पाछो पड़तर आयो । धनकी रो नाव सुणीज्यो । थोड़ी ताळ मे पोळियो पाछो आयो अर बोल्यो— आप ड्योढी म बडर पेड्या कन खड़्या हुवो, असार आ जाव ।' राणो ठाठो उठायनै आग चाल्यो । राण री आख्या च्यारूमेर री जाणकारी लेव ही । पावलो ऊठ ढळन तावड मे घूड म सिट हो । रिसालै म बैंवतो बूढो हुयग्यो जण डेर मे पाणी रा ढाचा ढोवण सारू छोड़ दियो । यूई माय ढाचा ढोवता ढोवता टाक्या पड़गी ही । सगळो डेरो सूनो सूनो लाग हो । मिनखा री चल पैल कोनी दीखी । राणो मन मे राजी हुयो । ड्योढी मे बडर मोड कन ऊपर सू उतरती पेड्या कन खड़ो हुयग्यो । अ जनानी पेड्यां ही । पेड्या री ऊचाई र साग छात बण्योड़ी ही । चानणो आवण वासत पेड्यां री ऊचाई र हैंसाब सू तिरछी तीन च्यार भाठ माय

खोदघोडी जाळघा लाग्योडी ही जिक सू चानणो अर पून आ सक। पेडघा ऊपर चौक म निकळती ही।

सिझ्या पडण लागगी ही। चानणो थोडो अधारो लेयर पेडघा म आव हो। धनकी होळ होळ पेडघां मू नीच उतर ही। नीबू-वरणी ओढणी ओढ चोडी ही। ओढणी सू ई मिलतो जुलतो छीट रो लहगो पहरयोडो। उणसू मिलती कांचळी माथ पतोई। बावा अकूणी कन रम ही कांचळी। कांचली री टूकया फाट ही। नीबू वरणी ओढणी माय सू झाकतो मूढो पळपळाट कर हो। झुकती तिरछी आख्यां मीन केतू न मात देवं ही। उतरती री बाजती बीछुडी सम माथ ठेको देवती ही। आख्या री भवा अर बीछुडी र ठेक मे होड ही क घणो आकर्षण किण मे है। भवा मे बाकपण र साग साग पुसब याण री मद ई हो। नीच उतरन बा जणै बोली— पधारो सा! तो इण सबद र आग कोयल रा सुर ई फीका पड हा। सामन थोडो मूढो ऊचो करन जण देखण लागी तो बा रति री साक्षात् मूरती ज्यू लागी। राण रो काळजो सूकण लागग्यो। थूक गिटतो बोल्यो— लाडू भेज्या है' जोर देयन बोल्यो—राजीखुसी रा समाचार कवाया है।' फेर होळसैक कयो—'ठाकरसा याद कर है। पाछी चालसी काई ?' अर फेरू सागी सुरा म कवण लाग्यो—दो च्यार 'दिना पछ पाछो जासू जण मिल णन भळ आसू।' ठाठो लेवण वासत वी जण आप रा हाथ आग करघा, इया मालम पडघो जाण उणमे अेक सभाव है चुबक री सकित है जिकी सगळा न आपर कानी खाच है। सरमा मरती बोली— अठै काई कदर है ?' 'इया किया ?' 'रग चढता बखत कोनी लाग। पण काल पाछा मिलण वासतै आसो जण सगळी बाता करसा। थोडा और मोडा आया।' इतो कयर बा पाछी मुडर चढण लागगी।

राण न इया मालम पडघो क साची ई ठाकरसा रो मन इण र साग पाछो जाव है। इण र बिना उणा रो मन कानी लाग तो आ कोई अजोगती बात कोनी। पाछी चढती धनकी री अेडी माथ जोर पड जण बा फूल गुलाबी गीवण लाग जाव अर पाछो पग उठाया पछ धोळी। राण न इया मालम

पड़घो कै अेड़ी माथ दाई भळको मारै है। ओढणी मांय सू कडघां तांई भाकती चोटी रो फूदो इया मालम पड़ हो कै कामदेव र दमाम माथ पड़त डकै री चोट विजय री सूचना देवै ही। उणरी चाल मे अेक आकर्षण हो, असमंजस रो भाव हो। आप री उपस्थिति रो आभास देवण सारू राणै खखारो करघो अर मुड नै जनानी ड्योढी मू बार आयो। साम मांच माथ पोळियो निश्चल भाव सू बठो हो।

राणो पाछो पोळिय कन पूग्यो जण उण पूछ्यो—'बात हुयगी ?'

'हां। समाचार भुगताय दिया।' राण आग कयो—पाछो जासू जण और मिल लेमू।'

'फूक और खाव लो। भरू चिलम ?' गटो सिरकावतो बोल्यो।

'हां, चिलम तो मारणी ई पड़सी। सातरी बणायोड़ी है। कन बठतो राणो बोल्यो।

तमाखू पोली करन चिलम भरी। धूणी माय सू मीगणै रो खीरो काढर हाथ र सारै सू चिलम माथ फोड़घो। फूक लगायर चेतायी। साफी लगायर झड़कायी अर राण कानी करतो बोल्यो—'लो, सारो।'

साफी फटकारन पाछी लपेटी अर सायीड़ी फूक खांची। चिलम माथ लौ उठण लागगी। पाछी देवतो नाक सू धूवो काढण लागग्यो। धूवो कबूतरी रग रो हो। अेकर तो अेक साग ई गोट बणायर निकाळघो अर पछ छल्ला बणायर सगळो धूवो छोड़ दियो। अस्थिर विचार धूव र साग ई रमग्या हा। निश्चित भाव सू राण उठर ज माताजी री करी। आवण सू पैलां फेर मिलणन आवण रो कयर बो टुर बहीर हुयो।

सूरज दरखता री टेचरी माथ ठरण लागग्यो हो। ठड बधण लागगी ही। पून मे अेक ठराव हो। रात पड़ण री त्यारी बरतीज ही। बारै आया पछ राण री चाल मे धीरज आयग्यो हा। आस्थां की खोज ही। सामै मारग हो। दोना कानी भळसीवाड़ो हो। अेक गळी डेर र लारल कानी जाव ही।

राणो गळी र सार सार चालण लागग्या। गळी डेर र लारल धारण वन जायर बन्द हुवती ही। ओ वारणो लुगायां खातर हो। बखत वेबखत माणसा रो न ठुकराण्यां रो अठीन सू ही आवणो जावणो हुवतो। सासरा सारू घास फूस अठीन सू ही आवतो। सासरा रो मारग आ ही हो। च्यारूमेर सूनवाड हुवण सू खेजडा बोरटया, सेवण, धतूरा अर आक्डा चोखी तर पनपै हा। अधारो पडया पछ लारलै बारण सू आवणो जावणो काम रो कोनी हुवतो। जरख अर सूरडा अठीन आवता जावता रवता। लारल भाट र सामोसाम सागीडी जाळ अर गूदी ही जिण मे भूत भूतणी रो बम हो। अठीन सासर भूल्या भटक्या ई आवता। गूदी र नीच ऊभो ऊठ ही को दीखतो नीं, इसी गरी अर झुक्योडी गूदी ही। निजर पसार न राण जागा देखी अर खाया खाया पग उठायर गणेश दरवाज कानी चाल्यो।

•

असमजस

लाडुवां री ठाठी लेयर धनकी पाछी चढण लागी जण इयां मालूम पड्यो क बीरा हाथ टूटै है। हाथां र साग मन ई टूटतो जाव हो। पीडयां फाटण लागगी ही। भार सू टूटतो मन डील नैं तोडतो जावं हो। अर पवन बारण करनै पूगी जित न उणरो सांस उखडण लागग्यो। बारणै री सारो लयनैं ऊभी हुयी। उणर धैर माय अेक नूवो सवाल घूमर घाल हो। लिलाड माय पसीनैं री बास आवण लागगी। बीं लिलाड माय पलो फेरयो पण बठै की कोनी हो। मन रो भ्रम हो। भ्रम अस्थिरता री मा है। सामल ओरियै मांय सू धनकी री सायण मिठबोली बारै आयी। धनकी रा ढग ढाळा देखर बा लाधी चाल सू उणर कन आयी। बोली—'इता सारा लाडू कठै सू लायी ?'

'मा भेज्या है।

'तो इयां आमणदूमणी कियां ?'

'याद आयगी।'

'मिल्यां न कित्ता बरस हुया है।'

'दो-तीन बरस।' धनकी याद करती बोली।

'मन ई देख।' आगळयां र परवां माय गिणती बोली—तीन बरस तो मा नैं गुजरयां नैं हुयग्या अर उण सू च्यार बरस पलो मिली ही। रातवास रो मिलणो कोई मिलणा कानी। अर अब तो बीरा सपना आवणा ई बद हुयग्या है।' मिठबोली अेक लाबो निसकारो नाख्यो। धोरकी बग

धनकी न छोडती बोली—'हू तो कठीन जावती कठीन रो ई बाता मे बंमण लागगी।' अर बा परीहे कानी बूही गी।

धनकी ठाठो उतारन आळ मे राख्यो। बीन इया मालम पड्यो जाण बी आपरी छाती-रो बडो भारी भार उतारन राख्यो है। इण भार मे अेक मोह् हो, अेक मिठास हो। नूतो हो जिक न बा चाव ई कोनी ही अर चावती भी ही। अळगो राखणो चाव अर कन राखण री इछा ई राग। बी मे भक आकपण है शरू दो दरद है, कमूब रो कडवास है। फेर भी धनकी बी कडवास न लेवणो चावै ही जिक मे जीवण रो अजब गजब रो रस भरयोडो हो।

दीय बाती रो वखत हुयग्यो हो। मिठरोली दीवट माथ राख्योड दीय न चास ही। ठुकराणीसा बेगा ही अरोगण करन पोढण लागग्या हा। सामल चौक मे पग पसारती ठड न देखर धनकी आपरी कोटडी रो बारणो ओढाळ लियो हो। पून उतावळी चाल सू चाल ही। मन री गाठ्या आभ म बिखरयोडा तारा ज्यू ही। ज्याक्रमेर फलता सरणाटो हीय ज्यू उदास हो, ठडो ही, अर हो टूटयोडा बिचारा सो भटकयोडो। धनकी सोच ही आपर बिस म आप जिसी आयोडी बना र बिस मे। अर सगळा सू छेडै उण लोगा र बिस में जिका रावळ मे लुगाया माथ मर हा अर जुध मे

बिखरया बिचारा री कडया कणई टूट ही अर कणई जुड ही। टूटती जुडती आग वध ही। धनकी बिचारा री लर टूटती जुडती पसवाडा फेर ही। पण आ सगळा रो इतिहास इनमान सू 'यारो' है। बिचार अेक भोग्योड जीवण रो मनन है अर जीवण वास्तविक घटनावा रो ढेर। जरूरत जीवण री जबरी भूख है। भूख रा परिष्कार बिचारा रो छेनो। धनकी अेक जरूरत री जडी ही अर बिचार जरूरता री स्मृति। इण उळझण मे धनकी गाता लगाव ही। उणर कन ई प्रेमा रो माचो हा। बा बढ ठाठ सू नींद लव ही। काल काई हुसी इण रो बिचार वा कोनी करती। प्रेमा फकत आज र सार जीव ही। जद कदई ठाकर सजनसिंघजी उणन बुलायी, बा बड धीरज सू गयी

जाण उणर साग की हुयोई कोनी । केई दिनां याद कोनीं करी तो बीं विचार ई को करचो नी । जिके दिन धनकी अठ आयी अर उणर रवण री सराजाम प्रेमा र माग करचो तो सरमावती बोली थारे जीवण मे काटो बणनै आयगी हूं। जण वा हसर बोली कै ओ वा मूत रो नाळो है । रोटी रो मोल देवे है। देवणआळ री मरजी है लेवें की नी। पण मन पूछे तो केयू हूं क ठावरसा ना मन बुलाय, ना तन बुलाय । आपरी ठुकराणी न ई राखै। धनकी नैं मालम पड्यो क पेमा रा विचार किता ऊंचा है। आम्मी लुगाई रो अेक मानसिक नातो है। आदमी लुगाई बिना अधूरो है अर लुगाई आदमी बिना अधूरी। पण ठावरा र सो ओ रिस्ता दो घड़ी रो है।

धनकी दूयड बिना मे लाग्योड़ी ही । ना ता किणी न कय सके अर ना सला सूत कर सकै। माय री मांय गीली लकड़ी ज्यूं सिलगती जावै ही । निणय ई जोखम मूं भरयोड़ा हो। हा अर ना रो पड़तर नूवं जीवण री भूमिका ही। अठ वा सिडत कीड़ा मायलो अेक कीड़ो ही। स्वतन्त्र रूप सूं उणरो कोई अस्तित्व कोनी हो । आवण रो नाव निसाण ई कोनी हो। हुकम री तावदार ही। पण वठ वा अकेली ही। कतको हो। नारी नारी री जळण ही। ईर्ष्या ही। रात अठ सूं छोटी ही । सारली याता कन आवण लागगी। वा देखण लागगी। अेक छोरी र रूप मं कवराणीसा र आग लार फिरती। मरयोड़ा गाभा छोटा अर ठीक ठाक करन परती। होळ होळ पूरा गाभा आवण लागग्या। माळिय म आवती जावती रवती। पाणी भलावती। टसरियो ले जावती अर मसूबो बणायर पूगावती । अेक अचभो हुवतो। नूवो अहास हुवतो । उत्सुकता सूं देखणो चावती । बाता सुणणी चावती। पण पूरो मोको कदई मिलतो कोनी अर डर स इछावां न दबावती रवती।

कवराणीसा र सिनान करती बेळा पूछ ई लेवती क आपरी छात्या माथ भरूंटिया किया लाग्या, अर साथळा माथ अ सनाण काय रा है। आज ताईं तो अ कोनी हा, अब किया हुयग्या । इण भोळपण माय कवराणीसा

हुस्या अर कदरसा न पूछण रो कयो। इण उतर सू बा चुप हुयगी। पण जिज्ञासा बात कठ हुयी ही ? अर अणजाण प्रश्न और घणा रूपा मे आख्या सामै नाचण लागग्या। औरत एक प्रश्न भी है अर पडूतर भी। औरत प्रश्न खडो कर सक पण ईर्ष्या कोनी दबा सक। जिज्ञासा सू आपरी सापळां न देखी, छात्या देखी, हाथ फेरन देखी क कठ ई कोई अवस्था रो सनाण दीख है कांई ? पण अणचाह् रा भाव हो कोनी हा। भोळपण री बात माथ आज किती हासी आवै। ब्याव काय र वासत हुव । बीन बीनण्यां न कन क्न काय वासत सुवाव। अ सगळी बाता समय र साब प्रवाह मे खुद ई समझ जाव। अ सगळी बाता समझावण साऱू ना तो कोई कव अर ना कोई बताव।

बखत बीततो गयो अर सगळी बाता आपोआप ई समझण लागगी। आज जण बा बा सगळी बाता न याद कर जण उणर कानां माय लाली दौडण लाग जाव। आख्या सरम सू झुक जाव । कवराणीसा जद कदई जळनवश बा सगळा सवाला न पाछा सरू कर अर बताव क ठा पडियो—अ सगळा किया हुया ? जण द्वेष मू जळण लाग जावै। अर अधिकार हनन साऱू और खुलन सुरति सुख लेवणो चावू जिण सू बखत रो भाव बध अर पासवान रो पद मिलन बुढाप रो सराजाम हुय जाव। समय साऱू मन मे अणजाण्या अर अणचीत्या भाव आवण जावण लागग्या। डील मे रळी फूटण लागगी। मायल मन मे वम हु वण लागग्यो क कठई उजाड मे मुरझाय नी जाव। गळी मे बिखेरणी नी पड। स्याणो आदमी आग री सोच अर सगळी बाता रो पला ई सराजाम कर लेव। अब उणन याद आयो कै ठाकरसा उणरो लाड साथ इण खातर ई ब्याव रचायो हो। उणन बडो ही आतरिक दुख हुयो कै आ नाटक कितो धरमहीन है। किणी नै भोगण रो मारग है। रीस घणी ई आयी पण कर कांई ? बा जरखरीद है । उण रो स्वतत्र अस्तित्व कोनी। उणरो जीवण अेक अणबूझ पहेली सो है।

रात पछ दिन अर दिन पछ रात ओ ही क्रम बरसा सू चालतो आयो है अर आग चालतो रैसी। पण इण क्रम र साग मिनख लुगाया मे फेर बदळ

हुवतो रैय। आ जण सरोते सू अफीम रा किरचा बणावती अण किरचा ई फूठरो रूप धारण करन इण री ओगळधा रो चूमो लेयन बेहोश हुय जावता। भोरां रो जण चसूबो ढळतो, बाटकी दूरी रै असास सू ही पिघळण लाग जावती। रूप रो फुठरापो किरचा मांय सू कसूब मे दीखण लाग जावतो। चतराई तो छिया दांई उणर लार लार ही घूमती रैवती। बखत री जरूरत रो पेट पोथी बडाया सू कोनी भरीज। अर बखत रो मोल कूतणियो अठ कोई दीख्यो कोनी। जिको बखत रो मोल समझणियो हो बो अणजाण बण्योडो हो। इण कारण जी मे खीझ अर ईर्ष्या दोनू साग-साग पनप ही।

●

नूवो रिस्तो

सीयाळो भरजवानी म हो । ठंड सागीड़ी पड़ ही । डाफर बाजणी सरू हुयगी ही । पोर-अेक रात हुयगी । रावळ म सोपो पड़ग्यो हो । कवराणीसा पूरा महीना हा । बीदावाटी कानी सू कवरसा न आया न दो अेक महीना हुयग्या हा । इतयातरा मुगत न कवरसा थोड़ा ठीक हुयग्या हा । कवराणीसा भाटी परवार सू हुवण र कारण परवार रो नसो घणो हो । आपर खानदान न घणो ई मानती ही । ओ रिस्तो खानदान ऊंचो मानर कोनी हुयो हो पण अेक असान उतारण सारू हुयो हो । ओ सगळो काम सिरदारा रो हो, लुगाया ना तो आ बाता न समझ ही अर ना समझण री जरूरत ही । आदमी आदमी र काम आव । आज हमा तो काल तमा ।

कवरसा र सोवण रो वखत हो । सीरख ओढ्या सूता हा । पण नींद असवाड़ पसवाड़ ई कोनी ही । आळ म दीयो जग हो । मधरो जगतो दीयो अंधारो भगावै हो । बाती र मूंढ मार्थ गुल हो, इण कारण थोड़ो धूंवो निकळ हो । सूत मिनख न असास हुय आवतो क कोई आवै है । धनकी कूंसूबो लेयर आयी अर पगाथ कानी खड़ी हुयर कयो— अरोगो सा ।' थोड़ी ताळ चुपी रैयी । बा फेरू बोली— अरोगो सा ।'

हा अठीन आ । उठता कवरसा बोल्या ।

बा सिराण कानी दो अेक पग चाली । कवरसा उठन बैठग्या हा । पगा माथ सीरख नाखर कटोरी झाली । आगळया सू कटोरी झालता कवरसा उण री आगळया भी दबा दी । हाळ होळ पीवण लागग्या । उण र डील मे

अेक सरणाटो दौड़ग्यो। कटोरी पाछी देखता बाल्या—'थोड़ा दबा देयी डील टूटै है। मोड़ो, थोड़ो ओढाळ दै। सामी पून आव है।'

कटोरी रालर मोड़ो ओढाळ नै धनकी पाछी सोरम माथै सू दबावण लागी।

'इया तो जोर ही कोनी लाग। ईस र सार बठर मांयन हाथ घालर दबा।' पसवाड़ो फोरतो बवरसा कया।

धनकी कंय मुजब दबावण लागगी। कण ई कड़या दबाव ही अर कणई मगर। उण बखत उणन इयां मालम पड़यो जाण टूवयां माथ हुयाळी फिर ही। बा सरम सू भीजण लागगी। सगळ डील म अेक अणजाणी चेतना बापरण लागगी ही। बीरा होठ ना' कवणो चाव हा पण ब हाल्या ई कोनी। उणर लिलाड़ माथ पसीनो आवणो सरू हुयग्यो। जी मे खळबळी मचगी।

भौर जोर सू दबा।' बवरसा बोल्या।

पण धनकी रा हाथ ढीला पड़ता जाव हा। अर इणर साग ई उणरी काचळी कसमसीजण लागगी। होळ-सीक बोली—'ओ काई ' जित तो होठां माथहोठ आयग्या।

उठर पाछी गयी जण रात आधी सू घणी ढळगी ही। दिनूग धनकी सरमावती उठी। जाण बडो भारी पाप कर दियो हुव। बम रयो क कोई ओळभो देवला। आखो दिन मदेह री छिया म बीतग्यो। किणी कयो अेक सबद ई कोनी पण अेक गरी मुळकाट जरूर पैंम देवती जाण सगळा रात री घटना सू परिचित है। ओ कोई नूवो काम कोनी हो। अेक न अेक दिन तो ओ हुवतो ई। उणर माला माथै सूत सी ही। छातया पीचीजती लाग ही। अर जाध्या काकड़ियें ज्यू फाट ही। सीधा चालणो ई मुसकल हो। आखो दिन सरम म निकळग्यो। सिंझ्या पछ फेरू कसूब रो हेलो आयो। जिक दिन पछ कसब र बाटकी री ठोड धनकी रा होठा ले ली ही। धनकी रो नसो चढतो क पसवाड़ पड़ी कटोरी 'तू पी - तू पी' करती ई रय जावती।

फेर बखत पसवाड़ो फोरघो जणै विक्रमपुर आवणो हुयो। अर आया पछ जावणो मुसकल हुयग्यो। पसवाड़ो फोरती धनकी सोच ही—अ सिरदार है जिका दारू पी पीर आपन मदवा कर। जिका घुदा दियां लड़घा हुवै ब जग मे लहर काई याल करसी। जिका रो खून दारू अर अफीम सू काळो पड़ग्यो है ब आधा हुयन। घृणा सू पसवाड़ो फोरघो अर सूकत कठां न थूक सू आला करघा। बा आधी नीद मे ही अर आधी जाग ही। उणन इया मालम पड़घो जाणै कोई पापी देव है। अर सुणीज्यो—धनकी हू सन लेवण न आयो हू। बा आकळ बाकळ हुयन उठी। बारणो खोलनै देख्यो—ऊच गिगन मे तारा मुळकै हा। डाकर फटकारा मारती चाल ही। बा ठड सू कापण लागगी। बारणो ढकर पाछी सीरख मे बड़न सोवण लागगी।

सिया मरती कूकड़ी बणण लागगी। नीद आख्या री पलकां सू ओभळ हुयगी। पसवाड़ो फोरता फोरता ई भाख फाटण लागगी। नीद री मिस करघा सूती रयी। मवरिय मे घटी री घरघराहट हुवण लागगी। गाळो घालती बेला घटी रो पाट अेकर तो ऊवड़ खाबड़ हुवै पछ बो मधरो मधरो चालण लाग जावै। पीसणवाळी लुगाई री चूड़घा चास माथ ठेको देव। नीद पलका माथ उतरण लाग जाव अर उणरो होळ होळ नाक बोलण लाग जाव। पगा री धप धप अर घुसड़ पुसड़ सुणीज जण बा हड़बड़ार जाग्र अर बारणो खोलर बार आयन देख तो तावड़ो आगण मे रमतो निजर आव।

●

राज रो पानो

जीवण अेक खुली पोथी है। रोजीन रो काम पोथी रा पाना है। आपा लोग रोजीनै रा रोजीन वा पाना नैं भरता जावा हा । आवणआळी सतान उण पाना रो नूंव सिरै स मूल्याकन कर। काम सारू ही नाव अमर हुव नी तो डूब जावै। मरतो मिनख आपरा करयोडा सगळा पाप अर पुण्या न देखण लाग जाव अर रोवण लाग जावै। ओ ही ससार रो दस्तूर है । स्वारथ सू भरयो मिनख अपण आप न फरिस्तो समझ अर बाकी सगळा नै पापी। पण पापी अर फरिस्तो किणी रै लिलाड माथै कोनी लिख्योडो हुव । आपर कामा सू ही आदमी री पचाण हुवै। काम ई आदमी रो मोल है। पण ओ काम कितो निकमो है इण रो पतो ही कोनी चाल। काम रै लार स्वारथ दीख, धोखो मिल पण मूढ माथ शालीनता दीख, नम्रता दीख अर मीठो उत्तर निजर आव। इण सगळ रूप रो इतिहास घणो ही मीठो हुव।

विक्रमपुर रो राज दिन दूणो अर रात चौगणो बधतो जावै हो। राजघराण रो मुगला र साथै चोखो सबध रयो। विरोध कर तो घाटो हुवै। राज दरबार मे ऊचा ऊचा मनसब मिलता रया। मुगला र आक्रमणा म सेनापति रा सहायक बणन दिखण ताईं जावता रया। लूट खसोट करता अर धन परबारो ई विक्रमपुर भेज देवता। इण सू खजानो भरीज जावतो। राज रो खरचो थोडो ई हो। च्यारू कानी भरूट रा मदान हा। बारला रा धावा हुवता कानी। अेके कडख पडतो विक्रमपुर सदाई सुरक्षित रैवतो। रयत थोडी ही। काळ दूजै तीजै बरस पडतो ई रवतो। रेख चाकरी थोडी ही। मुगला री हालत बिगडता ई अठारवी सदी मे विक्रमपुर रै वतमान राजाजी रूपसिहजी

[illegible] अदर होयनै स्वतन राज वणाय
[illegible] करी। सगळा राजी हुया
[illegible] करयो।

[illegible] फेर पुन [illegible] नै धोखो नीं देवण री कसम
[illegible] करनै [illegible]मेर री यात्रा करी । किला री,
[illegible] करतारी। सावधानी सू नीगै राखण री
[illegible]

[illegible] नै ताव आयग्यो । राजवद दवा दारू सरू करी।
[illegible] । पण ताव तो माव वणग्यो अर छोटो भाई सूरतसिंह
[illegible] बाप समभग्या । भरी जवानी म मरता लाग्या । जण
[illegible] विसवासू सिरदारा नै बुलायन कैयो क [illegible] तो जावू
[illegible] दावरो ज्यूं राख्या । ब सिर री सोगनां खायर
[illegible] । राजाजी किता स्याणा हा । सगळी बात न समभर
[illegible] । राजपूता री सोगनां दारू ज्यू हुय, जिक साग पीव उण री ही
[illegible] कर । राजाजी र मरतां ई कसमां सगळी रयगी । सोग रो देखावो
[illegible] करयो । सूरतसिंहजी आपर भाई र माव सू राज चलावण लागग्या ।
[illegible] भी साग साग चाल हा । बन जिकी जवानी म पार
[illegible] ही उण रो ध्यान ई बीख र मारयोड राजा साग करयो । च्यारा
[illegible] हुया नाबालिग राजा न मरावण रो जतन करयो । कई
[illegible] करयो जणै बान बागी घोषित कर दिया । गोल्यां न लालच
[illegible] मारण सारो, पण ब भी इण पाप र साग रळण म इनकार करग्या ।
[illegible] सूरतसिंहजी खुद ई ओक दिन हवामहल मे सूत नाबालिग राजाजी न
[illegible] मरग्यो घोषित कर दियो । राज में हाको फूटग्यो । उथळ
[illegible] । राजगादी खाली कोनी रय सक इण खारू पख रा सिरदारां
[illegible] आप ई गादी माथ विराजो । फेर महाराज रूपसिंहजी रा
[illegible] राजा वणाय देसां [illegible] तो आ ही चावता

राजतिलक हुयग्यो। अन्नदाता री घणी घणी खमा रो उद्घोष हुयग्यो। रूपसिहजी रा हिमायती रात्यूं रात विक्रमपुर छोडर भाग छूटया। जिका रैयग्या उणा चुपी साच ली। राज रो नाई विसवास, सूई पडता ऊधी पड अर ऊधी पड़ता सूई हुय जाव।

भतीज र खून सूं मिल्यो राज खून रो नाळो ई बणग्यो। विक्रमपुर रो राजसिंहासन हालण लागग्यो। खून करणो तो सोरो हो पण राज सभाळणो घणो दोरो। सिरदार माय माय विरोध करण लागग्या। सिरदारा रो विश्वास उठग्या। सगळा आप आप र ठिकाण जावण लागग्या। राजाजी सगळी बाता समझ हा पण सगळां रो विरोध ई कोनी लेवणो चावै हा। ठिकाण जावण री अरज्या मजूर करता जावै हा। कई सिरदारा न राज तिलक री खुसी मे जागीरा दी। गाव बगस्या। सिरोपाव दिया। रुतबा बधाया। नूवा पटा बाटया। रीत रा रायता सगळा ही करया। पण काळज म बडयो सीयोदाऊ निकळ ही कोनी हो। राजाजी नीद बेचर ओझको ले लियो हो। राज तो मिल्यो पण खजानो खाली हुवतो जाव हो। मोटी रकमा री रिसवत दी। साम मिलावण सारू डराया धमकाया। वातावरण तर-तर बिगडतो ई जाव हो। इण सगळी हालत सूं वद धरमचन्द परिचित हो। राजाजी नैं सगळी बात बतायी। सगळी बात समझ न वद धरमचन्द न राजाजी दीवान रो पद दियो अर सगळा अखतियार दय न राज सभाळण रो भार सूप दियो। वद धरमचन्द स्याणो अर समझदार हो। चतराई सूं काम लियो। छोटा ठाकरा न आपर कानी मिलाया अर उणा न राजवी रा ऊंचा पद दिया। थोकळसिंह नूवी परम्परा सूं ऊंचो पद पावण आळा माय सूं अेक हा। नीं तो छोटै ठिकाण न भूत पूछ हो क? बखत रो फेर हो। मान अर रुतबो बधग्यो। राजघराण मे पूछ हुयगी। सेना मे ऊंचो पद मिलग्यो। भगवान सगळी चीजा अेक साग ई, छपर फाडर दी। आदमी सगळी पाय सक पण अकल तो आपर हीय री ई काम आव। सगळी बाता अचाणचक ई आयगी पण गुण बेगा सा कोनी आया।

रो विचार हुयो क मुगल राज घराणै सू संबंध तोड़न स्वतंत्र राज बणाय लेवा। सगळा सिरदारां नै भेळा करनै सला सूत करी। सगळा राजी हुया अर इण काम मे पूरो हाथ बटावण रा वादो करयो।

सिरदारा आपरो बैर भुलायनै राजाजी न धोखो नीं देवण री कसम खायी। राजाजी रात दिन अेक करनै च्यारूमेर री यात्रा करी। किला री, चौक्यां री अर थाणां री मरमत करवायी। सावधानी सू नौगै राखण रो पूरो बंदोबस्त करयो।

अचाणचक ई राजाजी न ताव आयग्यो। राजवैद दवा दारू सरू करी। जपिया जप करण लाग्या। पण ताव तो भाव बणग्यो अर छोटो भाई सूरतसिंह काळ। राजाजी सगळी बात समझग्या। भरी जवानी मे मरता लाग्या। जण आपर छोटै भाई न अर विसवासू सिरदारा नै बुलायन कयो कै हू तो जावू हू पण आ टाबरा नै थार टाबरा ज्यू राख्या। ब सिर री सोगनां खायर विसवास दिरायो। राजाजी किता स्याणा हा। सगळी बात न समझर गिटग्या। राजपूता री सोगनां दारू ज्यू हुव, जिक साग पीव उण री ही शुभ कामना कर। राजाजी रै मरतां ई कसमा सगळी रयगी। सोग रो देखावो घणो ई करयो। सूरतसिंहजी आपर भाई र नाव सू राज चलावण लागग्या। स्वारथ भरघा षडयंत्र भी सागै-साग चालै हा। बैन जिकी जवानी नै पार करण लागगी ही उण रो ब्याव ई बीस रै मारघोड राजा साग करघो। ब्यारा कानी सू बेफिकर हुयन नाबालिग राजा न मरावण रो जतन करयो। कई सिरदारा विरोध करयो जण बानै बागी घोषित कर दिया। गोल्या नै लालच दियो मारण वासत, पण ब भी इण पाप र साग रळण म इनकार करग्या। छेहड सूरतसिंहजी खुद ई अेक दिन हवामहल मे सूतै नाबालिग राजाजी न मार नाख्यो अर मरग्यो घोषित कर दियो। राज मे हाको फूटग्यो। उथळ-पुथळ मचगी। राजगादी खाली कोनी रैय सकै इण सारू पख रा सिरदारा कयो क आप ई गादी मायं विराजो। फेर महाराज रूपसिंहजी रा डीकरा भासी जणै धणान राजा बणाय देसां। सूरतसिंहजी तो आ ही चावता हा।

अकाल री छिया

जण बाजो बिगड़ै है, भगवान ई सुण कोनी। राज र बिगड़ता ई मेह पाणी बंद हुयग्यो। धापर अकाळ पड़ग्यो। गांव उजड़ण लागग्या। कसबा खाली हुवण लागग्या। ठाकरां री फोज अर राज री फोज, जिकी री ई बस पड़तो बटोइया न लूट लेवतो। धोळ दोफार ई सगळा नैं लूटीजण रो डर रवतो। लगत हाथ ई मुलतान कानी सू टीडी फाको आयग्यो। टीडी-फाक रो जोर इतो रयो क जठी नैं ई बो निकळ जावता सगळा खेजड़ा अर रोहीड़ा न चट कर जावतो। तीन दिना ताई धरती फाक सू छायी रयी। जागा-जागा खाया खोद खोदर, लाय लगा लगार फाकै नैं रोक हा पण बो तो कीडी नाळ सो बराबर आग बधतो ई जावै हो। प्रजा अर राजा री फोज्या दोना मिलर घणी ई कोसीस करी पण उण री चाल मे की फरक कोनी पड़यो। रयत हाथ ऊंचा कर दिया हा अर भगवान सू प्राथना कर ही क गाव रै आस पास सू फाक र निकळ्या पछ ई रात पड। जे रात पली पड़गी अर टीडी फाकै न गाव मे ई रातबासो करणो पड़यो तो दिनूग गाव मे लोगा रा हाडका ई कोनी लाध।

अचाणचक ई तीन दिना ताई काळी आंधी अर बिरखा आवण सू टीडी फाको मरण लागग्यो। अर विक्रमपुर कन पूग्यो जण उणरो नाव ई नाव रैयो हो। खेता मे इण री परता लाग्योड़ी दीखै ही। बिरखा बखत चुकायर हुयी। जीवण सारू धान हुयो। घास रो सुकाव चोखो रियो। कोई बात नी, मिनख मरता मरता बचग्या। सूसाड़ा मारतो ऊनाळो गुजरग्यो अर हाड दुखावती सरदी आयगी। डाफर सागीड़ी बाजण लागगी। विक्रमपुर री

दूर दूर ठिकाणा मे उपद्रव हुवण लागग्या । ठाकर स्वतन्त्र हूवण लागग्या । नजराणो देवणो बद कर दियो । रेख चाकरी आवणी बद हुयगी । राज रो खजानो ठण ठण बोलण लागग्यो । हाय तोबा – मचण लागगी । राजाजी री फोजा टूटगी । सगळी विपदावां अेकै सागै ई माथ आय पडी । दीवान धीरज सू काम लियो । ठाकरां री फोजा खतम करण रो अलान करयो और राजाजी री अलग सू फोज बणावणी सरू करी । इण सू बोहळा फायदा हा । राज री फोज कठोरता सू च्यारू कानी हुवता उपद्रवा न दबावण लागगी । इण सू राज रो रुतबो बधण लागग्यो अर विरोधी ठाकरा रो दम निकळतो जाव हो । राजाजी री फोजा रात दिन च्यारू कानी आवती जावती रवती । *राजाजी विरोधी ठाकरा री जागीरी हटाय न खालसा रो आदेस* करता जाव हा । इण सू ठाकरा री ठकुराई र साग साग जमीन ई जावण लागगी ही ।

बिणज रा मारग धाडतिया सू भरीजग्या हा जिक सू बिणजारा रो आवणो जावणो रुकग्यो हो । कतारिया डरग्या हा । इण सू राज न बहोत ही नुकसाण हुवतो जाव हो । राज माथ दोलडी मार पड ही । सेठ-साहूकार उधार तोलणो बन्द करता जाव हा । गाव गवाडी मे आबरू सू रवणो ही दोरो हो । विक्रमपुर रा दरवाजा सिंझ्या पडण र साग ई ढकीज जावता । शहर मे चोरा रो डर बधतो जाव हो । रयत दोना कानी लूटीज ही । अेक कानी राज रा नूवा कर अर दूज कानी चोर डकता रो दबदबो । धोळ दोफार गावा न डाकू आयर लूट लेवता ।

अकाल री छिया

जण धाजो बिगड़ है, भगवान ई सुण कोनी । राज र बिगड़ता ई मेह पाणी बद हुयग्यो । घापर अकाळ पड़ग्यो । गाव उजड़ण लागग्या । कसबा खाली हुवण लागग्या । ठाकरा री फोज अर राज री फोज, जिकी रो ई बस पड़तो वटोइया नै लूट लेवती । धोळ दोफारं ई सगळा न लूटीजण रो डर रवतो । लगतं हाथ ई मुलतान कानी सू टीडी फाको आयग्यो । टीडी फाक रो जोर इतो रयो क जठी न ई बो निकळ जावतो सगळा खेजड़ा अर रोहीड़ा नै चट कर जावतो । तीन दिना ताई धरती फाक सू छायी रयी । जागां-जागा खाया खोद खोदर, लाय लगा लगार फाकं न रोक हा पण बो तो कोडी नाळ सो बराबर आग बधतो ई जाव हो । प्रजा अर राजा री फोज्या दोमा मिलर घणी ई कोसीस करी पण उण री चाल मे की फरक कोनी पड्यो । रैयत हाथ ऊचा कर दिया हा अर भगवान सू प्रार्थना कर ही क गाव र आसै पास सू फाक र निकळ्या पछ ई रात पड । जे रात पली पड़गी अर टीडी फाक न गाव मे ई रातबासो करणो पड्यो तो दिनूगै गाव मे लोगा रा हाडका ई कोनी लाध ।

अचाणचक ई तीन दिना ताई काळी आधी अर बिरखा आवण सू टीडी फाको मरण लागग्यो । अर विक्रमपुर कन घूग्यो जर्थे उणरो नाव ई नाव रयो हो । खेता में इण री परता लाग्योड़ी दीख ही । बिरखा बखत घुकायर हुयी । जीवण सारू धान हुयो । घास रो सुआव चोखो रियो । कोई बात नी, मिनख मरता मरता बचग्या । सूसाड़ा मारतो ऊनाळो गुजरग्यो अर हाड दुखावती सरदी आयगी । डाफर सागीड़ी बाजण लागगी । विक्रमपुर री

रयत ऊनाळ मे तो गरमी गू बळती रयी अर सीयाळ म ठड सू मरण लागगी। मेह्-पाणी हुया तो हो पण रत टाळर। लोग भूखां मरता मरता बच्या पण इण जीवण मे की अदरक धानी ही।

बबई रेजीमट रो वडो अफसर पठानकोट जावतो विश्रमपुर र सार-कर निकळ्यो। गोरयै रातवासो लियो। राजाजी मूरतसिंह ी न ओ समाचार मिल्यो जण मिलण वासत गया। घणी बातचीत करी। सधि करनै मदत लेवण रो जतन करयो पण वह अफसर साफ इनकार कर दियो कै बबई रजीमट रो अबार रजवाड़ा रैं साग कोई सधि करण रो विचार कोनी। राजाजी साफ पड़ूतर सुणन पाछा आयग्या।

राजाजी कान रा काचा अर विचारा रा ओछा हा। विरोधिया अर सिकायत करण आळा न फासी चढा देवण रा हुक्म फटाक ई दे देवता। इण सू लोगा मे लासो डर बठग्यो हो। सरता थका तो लोग फरियाद साम्ह ई कोनी जावता। चोली मूडी भाग री मानन भुगत लेवता।

राज रो खरचो बधतो जाव हो। आमन्दी घटती जाव ही। इण वासत नूई नूई रेखचाकरी लागण लागगी। धूवो रेख थळीतो रेख सासर रेख जीमण रेख अर भड़ूला रेख बगर नूवा नूवा नावा री रेखा ईजाद हुयी। जनता काळ सू तो मर ई ही, ऊपर सू नूई रेखचाकरी रो भार दूता बधण लागग्यो क लोगा रो दोनू बखत चूण खावणो ई मुसकल हुयग्यो।

●

डेरै री बात

ठाकर सुजानसिंह राजाजी मूरतसिंहजी रा बाळगोठिया हा। बखत रो बकाजो चोखी तरै समझै हा। धावां मे ब मूरतसिंहजी रै साग रवता। गांव रो थोडो घणो फायदो ई हुवतो। बडेरां रो बणायोडो डेरो हो। खरचो दोरो सोरो लेय-देयर चालतो हो। मोकै रो इतजार कर हा। राजाजी मरण लाग्या जणै मूरतसिंहजी न भोळावण दी जद दिन फुरण री आस बधी। खरी-खोटी सोस देयर घणो कन पूगण लागग्या। खून रो नाळो चाल्यो जण आप ई थोडो सारो लगाय दियो। अब पूछणो ई कांई! मूछ रा बाळ बणग्या। राजाजी रा खास आदमी हुयग्या। दिन फुरग्या। ब्याळूमेर पूछ ताछ हुवण लागगी। डेरै मे निखार आवण लागग्यो। ठाकरां री जागीरी छोनीज ही पण अठ तो जागीरी और मिली। माम-तान रै साग स्याणप आयगी। दो तीन धावा मे सफळता मिली पछ तो पूछो ई ना। रुतबो दूणो हुयग्यो। छाती सवा हाथ चोडी हुयगी। राजाजी अेहसान रो पूरो बदळो उतार दियो। ठाकरां न ताजिमी सिरदार बणाय दिया।

मोहिलवाटी, बीदावाटी अर थळी र धावां मे चोखो पराक्रम दिखायो। आयूण रो मोरचो कमजोर पडै हो। इण वासत इणां ने आयूण रो मोरचो सूप्यो। मोरच माय जावता जावता दीवान वैद धरमचन्द दुसमण री रिछ्या ही काढ नाखी। चुगलखोर राजाजी रा कान रात दिन भरता ई रवता। खरी खोटी करण में कदेई चूकता कोनी। जण ई राजाजी रो हाथ उठतो, इणां रो हाथ साग त्यार मिलतो। इणां रो धरम करम हो राजाजी री हां मे हां अर ना में ना। इणां रो काम हकारो भरण रो हो। राजाजी दीवान सूं नाराज

ता हा ही, दणो ई बळनी म पूछो नाव लियो। राजाजी बोल्या तर दीवान सू माराज हुयन नयानत रो नांव लगायर मृत्यु दण्ड दे दियो। दीवान बेमौत मारयो गयो। रेवधाकरी साक ठिकाणदारां साग करडाई करी तो सगळा ठाकर नाराज हुयग्या। मौको देखर राजाजी रा कान भर दिया। अमानत म नयानत रो जुरम लगायर फांसी चढ़ावण रो हुकम दे दियो।

राजाजी आपूण र मोरच पधारग्या जण आप र बिसवासी अर जूमार लोगां न साग लेग्या। डेर मे दा अेक गोल्यां, राणी अर पासवानां रैवगी ही। इण कारण ठाकरां रो डरो खाली खाली साग हो।

ठाकर अठ हुवता जण डेरं में रात दिन चोखी चहळ-पहळ हुवती। आठ दिन हाजरियां सू घिरया रवता अर दिन ढळतांई गढ मे जाय पूगता। राजाजी कन अठीनली बठीनली करता दो माची दो भूंडी करता। बखत चूक सक हो पण ठाकर चुगली करण मे चूकता कोनी। घडी अेक रात गयां ठाकरसा डेर आय जावता। जित उणां रा भायला ऊभा अडीकता लाधता। गरमी र दिना मे महफिल चूतरी मायं जमती अर सरदी मे साळ मे। आधी घडी महफिल चालती पछ कसूबो आवतो अर दारू जमतो। होळ होळ बारला सगळा लोग चल्या जावता। ठाकरसा ओर म आ जावता। गोल्या री पुकार मचती। पासवानां रो वखत हुवतो। ओ रिस्तो अेक पुराणो अर नूवो मिल्यो जुल्यो रिस्तो हुवतो। रूप रो अर रोटी रो। सगळां सू बेसी ओ रिस्तो मजबूरी रा हुवतो।

जद ठाकरसा अठ हुवता, रूप माय निखार हुवतो। रखेला, पासवाना आप र नाथ रो इतजार करती। कदई कदई इतजार मे आखी रात आख्यां मांयकर निकळ जावती। जे कोई नींद ले लेवती तो उण री हालत खसता ई हुय जावती। अ सगळी वखत रो इतजार करती क ठाकरा री निजर ठडी रेवै अर बुढाप मे डेर सू पेटियो चलू हुय जाव। मद रो रिस्तो बेहोशी सू हो अर मदमाती रो रिस्तो रीझ सू हुवतो। सगळा आप-आपरी चाल चालता। हार-जीत रो निणय तो आवण आळो काल ई करलो। बवार ता दोनू जणा

अेक दूसर नै घूमणो ई चावै हा। उणां री निजरां मे धापर चामाकी रवती। पासवानां आप रो मान देवती अर ठाकरां रो मान लेवती। पण धनकी इण हालत स अपरिचित ही। बा जठ ही बठ बा अेकली ही का मवराणी। ओ वणबूझ जजाळ उणन भावतो कोनी। बा जठ ही बठ उण रो मान हो, रुतबो हो। आप र अधिकार री अेकली ही। दायज म आयी, पण रूप अर गुणां र कारण ऊचा पद पावती जाय ही। पण अठै तो उण सरीखी केई बठी ही। ठाकरां री निजर माप रवण सारू अपण आप न लोयर कोसीस करणी पडती।

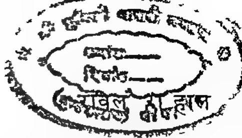
धनकी मे घणकरा गुण तो समय री जरूरत सागै आया अर केई गुण भविष्य री जरूरत र कारण बातां बातां मे ई उण री मा बताय न्या। जरूरत पडया धनकी अचेतन मन सू जद उणां रो उपयोग करया ता उणन गरी सफलता मिली। पछ ता बा सगळी बातां न याद कर कर न पूरो ई फायदो उठावण लागगी। उणरो रिस्तो ठाकरां रा जरूरत मू हुयो पण अठै उण रो रिस्तो क्षणिक सुख रा हो जिण सू बा घबरावती। उण री चतराई इण मे ही क ठाकरसा रा काम तो बणावतो रव पण पग भारी मी हुवण देव अर इण बात रा पतो ही नी चालण देव। उणन दो घर अेक सागै बसावणा हा। ठाकरमा न भी राजी राखणा हा अर आपरो जीवण भी सुरक्षित राखणो हो।

ब्याव म जण बा विक्रमपुर आयी अर उण री चतराई अर रखरखाव देख्यो जण ठाकर सुजानसिंहजी रो की मन हुयग्यो। घणी भांत री छोटी मोटी सुमड-सबर री तुस देखर ठाकरां री इच्छा उणन अठ ही राखण री हुयगी। सगळी जाणकारी लेयर ठाकरसा नस मे मागली। जिका र कारण कवरसा रो मान हो उणां न ब ना कोनी कर सक्या। अेक जरखरीद र खातर आप रो ठिकाणो गमावणो कोई समझदारी कोनी ही। कवरसा सोचण लाग्या क उणनै इता दिन पैली ई पासवान बणाय लेवणी चाहीज ही जिण गू कोई माग कोनी राख सकतो। उणरो परिचय साधारण रूप मे

नी देयर खास तौर सू बतावणो चाहिजे हो। इण भूल रो ही दुख तो उठावणो ई पड़े हो।

पण अठै धनकी जरखरीद ही। उण री इछा रा कोई महत्व कोनी हो। ठाकर री इछा ही सब कुछ ही। ठाकरा री जरूरत ई उणरी जरूरत ही। उणन अठ आयी न थोडा ई दिन हुया है पण उणनै केई लुगायां र सामन मांच माथ जावणो पड्यो। उण रो मन अठ कोनी लाग्यो। उण सू बेहतरीन अठ बोहळी ही। उण री अठै कोई मोल कोनी हो कोई अस्तित्व कोनी हो। उतार र भाड ज्यू ही। गाव रा ठाकर इणा सू छोटा हा पण उणा रो मान इणा सू बडो हो। व सगळा री इजत आबरू सार जाणता हा। इणा दाई लुगाई न मद रो प्यालो कोनी समझता हा।

●



ठाकर सुजानसिंहजी रो डेरो दो हजार पावडा जमीन न घेरयोडो हो। डेरो तीन कानी सू खुलो हो अर दिखणाद गोला री च्यार-अेक गवाड्या ही। उतरादै गरी सू याड हो। नीम, पीपळ अर झाडक्या सागीडी फल्योडी ही। गोडा सूणी मेवण ही। सूरडा अर खरगोसा रा बिल हा। तीतर उडता फिर हा। झाटो लगायर घास अर सासरा सारू आवण जावण रो मारग बणायोडो हो। घर रो फूस कचरो अठीन ई नाखीजतो। चौमास मे गोबर, मींगणा अर लीद वगर अठीनै ई गेरीजतो। रात दिन गध रो भभको उठतो रवतो। मेह पाणी अर झड र दिना मे ओ भभको घणो जोर मारतो। गेलो हो जिको आग जायर बडै मारग मे रळ जावतो।

डेर रै तीना कानी माय सूणी याड लाग्योडी ही। अेकै कानी सामो साम रोडा लगायर पकी भीत बणायोडी ही। बीचोबीच पूरी चौडी पोळ ही। पोळ कन कोटडी ही, जिणम पोळियो रैवतो हो। पोळ र माय बडता ई सामन बाखळ ही। अर लाबी चौडी चूतरी ही। जीवण हाथ कानी सफो हो जिकै म ठाकरां रा घोडा बधता हा। चूतरी कन बरामदो हो। बरामद र सार छोटी कोटडी ही, जिकी मुखी लोगां र बठण सारू काम आवती। बरामद र सार चौक काढने पक्षा साळ ओरा अर बैठक बणायोडी ही। बठक र सारै सू पेडी जनान घर मे जावण वासतै ही। पेड्या ऊपर जायन चौक मे निकळती। चौक म तीन च्यार जनानी बठका हो। उणा र सार कोटड्या ही जिका मे पासवाना अर पडदायता रवती। उणा र सार गोल्या रै रवण सारू ओरा हा। रसोई परीडा ई मामन बणायोडो हो। समान घर र सार सार पेड्या री नाळ ही जिकी बाखळ मे निकळती हो। ठकराणीसा

रै आवण जावण रो ओ ही मारग हो। अ सगळा लदाव नाखर बणायोडा हा। म्णा र माथ माळिया हा। पेडया जठ पूरी हुवती, बठ अेक मोडो हो। मोडै र सामन बाखळ ही। लाबा चौडा सफा हा, जिका म जुध रो ममान जीण बगैरै रवता। लारल छड गु भारिया हा जिका म फूस–पानडो रवता। घान रा कोठलिया अठ ही हा।

लारलै बारण सू निक्ळया पछ गाया ऊठा रा छपरा हा। मेपडया रा पिरावडा अठ ही हा। याम री डूगरी ई अठै ही ही। दो तीन खेजडा अर जाळ लारीन ही जिका न सिरक्या सू मिलार लांबो चौडो झूपडो बणा राख्यो हो। ओ बिरखा पाणी म सासरा न बाधण सारू काम आवतो। पोळ मे बडता ई डावै हाथ कानी दो ओरा मिलायर जत्री बणायोडी ही। दारू काढर अठ ई मटका भरन राख लेवता। चौमास मे सिझ्या रा चूतरी माथै जाजम बिछायर ठाकरा री बठक अठ ही जमती। सीयाळ म बरामदो काम आवतो। डाफर चालती जणै ठाकरसा साळ मे बिराजता।

ठाकरा न गया दो च्यार दिन ई हुया है। इण कारण डेरो खाली खाली दीख हो। घोडा रा खुर हाल तार्ई दसाळी लाग्या पछ ई मिटया कोनी हा। डाव हाथ कानी खूण आळी जाळ सूनी सूनी लाग ही। ढळत सूरज री तावडो जन्री र सामन पड हो। पावलो ऊठ धूड मे लिट हो। फौज मे बँवतो बवतो बूढो हुयग्यो जण ठाकरा इण न पाणी रा ढाचा ढोवण सारू डर मे छोड दियो हो।

लारल फळस सू गेलो मे सौ पावडा चालर सीध मारग मे मिल जावतो हो। ओ मारग थोडी दूर चाल्या पछ दो कानी फट हा। अेक तो गढ र सामन हुयर राज र कूव कानी निकळतो हो अर दूओ मारग सीधो देवी मिंदर कानी जावतो। मारग र अधबिच माताजी सू आवणआळो मारग आयर मिल जावतो हो।

●

शहर में

राणो दो दिन शहर री झाकी देखतो रयो। शहर छोटो ई हो, पण हो बडो ही फूठरो। जत्या र उपासरा मे भणाई री पोसवाळा ही। ब दवा दारू री काम भी करता रैवता हा। महाजना कानी सू दो अेक चटसाळां ही जठ गुरु मुफ्त मे भणावता। सेठां र चद खास सू गुरुजी रो भरण पोसण हुय जावतो।

शहर म जात जात र लोगा रा, जात र नाव सू बास बस्योडा हा। दीवाम बद हा, इण वास्तै आरी चढती रा दिन हा। राणो दीवानजी र दीवानखान म मिलण सारू गयो। अठ बेरो पडयो क दीवानजी र साग ठाकरसा ई 4-5 दिना पली ही भटनेर कानी गया है। अठ ही राण सगळी खबरा ली अर ओ पता लाग्यो क उण र ठाकरां न बुलावण सारू हुक्म भेजा दियो है। राणो घनकी सू मिलण वासत डेर कानी चाल पडयो। सिझ्या पडतां-पडता राणो डेर जाय पूग्यो।

पोळियो सुस्ती रा पाठ पढ हो। राणं न अचाणचक देखर हडबडाग्यो। बधती टड र साग पोळियो पोळ ढकर गूदडा म बडणो चाव हो। मन म सोच्यो, ओ कुबेळा रो किया आयो है, कठ ई हताया मे बठग्यो तो सिया मारसी। राणो बोल्यो—'जै माताजी री !'

'ज माताजी री सा। इण ठड मे किया पधारया ?' पोळिय पूछयो।

'काई बताऊ ठाकरा ! धूणी मन बटतो राणो बोल्यो—'काल ता पाछो गाव जावण रा विचार है। मिलण सारू आयग्यो।'

गटो सभाळण रो साग करतो पाळियो बोल्यो— चिलम भरू ?'

'काई करसा ? पाछो वेगो ई जावणा है।' फेर कैयो— सनेसो कर दो ता मिलणो हुय जाव।' पाळिय रो जी सारो हुयग्या। बो सनसो करण खातर खाया खाया पग उठायर पेडघा कानी चाल्यो। सनसो करन पाछो आया जित तो बो हाफण लागग्यो।

आप चन सू बठो' राणो बोल्यो। 'हू आप ई जायर मिल लसू।' कैवतो कवतो राणो मिलण सारू चाल पडयो।

चिलकारो दिन हो पण चिलकारो ठड सू डकीज्योडो सा लागे हो। ठड बधती जाव ही। डाफर सरू ता कानो हुयी ही पण पून मे डाफर री भलक दीखण लागगी ही। राणो पेडघा कनै आयर खडो हुयग्या। पेडघा री नाळ मे अधार री छिया पडण लागगी। जाळी मांय सू चानणा पेडघा रो सनाण ई बतावै हो। पण पून पसवाड रा गाभा जरूर उठाय ही। थोडी ताळ पछ धनकी पेडघा मू उतरण लागगी। पगा माथ पडतो चिलको इया मालम पड हो जाण रति रो स्वागत करणन कामदेव जूही र फूला री पगा मे निछरावळ कर है। पीळो पोमचो ओढघा धनकी होळ होळ उतर ही। रखडी बाध्योडी ही। रखडी नीच मींढी सोव ही। काना मे पती सुरळिया हा। नाक म काटो पळपळाट कर हो। गळ मे गळपटियो हो। अेक लड दोनू छात्या न अेक कर राखी ही। बूकिया माथ टडो हो। हाथा मे लाख री चूडघा ही। आंगळघा म बीटघा सोव ही। केसरिया कुडती माय सू सूडी गराई रो आभास देव ही। आधो कढोडो पल्ल माय सू हुयर पटलो साग लाग्योडो हो। मथरी चाल सू उतरती विश्व न आकर्षित करण रो अभिमान कर ही। आख्या मे घाल्याडो काजळ रति री पलका न छेड बढाव हो। काळी भवर, कामदेव र बाण रो बाकपण लिया ही। काचळी म फाटती छात्या कुडती सू कसीज ही। जोबण रो चूवतो रस सूडी मे रसीज हो, भरीज हो। पतळी कमर रस र भार सू बळ खाव ही। छाती आग पल्लो राखर पाछो हाथ नीच करती जण इया मालम पडतो जाण धण सुरति सुख देवती देवती पाछी सिरक ही। पगां री आगळघा मे बाजती बिछूडी अभिमान सू जावती ,जुवती रो मारग बताव ही।

बामणवारी रा, ओस्या रा कोया ऊंचा हुयनै नीच झुक्‌ रा । राणो चितराम सो हुयोड़ो ऊभो धनकी न देखतो ई रयो—रति र आवण सू जाण कामदेव चमगूगो हुयग्यो हुव ।

फन आयने कयो—'आवो राणाजी ! अठीनै चालां ।' अर वा मारग बतावती लारली बागळ बानी चाल पडी । बाखळ म मांचो पडयो हो । उण बानी देखती बोली—'अठ बैठो । सगळी बाता करांला ।'

राण मांचै माथै बैठर सगळी बात बतायो । धनकी बोली-बोली सुणती रयी । अधारो बधतो जाव हो । ठड सुकडती जावै ही । सगळी बात सुणर धनकी बोली—

'आप र सागै सनैसो आयां पछ ना तो भूख लाग है अर ना नीद आवै है । कद चालणो है ?'

राण बतायो—'सबरायत र दिन पोहर अेक रात गया पछ लारल फळस रै सामनै जाळ नीच ऊभो मिलसू । उणसू पलां तीतर री अवाज करूला । जणै तू बार आ जायी ।'

बात करन राणो पाछो आयो जित तो पोळियो ऊघण लागग्यो हो । राण पूछयो— चिलम पीवो ?'

पोळियो बोल्यो—'थे ई पीवो ।

राणो समझग्यो क पोळियो नीद मे चूच हुयोडो है । ओ सा की ओर ही पीसी । राणा चिलम भरन पीवण लागग्यो । कर्णं ई नाक सू अर कण ई बाक सू धूवा काढ हा । उळझ्योडा विचार धूवैं साग बार आवैं हा अर ठड र भार सू दबता जाव हा । चिलम झाडर राणो उठयो अर पोळिय सू ज माताजी री' करी । पोळियो चमकर बोल्यो—'बात हुयगी ? फेर कद आवोला ?'

राण मुळकर मूडो खोल्यो—'देखो, कद आवणो हुवैं !' अर राणा पोळ र बार निकळण लागग्यो ।

•

गाव कानी

राण आखी रात जजाळा मे खो दी । मसावटो हुवण लाग्यो जणै उठर आभ कानी देख्यो । आभो तारां सूं सैंठो भरयो हो । अंधार पखवाड़ मे तारा घणा सोवणा दीख हा । पुराणी यादां सा बिखरयोड़ा तारा भावां सिरखा मीठा लाग हा । पून फटकारा मारती चाल ही । आखी रात बरस्योड़ी ठंड जमण लागगी ही । आगलघा तकात ठंड र साग जमती जाव ही । अगूण कानी आभो फाटतो जाव हो । धोळी धोळी लकीरां बिखरती जाव ही, पण धोळास मे लाली री हळकी पुट ही जिकी होळ होळ गरी हुवती जाव ही अर धाळास मिटतो जाव हो । राण खोयो मारनै साढ न नीरी अर आप जरूरी कामा सूं फारक हुयन जावण री त्यारी करण लागग्यो । पलाण कसर पूई त्यार करन हाथ तपावण लागग्यो । इत न पुजारीजी उठर बार आयग्या । त्यारी देखर पूछयो—'दिनूगे पला ई आ काई ?'

'हा, अबार रवान हुवणो हो, अर आप र जागण न अडीक हो । राण उथळो दियो ।

'पाहुर अेक दिन चढघा पछ टुरता ?' पुजारीजी बोल्या—'ठंड खासी है ।

तावड़ो आवणवाळो है राण पडूतर दियो—'अर पैंडो ई खासो करणो है ।' पछ पुजारीजी न डडोत करन मोरी खोलर साढ न ऊभी करी अर टुर बहीर हुयो ।

बगीची सूं बार निकळर साढ न जकायी अर सार ठाकर मारन उठायी । टिचकारी देय न मोरी री सडका

बार-बार ई गाव कानी टुरग्यो। अगूणं आम म लाली गरी लाल हुयर निखरती जाव ही। जडधा मे धोळ मूढ रा भुरज दीखण लागग्या। होळ-होळ सूरज लाल हुयर चमकण लागग्यो। लाली सिरकती जाव ही। किरणा आमो चीरन बिखरती जावं ही। पण राण रो ध्यान मारग कानी हो। साढ अेक चाल सू चालती जावं ही। तावडो चढतो जावं हो। सुतर-सवार रं खाधं री कामळ पागडं कन कर हुवती आसण माथ आयगी। पण साढ ढाण पडी चालती ई जाव ही।

सूरज सूवं बिचाळ आवण लाग्यो जणं राणो रामसर कन पूग्यो। कूवो चालर थमग्यो हो। बळद चर हा। लुगाया पाणी ले जा चुकी ही। सासर खेळधा म पाणी पीव हा। छोरा गट माय बठर न्हाव हा। पणघट खाली हो। माळी बठा हलाया कर हा। राण अठ साढ न पाणी पायो। कोठ माथ बठर रोटी खायं अर चिलम पीवी। अधघडी सुसताय र पाछो साढ माथ चढर रवान हुयो। आखो दिन सूरज र सागं साग चालतो रयो। दिनूग री ठडी पून दुपार ताई ताती हुयर पाछी ठडी चालण लागगी ही। पण सवार रा ध्यान अठीन हा ई कोनी। होळ होळ कामळ पाछी खाघ माथ आवण लागगी ही। सूरज चालतो चालतो थकर पिछम मे बिसराम लेवण न जाव हो पण सवारआपरी धुन मे ई चाल्या बग हो। राणो अं सगळा काम जीवण रा रूप समझ न करतो जावं हो, पण मन तो उण रो आ सगळी बाता सू अळगो हुयन कठ ई फिर हो।

गाव, ढाणी मारग माय आव हा, पण राणो सगळा न लार छोडतो जाव हो। उगनं ना तो कठई ठरण री फुरसत ही अर ना बात करण री। घार चढिय सो चालतो ही जाव हो।

पोहर अेक रात ढळगी जण गाव पचियो सो उभरघा। ठड ई खायी खायी पडण लागगी। साढ रा पग ई खाथा खाता पड हा। गाव धूव र गोट मे ऊधडतो नेड सू नेडा आव हो। गाव री काकड आया पछ ता नीमडा रै मायकर कूव रा धोळा-धोळा मरवा भाकण लागग्या हा। पून र फटकार सू

हालती डाळया रो सूसाट कनपटया वन फटीड-सा मारण लागग्यो ह
अधारघुप हुवता थका ई भूपडा भलकण लागग्या हा अर उणा र बीचो
रावळ री मेडी अळग मू ई दीख ही । आयूण कानी देख्यो तो सूरज रो क
नाव निसाण ई कोनी हो । चाद सूरज सू पला ई छिपग्यो हो । तारा भि
मिल भिलमिल करता हा पण उणा म ना तो चाद री सीतळता ही अर
सूरज री गरमी । ठड वधण लागगी ही । ठडी पून चाल ही । राणो कूवै म
साढ न पाणी पायर गाव म वडण लाग्यो । गाव रा गिडक घुरया माय
मुसण लागग्या हा । घोरका करनै सगळा न डराव हा । गाव मे सोपो पड
हो ।

घर मे

घर रै कन पूगर राणो साढ सू लटूमर उतरया। फाटो खोलण सारू हेलो पाड़यो। बाखळ सूनी ही। धूणी ठडी ही। चूतरी साव खाली पडी ही। धूई म सूत कुत मूढो काढर देख्यो अर निस्पृह भाव स देखर मूढो पाछो घालर सोयग्यो। हेलो सुणर घर धिराणी सूकार मोढर बार आयी। फाट र कूट री साकळ खोलर फाटो खोल्यो। राण साढ न ठाण कन ले जायर जकायन बाधी। सिरकपासी खोलर तग खोल्यो अर जीण उतारन छान म राखी। पाछो आयर गीदघा लेयग्यो। साढ रै चरण सारू चारो नीरयो। इत न घरधिराणी रसोई मे जायर बोभर मे आटघोडी थेपडी काढर बासती सिळगाय दियो हो। धूलो थोडो थोडो जग हो अर साग सागै धूवो ई हुय हो। राणो कनै आयर बठन हाथ तपावण लाग्यो।

'पे बोहळो मोडो कर दियो!'

'दुरयो तो वेगो ई हो। मारग म कठई ठरयो कोनी। तू सीया मरती बगी ई सोयगी दीखै, जिक सू तन बोहळो मोडो लाग है।'

'आज री आस छोड दी ही।'

'आज ठड तो सागीडी है।'

'हा।' चूल माथ पडघ ऊनाड माय सू गूणिय म गुणगुणो पाणी घालती बोली— हाथ मूढा धोयर आ जावो।' अर बा बेवणी माय सू केलडी उठायर चूल माथ राखी। राणो हाथ मूढो धोवण सारू बार आयग्यो। घर धिराणी छनडी नीच सू काठडो काढर पारी माय सू बाजरी रो आटो लेयर ओसणन लागी। चीपिय सू खीरा बार काढर थेपडी सार कठफाड लगायी।

'सोच काई हो ? थार विस मे ई !' चमक्कर चळू करतो राणो बोल्यो ।

'म्हार विस मे का धनकी र विस मे ?' काठडी घोयर छनेडी मे राखती घरधिराणी ठिठोळी करी ।

'धनकी मे इसा काई गुण है ? हू तो थारी आस्या री गराई मे गम्योडो हो ।' सोटो राम्वत राण उथळो दियो ।

थाळी माजण सारू ले जावती बा बोली— थे तपो । हू अबार थाळी माजर लावू हू ।'

थोडी ताळ म बा पाछी आयगी । पल्ल सू झालर गूणियो लेयगी । हाथ मूडो घोयो अर घाघर री लावण सू मूडो पूछती पाछी आयर कन बैठती बोली—'अब बतावो थे काई साच हा ?

'सोचै काई हो ?' सीयां मरत रा हाड कापण लागग्या हा । पळपळाट करत घर काती देखर बोल्यो— ओ चिलको काय रो है ?'

चूलो ठडो पडण लागग्यो हो । थेपडी भोभर मे ओटती बोली— चाला, अब सावा ।'

●

चूलो चोखो चेतन हुयग्यो। झपडो चानण सू भरीजग्यो। रोटी पोयर केलडी माथ नाखी। दूसरी रोटी और पोवण लागगी। इत न राणो हाथ मूढा धोयर पाछो आयग्यो अर बेवणी कन गूणियो राखर तपण लागग्यो। बा रोटी उथळर सेकण लागगी। पछ केलडी सू रोटी उतारन चूल [आग राखर सेकण लागगी अर पोयोडी रोटी केलडी माथ राख दी। तपकियं रो पसवाडो फोरघो, बो सू सू करण लागग्यो हो। रोटी न दो अेक बार फोरी। रोटी सिकर उबसगी। रोटी झडकायर थाळी म राखी अर घिलोडी सू घी चुरस राण र सामन सिरकायी। राणो पलाथी मारन जीमण लागग्यो। कुड़छी सू खाटो घाल्यो।

'क्यू, धनकी मिली ?

'हा।'

'काई बात हुयी ?'

'बोहळी बाता हुयी है। बा आवण सारू त्यार है। दो च्यार दिना पछ पाछो जायर उणन लावणी पडसी।

रोटी खावतो खावता राणो धनकी र बिस म सोचण लागग्या। धनकी अेक विडबना है का समाधान ? इण रो हाथ झालणो समाधान है का अत ? दोनू बाता उणर आपर ई हाथ है। जे इणरै जीवण म घर घर भटकणो नी हुवतो तो इणन पुराणो घर छोडणो ई को पडतो नी। आ ना तो पलां घर छोडणो चाव ही अर ना आज चाव है। इण री तो मजबूरी है। फेर मजबूरी सू आपरो अपमान तो कोनी सयो जा सक। इण वासत मजबूरी म फेर आछ भविष्य सारू घर छोडर बार आव। विडबना मजबूरी रो ई दूजो नाव है।

फेर सोचण लाग्यो, हू कठ इण जजाळ म आय फस्यो ? कीं लेणो न देणो। अधर-च्बव म लटकतो कठ ई मारघा नी जावू। अेक अदीठ भय री कल्पना सू उणर घर माथ सुसती आवण लागगी।

'इयां काई साचा हो ?'

'सोच काई हो ? थार विस मे ई ।' चमकर चळू करतो राणो बोल्यो ।

'म्हारै विसै मे का धनकी र विस मे ?' काठडी धोयर छनेडी मे राखती घरधिराणी ठिठोळी करी ।

'धनकी मे इसा काई गुण है ? हू तो थारी आस्या री गराई मे गम्योडो हो ।' लोटो राखत राण उथळो दियो ।

थाळी माजण सारू ले जावती बा बोली— थे तपो । हू अबार थाळी माजर लावू हू ।'

थोडी ताळ म बा पाछी आयगी । पल्ल सू झालर गूणियो लेयगी । हाथ मूडो धोयो अर घाघर री लावण सू मूडो पूछती पाछी आयर कन बठती बोली—'अब बतावो थे काई सोच हा ?'

'सोच काई हो ?' *सीया मरत रा हाड कापण लागग्या हा ।* पळपळाट करत चरै कानी देखर बोल्यो— ओ चिलको काय रो है ?'

चूलो ठडो पडण लागग्यो हो । थेपडी भोभर म ओटती बोली— चालो, अबै सावा ।'

•

रावलै मे

पोहर अेक दिन चढग्यो हो। आभो साफ हो। सूरज की तेजी माथ हो। डाफर ठंरगी ही। टाबर तावड़ै म ऊभा हा। केई छोरा रग बिरगा टोपला ओढयोडा हा अर केई गाभारा खोया बणायर ओढ राख्या हा। डोवटी रा झुगल्या परयोडा हा। कमर मे काळी ऊन र डोरा री कनोडया बाधोडी ही। कनोडया मे मादळिया, कोडया अर खखलोळया पोयोडा हा जिक सू टाबरा न निजर नी लाग। पगा ऊभाणा हा। दो अेक छोरा र गळा म हसली ही। छोरया गोडा ताई घाघरिया पर राख्या हा। माथ ऊपर फाटोडा ओढणा री छोटी ओढण्या बणायर नाख राखी ही। गळ मे देवता रा पगलिया घाल राख्या हा। भेळा हुयर सगळा टाबरिया गाव हा—

सुरजी बाबा तावडो ई काढ
थारा टाबरिया सीया ई मर।

लुगाया चौक रा काम कर ही। आदमी बाखल मे दताळी कर हा। सासरा नै चरण सारू बार काढ दिया हा। गाव रा मोट्यार लुगाई सगळा घध लाग्योडा हा। गावा मे ओ रिवाज है क पू यू अमावस अर इग्यारस र दिन चाकी कोनी फोईज, बिलावणो कोनी हुव। इण कारण लुगाया रो वेगो अर मोडो उठणो दिना माथ निमर कर—जिक दिन थाडो घणा काम हुव, तडक उठ जाव अर जिण दिन पीसणा बिलोवणो नी हुव उण दिन सूरज ऊग्या पली उठ जाव। मिनख सदा ई सूरज र साग ई उठ अर पोहर रात गया पछ सो जाव।

राण सूरज ऊगतां ई उठन जरूरी काम सू फारिक हुयर सिनान करघां पछ माताजी रो ध्यान धरघो । घड़ी अेक दिन चढ़घो जण रावळ मे ठाकरा सू मिलण न चाल्यो ।

रावळो कचो पको बणायोड़ो हो । तीन कानी बाड लगायर रावळ रो रूप बणायोड़ो । सामन भाठा लागायर गोबर पीळी मिट्टी अर मुरड सू नीप्योड़ो हो। जीवण हाथ कानी चौकी बणायोड़ी ही । चौकी माथ ओटो हो । सामन लाम्बी चोड़ी बाखळ ही ।बाखल मे सावड मे बठो मोची ऊठा र जीणा रै कारघां लगाव हो । पाच सात ऊठ ऊभा हा । सामन चतरी माथ दो-तीन माचा ढाळघोड़ा हा । सावडो चढतो जावै हो । ठाकरसा माच माथै बठा हा । परवार रा दो अेक जणा कन बठा होळ होळ बाता कर हा । राण बाखळ मे खखारो करन आपर आवण री सूचना दी । खखारो सुण्या सगळा रो ध्यान राणं कानी गयो । राण सगळा सू 'ज माताजी री' करी अर कयो—'काई सला सूत हुव है ?'

'आवो राणोजी, आज दिनूग दिनूग ई !' ठाकरसा बोल्या— कठई बार गयोड़ा हा काई ?'

'हा, दो चार दिना सारू बार गयो हो ।'

'केई आदम्यां न तो मोरच माथ भेल दिया है, अर म्हार जावण री त्यारा बरतीज है ।' ठाकरा हाथ रै इसार सू राण न माच माथ बठण रो कयो ।

राणो माच री दावण कानी बठग्यो । ठाकरसा आपर आदम्या सू थोडी ताळ सला सूत करता रया । कुण कुण कद धूगसी, ठाकरसा सीधा ई अठ सू रवाना हुयन सीध मारग माथ चल्या जासी, कित्ता कित्ता आदमी, ऊठ अर बळधा गाडघां कुण र साग हुसी । सगळी बाता करनै सगळा आप आपर ठिकाण-सर जावण री त्यारा करण लागग्या ।

सगळा गया परा जण राणो बोल्यो—'वेद नै सेनापति बणायर भटनर माय पावो बोलण सारू मेई दिनां पलो ई विक्रमपुर मू रवानै कर दियो है। मन आ जाणकारी बठ ई मिली।

'सगळी बात साची है ?'

'हां, आपर कन परवानो कोनी पूग्यो काई ?'

'ओ तो यार आवतां ई पूगग्यो हो। और काई बात हुयी ?' उत्सुकता सू पूछयो।

'बात सगळी हुयगी। या आवणन त्यार है। हू उणनै लेयनै सीधो काळी डूगरी पूग जासू। आप वठै स ई उणन बुलाय लिया। हू थोडा दिन वठै ई रसू। बात मोळी पड जासी जणै आपरो सनसो आया सू पाछो आ जासू। नी तो मनै ठाकर सुरजनसिहजी सू डर रैसी। ठाकर सुरजनसिहजी अबार थावै माय गया है जण ही बात करण रो मौको मिल सकयो। सगळी बात तै करन आयो हू। राणै सारी बातां खुलासा करन बतायी अर चुप हुयग्यो।

सीयाळ मे ठाकरा र लिलाड माथ पसीन री बूदा आवण लागगी। विचारा री छिया ई दौडण लागगी। काळजो कन सू जावतो लाग्यो। मिलण रो सुख लाबी दूरी सू पाछो दौडण लागग्यो। थोडा सुस्त हुयर बोल्या—'काई बताऊ, मन तो काल ई जावणो पडसी। सीधो वठ ई पूगण रो परवानो आयोडो है। आ सगळा नै आ बात हाल ताई बतायी कोनी है। हू तन ई अडीक हो। अबै तू आयग्यो, हू अठ स सीधो चल्यो जासू। उणन बुलावण रो सगळो बन्दोबस्त करतो जासू। की कसर रय तो तू देख लेयो।'

ये गुलाब न भेज दिया। बो घनकी न लेयर अठ आ जासी अर पछ आपन सगळा समाचार सुणताय देसी। राण समझायो।

बोहळी ताळ ताई इया ई बाता हुवती रयी। राणो बोल्यो— अब हू जावू ? सिझ्या रा का काल दिनूग पाछो मिल लेसू।'

'हां !' कयर ठाकरसा अक गैरो निसकारो नास्यो जाण काळजा रा दो टुकडा हुयरै बिखर हा । घणी मीठी बात होय सूं अळगी हुव है । हुकारै रै सागै ई ठाकरसा री बोहळी इछावां उणा न इया छोडगी जिया सुरति सुर मे ठुकरणी सा गरब रै कारण उणान मधविचाळ ई छोड जाव ।

पेरै री धमक हाळ होळ मदी पडण लागगी ही । काळजो सौ सौ हाथ नीच दबतो जावं हो । ठाकरसा सोचण लागग्या—आपरै बिसै म, ठुकराणीसा रै बिस म अर धनखी र बिस मे । बो त्रिचक्र घूमण लागग्यो जोर जोर सू । घूमतं-घूमत इण चक्र मे दो ई रंयग्या । ठाकरसा हारन देखै हा—ठुकराणी धनखी, धनखी ठुकराणी । अेक रा जातिगत अहकार अर अेक री औरत गत विशेषता, जिकी आपरी जरूरत न लेयर जीवणा चाव ही ठरक सू । ठाकरसा आप री सगळो रूप भुलायर अेक मिनख ज्यू दो घडी जीवणो चावै । अर ओ जीवण उणन जठ आपरा सगळो गरब गळाय न अेक हुय जाव अर महुतो भूख सघरीर खडी हुय जाव । ठाकरो न धनखी जीतती लागी अर ठुकराणीसा आपरै अह र सागै हारता लाग्या ।

चढत तावडै साग ठाकरसा रै लिलाड माथ पसीना रा बाळा छूटग्या । गमछ सू लिलाड रगड रगडर पूछ्या जाण आपरी सगळी उदासी न पूछ लेवणी चाव हा । पण उदासी लिलाड माथ कोनी ही । बा दूर कठ ई मढी बैठी आपरा अमाण सनाण मेल ही । ठाकरसा मायली मार मू पीटीज्योडा हा । आस्या उणा री खुली ही, पण सामनै दीस की कोनी हो ।

'आप नै आरोगण बासत अडीक है ।'

'जा, पाणी ला ।'

पाणी आया पछै ठाकरसा आपरो मूढो रगड रगडर धोयो अर कुरळा करयो, जाण उदासी नै धोयर पाणी सागै बेवाय दी हुव । अब उण माथ धूळ है । टसरियो खालर पाणी सागै तुस लो । चिलम भरण रो हुकम दियो । दा तीन फूका खाची जणै मूढ माथै माडाणी मुसकान लावणी ताव आयी अर आरोगण सारू चाल पडया ।

•

कूवै कनै

गाव छोटो हो। थोडी सी वस्ती ही। सीयाळै मे सगळा गावआळा मिलर अेक बार ई कूवो चलावता। वखत बेवखत डर रवतो। इण वासत सीयाळ मे दो तीन घडी कूवो ववतो। सगळी ई लुगाया पाणी लेवण सारू कूव जावती। जिक घरां मे घणो पाणी लागतो बारा मोटियार ढांचा अर वेळा सू पाणी लावता। फेर भी कोठा सिड्या ताई पाणी सू छल्यो रवतो। जे किणी नै जरूरत पड तो दिन ढळ्या ताई पाणी लाय सक हो। पण ओ आम रिवाज कोनी हो। सगळा पाणी लावण रो काम पोहर दिन चढ्या ई पूरो कर नेवता। सासरा सारू खेळी म रात दिन पाणी रवतो। गाव रा सासर ई पीवता रवता अर बटाऊ लोगा र धन न ई पाणी री कोई तकलीफ को रवती नी। राज रा राईका ई ऊठा न अठ ही पाणी पावता। घणी बार तो ब सात्यू सिड्या ई अठ पाणी पावण सारू लावता। कदई कदई भूल्या भटक्या वै आग लार आय जावता। य आवता जण गाव रा लोग आप रो काम बन्द कर देवता।

कूवो गाव र बार हो। पाणी ऊंडो हो। साठ सितर पुरस नीच। दो घडोई अर कोठो हो। पडघा कन छोटी जात आळा खातर घडोई ही। कोठ र सार सार खेळी ही। कूवो च्यारा कानी ताकळा लगायर पको बणायोडो हो। कूव र सार पीपळ अर नीम हो। इणा र कन मोटा मोटा भाठा राख्योडा हा, जिका माथ गाव रा मोट्यार अर टाबर सिनान करया करता। कनै ई अेक दा पडी रो सातरो खेजडो हो। लुगाया अठ तेल ढाळण न आवती। नानडियां रा झड्ला अठ ई उतारती। निजर रा उतारा अठ ई

करती। इण वासतै ठोड ठोड उतारा रा ठीकरा पड्या हा। छोरी छोरा इणा नैं कान्करा मार मार नैं फोड़ता रवता। उतार री धान अर मरूजी र बाक्ळा रो धान विखारण सूं बठ कीडी नगरो ई हुग्यो हो। खेजड़ै माथ लाल कपड़ां री मैंरूजी री धजा पून रैं साग फराव ही। अळग सूं ई उण न देख्या लोगा न गाव री सैनाण निजर आ जावती।

सूरज माथ सूं ढळ चूक्यो हो। आज ठंड की कम ही। पणिहारया पाणी ले जावैं ही। ढाब वासतैं ऊंठ, अर बैळा वासत बळधा गाडया कूव कन खड़ी ही। आदमी मिनखा री घड़ोई सूं दूघड़िया भर भर नैं ढाचा माथ धर हा। लुगाया सिर माथैं घडा ऊंच ऊंचर ले जाव ही। खेळया पाणी सूं काठी भरयोड़ी ही। कूवो चाल्या न थोडी ई ताळ हुयी ही। सासर पाणी पीवैं हा। राण री काळी मवर बूची साढ पाणी न चबा चबायर पीव ही अर कणंइ थू थू करन पाछा विखार देव ही। साढ काळी तेल सी ही अर चीकणी इसी क माछर वैठ तो ई तिसळ जाव। पेट चिप्योड़ो सो, थूई डूगरी सी खडी छोटी पोडी री। अेंडर डबी मो हो। लाबी सारस सी नाड ही। पगा री नळया सूतवी ही। चामरो तीखो हो। बसाख मे काढयोडा पळसी रा माडणा केस वधणै सूं मिटण लागग्या हा पण आरा सनाण, हाल साई गौर सूं देख्या निजर आव हा। मोरी सान री नाड माथ पडी ही। राणो अळगो ऊभो-ऊभो आस्या करै हो। साढ न इया करती देखी जण पूछयो—

'पाणी किया चबाव है ?'

'थोडो चिकणास दियोडो है।'

'किता दात आयग्या ?'

'तीन।

इतै न गुलो काढतो ऊठ पाणी पीवण सारू आवतो धिडक्तो साढ न मूधर और जोर स गुला काढण लागग्यो। राण दाकल करन छेड करण री कोसीस करी। साढ ई लारली टाग्या और घोडी कर दी। थुयकारा नाखतो भगवानो बोल्यो—'म्हारै टोडिय कनै छोड देयी।

आगस साल साई बात । जित इ रो छोटो भाई टोडियो त्यार हुय जाव । वो ई इण सू मिलतो जुलतो है । दो साल छोटो है ।' राणो बोल्या— 'बोहळो मोडो हुयग्यो ।' आ कयर मोरी झासर साड न लेयन घर कानी चाल पडयो ।

कुव र सारे सार कादो घणा हो । जागा जागा पोठा, मीगणा मीगण्या बिखरयोडी ही । सड मडर गध रो भभको ऊचो उठे हो । गाव मे बहता ई अकूरडी ही । अकूरडी रो भभको कोभी तर नाक मारतो हो । राणो होळ होळ घरं जाव हो । मारग मे सासरा अर मानख रं पगा सू रजी उड ही, जिण सू कणई कणई खासी ई हुय जावतो । मारग मे लोग मिलता जण 'ज रघनाथजी री' अर 'ज माताजी री' कर हा । पण राणो तो आपरी धुन म सीधो चालतो जाव हा । घर पूगर साड न ठाण र बाधर फूस रळकाय दियो । गायां पाणी पीर आयगी ही जिक्या न बाध दी । पछ चिलम भरन पीवण लागग्यो । ऊखळी मे खीचडो छोटीजण रा धमीड अबै ठरग्या हा ।

गाव रो जीवण अेक सीधो मारग हो जठ अधविस्वास, गैरो विस्वास लागा मे भरयो हो । अेक दूज रो मान राखणो, आप रो पलो फरज समभता हा । मोटयार लुगाई दोन मिलकर घर रो अर खेत रो काम करता । ऊनाळ मे लुगाया चरखो कातती अर मोटियार ढेरिया कातता रवता । इण तर दोनू मिलर आप री घर गिरस्थी चलावता । समाज री परपरा रूढिया सू भरी ही । ब्राह्मण अर राजपता रो मान हो । ब्राह्मणा सू धरम र नाव सू डरता अर राजपूता न डरता धोकता । सो की मिलार अेक ढर रो जीवण हो । बिसेस हालन मे कन्ई कदई जीवण मे सकट आ जावतो जण गाव रा बूढा बडेरा भेळा हुय न समस्या रो भुक भुकायर खारो मीठा समाधान काढ लवता । जीवण फेर सीधो चालण लाग जावतो । छूवाछूत रो घणो विचार हो । पण रावळ मे बळाई सगळो ई काम करता हा । ठाकरा न विसेस मान देयर इण बात मे छूट देय राखी ही । गोल्या वडेरण्या ठाकरा र घर रो काम भी करती । पूछ मुजब घर में ऊचो-नीचो काम करणो पडतो । जिकी गोल्या

ठाकरां री निजर मे चढ जावती उण रो रुतबो घणो बध जावतो। रूप र लारै पासवान रो पद भी उणा नै मिल जावतो। पण उणां री संतान गोल्या सू ऊंची अर भाईया सू नीची ही रवती । इण कारण पासवाना थोडी समझदार हुवती अर बस चालता थका संतान पदा हुवण रो काम ई को राखती नी। भूल चूक री बात न्यारी हुवती। ठाकर गोल्या रा ब्यांव आपर गोला सागै कर देवता पण उणा रो उपभोग ठाकर ई करता। धनकी इणीज तर भटियाणी सा र सागे ब्यांव मे आयी ही। बखत रै जोर सू उणरो रूप चोखो निखरयो। मोटयार कवारो मर सक पण छोरी गुगी गैली किसी भी हुवो, कदेई कवारी को मर नी। उण रो ब्याव छोरै साग नी कियो जाय सक तो खाड सागै ई करन कवारपणो उतार देव। समभदार आदमी हुवा रो रूख पवाणर आग रो रस्तो काढ लेव। इसो ई रस्तो धनकी र मामल मे कढयो हो।

दिन ढळण लागग्या हो। राण घर म आयर गाया न दूयी। बाछडा न छान हेठ बांध्या। गाया न ओटो देयर खेजड कन बाध दी। साढ माथ भूल नाख दी जिण सू रात न धवर पड तो सी नी लाग।

राणो जीम जूठर चिलम पीर ठाकरा सू मिलण न चाल्यो। ठाकरसा साळ मे बैठा होको गुडगुडाव हा राणो कन जायर 'ज माताजी री' करन बैठग्यो। ठाकरसा रो चरो चिता सू मुरझायोडो हो। मौको इसो हो जिको की करयो भी कोनी जा सक हो। ठाकरा कयो—'तू तो जा। अर म्हारा आदमी काळी डूगरी कन पूग जासी। पछ तू खरबूजीकोट चल्यो जाय। म्हारो दूसरो सनसो नहो मिल जठै ताई बठै ही रयी नी ता यार माथ कोई आफत आय जावला।

राणो बोल्यो—'ठीक है सा। हू काल तडक ई चल्यो जासू।'

धूवो काढता ठाकर बोल्या—'आग गोपाळ यार सू मिलतो रसी। बो थारै कय मुजब काम कर लेसी। सगळी बात ठाकर सुरजनसिंघ न मालम तो

पड ई जासी । अ कठई ऊधा अरथ नी ल बठ, अर थार म्हार दोनां माथ आफत नी नास देव । इण वासत काम बडो ही सोच-समझर होसियारी सू करी अर मारग म पकडीजण रो अदेसो हुव तो बखत मुजब काम कर लेमी । आग हुसी जिकी देखी जासी ।' राणो मिलर पाछो घर आयो ।

होळ होळ ठड री चादर लाबी हुवण लागगी ही । गाव ठड सू डरन गूदडा म बडण लागग्या हा । धूवें रो परकोटो गांव न च्यारूमेर सू घेरण लागग्यो हो । धूई कन री हुताई बेगी ई खिडगी ही । काळी रात ठड र कारण और ई भयावणी लाग ही । राणो झाटो डक र झूपड म बड न सोयग्यो ।

विक्रमपुर रा राजाजी प्रजा रो ध्यान बटावण सारू भटनेर माथ आक्रमण कर दियो हो। इण आक्रमण मू राजाजी न दोलडो फायदो हुयो। अेक तो राजाजी रा जिता ई विरोधी हा उणा न विरोध करण रो खुलो मौको कोनी मिल्यो। दूसरा, जनता रो ध्यान भी राजाजी सू हटर भटनेर कानी चल्यो गयो। छोटा मोटा जिक ई राजाजी र इण व्यवहार सू नाराज हुयर आप आपरे ठिकाण गया परा हा उणा माथ दबाब नाखण रो मौको मिलग्यो अर उणा नै विरोधी घोषित करन उणा माथ धावो करण रो बहानो मिलग्यो। इता फायदा हुवण र साग साग राज रो नुकसाण भी घणा ई हुयग्यो। जागा-जागा छोटा-मोटा उपद्रव हुवण लागग्या। राज री व्यवस्था विगडण लागगी ही। राज रो खजानो खाली हुवण लागग्यो हो। घाटै र कारण राजाजी चेता चूक हुवण लागग्या हा। रोज रो वधतो खरच अर ऊपर सू पडतो काळ राज री जडा न हूलावण लागग्यो हो। सेना री भावना चोखी कोनी ही। आ सगळी बाता सू परेशान हुयन राजाजी अेक नूवो निणय लियो। राज री सेना री टुकडी वणावण री घोषणा करी। उण सेना मायँ राज रो अधिकार राख्यो—सेना राजा र प्रति पूरी वफादार रसी। इण सेना न राजाजी खजान सू मीनू देवण रो नेम बणायो। इण सूझ सू राजाजी री अेक सेना बणण लागगी। ठिकाणदारा री सेना टूटण लागगी, कारण ठिकाणदार सेना न मीनू तो देवता ही कोनी। माफी म दियोडी जमीन भी स्यायी रवण रो कोई भरोसो कोनी हो। इण र- सागै-साग वेगार और लेवता रवता। वगत-वेवगत थोडी बहोत नाराजकी हुवण सू देस निकाळो और दे देवता। आ सगळी बाता सू ठाकरा री सेना उणा सू मन मन मे नाराज ई रवती।

आ सगळा कारणा सू ठाकरा री सेना टूटण लागगी अर राज री सेना री भरती बधण लागगी। मीनू मिलण रो लालच अर राज री सेना रो रुतबो—दोलहो आकषण लोगा न आपरै कानी आकर्षित कर हो।

राज रो खरचो दिन दूणो अर रात चागणो बधता जाव हो। राजाजी आ सगळी बाता न ध्यान मे राखर नूवा नूवा कर लगावणा सरु कर दिया जिया धूवा कर, सासर कर ब्यांव कर वगर। आ सगळी बाता सू जनता भौर परेशान हुयगी अर विक्रमपुर खाली हुवण लागग्यो। ठिकाणदारां राजाजी री इण गळती रो पूरो फायदो उठावणो सरू कर दियो, रयत न भडकावणो सरू कर दियो। ठिकाणदार स्वतत्र हुवण लागग्या हा। अेक तो काळ अर ऊपर सू इधक मासो। रयत री इजत बचणी ही मुसक्ल ही। इण र साग ई पिंडारिया न मराठा लालच देयर सेखावाटी कानी भेज दिया। राजाजी परेसान हुयन मराठा न भूठी हुडया दी अर पिंडारिया न भी भूठा लालच देयन पाछा भेज दिया। पण हुडया रो भुगताण नी हुवण र कारण राज री साख जाव ही। पण उपाय काई करयो जाव। हार नै मराठा पिंडारिया न पाछा भेजण रो निरण लियो।

राजाजी इनाम वाही म पटा देवणा बद कर दिया। रेख चाकरी करडाई सू उगावणी सरू कर दी। इण सू राज री हालत और बिगडण लागगी। व्यवस्था र नाव रो की कोनी रया। जागा-जागा उपद्रव हुवण लागग्या। कसबा खाली हुवण लागग्या। चोमासो जेठ सो निकळग्यो। आभो आख सो धोळो ई रयग्यो। सागीडी लूवा बाज ही। आखी रात अर आखा दिन ढील बळ बोकरतो, खीरा सो तपतो रवतो। आख्या रो पाणी सूकतो जावै हो। राजा रा कारिदा लूवा सा ताता रवता। ओ पतो लागणो ई मुसक्ल हो क कुण राज रो कारिदो है अर कुण लुटेरो। दोना रो अेक सो ई व्यवहार हो—जनता न लूटणो। धूत लोग मौक रो फायदो उठावण मे कद चूक हा। आ राज रा कारिदा रै साग मिलर लूट मचावणी सरू कर दी।

सिम्या पड़ता ई बजार बंद हुय जावतो। दुकाना रा फाटक दिन मे आधा ढकयोड़ा रैवता अर आधा खुला। उधार देवणो अेकदम बंद हुयग्यो हो। लोगां री अेक दूसरे माथै विश्वास कोनी रयो। खरीददार अर लुटेरा रो भेद निकाळणो ई मुसकल हो। राज री आय अेकदम ठप हुवण लागगी। विणज चौपट हुवण लागग्यो हो। घरा रा बारणा ढक्या ई रवता। जठै ताई पूरो विसवास नीं हुय जावतो रात बिरात बारणो ही नीं खुलतो।

राजरी सेना जागा-जागा ठाबरां र बलवा न दबावती फिरती। राज री सेना र आवण सू रैत चाकरी देवण रा कोल करता अर उण र जावता ई पाछा मुकर जावता। इण हालत मे लुटेरा री बणगी। विणज रा मारग लुटेरा सू भरग्या हा। धोळै-दोफार राज मारग मे धाड़ेती धाड़ो नाखता रवता। विणजारा आप रै साग लठत लियां चालता। बाळदिया रूखाला साग राखता। सगळा सराजाम साथै राखण पर भी धाड़ेती अर लटरा सू बचणो ओखो हो।

विक्रमपुर रो बजार सूनी सासा भरै हो। रात दिन चालता चरखा चुप हुयग्या हा। तकल्या-ढेरिया सूना पड़या हा। खड्डी चुप ही। रगरेजा री आगळयां जिकी रात दिन रगा मे ई रैवती, सुनी हुवण लागगी ही। लूगडी छापणआळा ठेपा धूड़ सू भरीज हा। छीट छापणआळा पाटा सूना पड़या हा। बधेजण री आंगळया रो रग फीको हुवण लागग्यो हो। आख दिन हालता हाड अबै उबास्या सू टूट हा। बगत साव माड़ो हो। कतारिया रा बळध बठा ई बठा रवता हा। धान-तोलती ताकड़ी भेळी हुयोड़ी पड़ी ही। नगदावण माथ खरीददार कोनी हो। डूबत खात रा ग्राहक घणा ई हा पण लूटायर दुकान कोनी चलावीज। कोई अेक दिन रो काम थोड़ो ई हो। रोजगार मूळधन सू पेट भरण रो नाव कोनी। हाथ र सार सू मूळ र आधर माथै टाबरा नै पाळणो अर मूळ न सुरक्षित राखणो पड है। काळी पीळी चालती आध्या सू शहर मे धूड़ा रा धोरा तो बधता जाव हा, अर भूख सू लोग मरता जावै हा। विक्रमपुर उजड़त शहरा री गिणती मैं आयो जाव हो।

माळ्ळा

राजाजी कान रा काचा हा । व कान भरोज्या पछ साच झूठ रो निणय ई कोनी कर सकता हा । घणकरा ताजिमी सिरदार ई धरमचद बंद रा विरोधी हा । कारण बो ना तो खावतो अर नां खावण देवतो । खजान री हालत बतावता अेक दिन धाकळसिह सिरकाय दी क धरमचद तो राज री रकम खाव है । राजाजी कन दो तीन बार इसी बात हुयी जणं उणा न पक्को विसवास हुयग्यो अर उणा उण न भटनेर सू जरूरी काम रो नांव लेयन बुलायनं मारग मे ही जहर देयर मरवाय नाख्यो ।

•

विक्रमपुर रो खाको

राणो विक्रमपुर पूग्यो जण घडी दो दिन चढ्यो हो । डांफर चाल रैयी ही । ठंड की जमाव माथ ही । पूरी दरवाज र माय वडता ई मतरां री गवाडी ही । मल पाणी रो नाळो मदो मदो बैव हा । नाळ र सार सार पूथनी हलावता गळ-सूवर मागता फिर हा । नागा छोरी छारा बारै सार-लारै नाठै हा । आग चालर लोहारा रा गाडा लाग्योडा हा । वारी धाकणी होळ होळै चाल ही । टाबर सुसिया रोटी बणायर खाव हा । छेणी माथै धार कर हा । छणा र आगै खाली चौक पड हो । हुजार अेक हाथ चाल्या पछ नटण्यां रा घरिया हा । उणा रा केई बारणा बद हा अर केई खुला हा, जाण रात भर री रगत न दिनूगै सुस्ती साग बिखेर हा । इणां र पसवाड भिस्ती रैवता हा जिका पाणी री मसका भर भरन लोगां रै घरां मे पाणी पुगावै हा । इणा र पाख तेल्या री घाण्यां चालती ही । बजार मे मदीवाडो हुवण सू इणा री घाण्या दिन चढ्या पछ चाळणी सरू हुवती । घाणी रा बळध हारग्या हा । तेल्या र सार कुम्भारा री वाकां ही । कुम्भारां र घरा र सार नाया ही जिका माय सू धूवो निकळ हो । कुम्भारा र पसवाड चूनगरा री बसती ही । सुथारा री बसती आ दोना बसत्या सू आग ही । बसोल री खट खट अळग ताई सुणीजै ही । राणो इणा र सार हुवतो थको गणपजी री बगेची पूग्यो । दरवाजो खुलो हो । बगेची र माय वडता ई डाव हाथ कानी कुड हो । कुड र सार काकर जमायर पायतण बणायोडो हो । बिरखा म पायतण र पाणी सू कुड भरीजतो हा । जीवण हाथ कानी खुली बाखळ ही । बाखळ मे जाळ अर नीम रा रूख हा । सामन गणेशजी रो मिंदर हो ।

राणो साढ न जकायर उतरयो। जीण उणारन अेक बडल राखी अर जाळ नीच बण्योडी ठाण माय बाधी। बोर मांय सू पारो सेयर साढ नै नीरी। पुजारीजी सू राजीखुसी रा समाचार पूछ्यां पछ राण सिनान करनै गणेशजी रा दरसण करया। सांढ न पाणी पायर पाछो बाय नै लक्ष्मीनाथजी रा दरसण करणन निकळयो।

गणेश दरवाज र माय बडताई डात्र हाथ कानी कूवो हो। कूवो चाल हो। सासर खेळपा म पाणी पीवै हा। मोटियार दूघडिया भरनै पाणी ले जाव हा। पणघट लुगाया सू भरयोडो हो। च्यारूमेर कादो हो। दूर दूर ताई हाको सुणीज हो। राणो लायो लायो चाल्या जावै हो। ब्राह्मणा री बसती पार करन ओ बजार मे निकळयो। बजार खुलो हो। मोठ, बाजरी, गवार अर मूगां री ढिगळया लाग्योडी ही। कबूतर, चिडया अर कमेडया उड उडर चुग ही। धान रो दुकाना रै सारै पसारथा री दुकाना ही। बठ थोडी भीड ही। गुड माय माख्या भणभणावै ही। गरद उड उडर सगळ बिखर ही। मोळी रा गीडा लटक्योडा हा। वारो रग फीको पडतो जावै हो। खरादी हाथीदात रा बिलिया उतारै हा। लखारा बठा बैठा चूडा बणाव हा। घाटी री ढळान सरू हुवता ई रगरेजा री दुकाना ही। रगरेजण्या बठी बठी हताया ई करती ही अर साग साग बदेज कर ही। तगाव रो काम कोनी हो। पाटिया माथ लाग्योडी गीदधा चितकबरी हुयोडी ही। ठपा पडधा पडधा सूकै हा।

बिसायती बठा बठा माख्या उडाव हा। मेट, चोटी, मैण, चालणी जिसी घणकरीक चीजा खरीददारा न अडीक ही। रजी सू मैंण रा रग बदळतो जावै हो। मण री गध उड उडर चर री मी " । गेल मे बवतो नालो आ सगळा सू ऊधो भभको " दरसण कर कर न पाछा आव हा केई जाव भणदेखी करता जाव हो। रेल साव मिंदर में आचमण करयो। भगवान री किरपा मागी।

मिंदर सू निकळर शहर रा हाल चाल मालम करण न राणो सेठ-साहूकारां रै घरा कानी मिलण भिटण नै चाल्यो। दो तीन जागां मिल्या पछ ठा पड़ी क भटनेर रो मोरचो हाल ताई चालू है। राज र बिगडत धाण रो पतो लाग्यो। नामी आदमी खतरं मे दीस्या। बदा री पिरोळ मे गयो। बोहळी वाता सुणी। काची मौत रो समाचार सुण्यो। राज र काम रो लोगा नै की पतो कोनी घालै हो क कण काई हुय जासी। इण कारण सगळा ई दुखी हा। सगळा अधारै मे ढोटा मारै हा। कवण सुणण री बात कोनी ही। सगळा सू बडी चुप ही। मोजीज आदम्यां न डर हो। वलत जाबर ई माडो हो। राज माथ किणी रो बिसवास कोनी हो। सगळा रा चित उठपोडा हा। राण सगळी बात सोच न समझ्यो क इण बेळा कोई किणी रो धणी धोरी कोनी है। कर गुजर जिको ई आप रो है। धणी बोहळा ई है, अेक ई कोनी। इण वासतै कोई किणी न पूछ कोनी। सगळी बात समझर राणो पाछो बगेची आयो।

●

राणो सांढ न जकायर उतरयो। जीण उणारन अेक कड़कै राली अर जाळ नीच बध्योडी ठाण माय बांधी। बोर मांय सू पारो लेयर सांढ न नीरी। पुजारीजी सू राजीखुसी रा समाचार पूछ्या पछ राण सिनान करन गणेशजी रा दरसण करया। सांढ न पाणी पायर पाछी बांध न लखमीनाथजी रा दरसण करणन निकळयो।

गणेश दरवाज रै मांय बड़ताई डाव हाथ कानी कुवो हो। कूवो चाल हो। सांसर खेळया म पाणी पीव हा। मोटियार दूपड़िया भरन पाणी ले जावै हा। पणघट लुगायां सू भरयोड़ो हो। च्यारूमेर कादो हो। दूर-दूर ताई हाको सुणीजै हो। राणो रायो-रायो चाल्या जावै हो। ब्राह्मणां री बसती पार करन बो बजार में निकळयो। बजार खुलो हो। मोठ, बाजरी, गवार अर मूगां री ढिगळ्यां लाग्योडी ही। कबूतर चिड़्या अर कमेडया उड उडर चुग ही। धान री दुकानां र सार पसारयां री दुकाना ही। बठ थोडी भीड हो। गुड माथ माख्यां भणभणावै ही। गरद उड उडर सगळ बिखर ही। मोळी रा गोंडा लटक्योडा हा। बारो रग फीको पड़तो जाव हो। खरादी हाथीदांत रा बिलिया उतारै हा। लखारा बठा बैठा चूडा बणाव हा। घाटी री ढळान सरू हुवता ई रंगरेजा री दुकाना ही। रंगरेजण्या बठी-बठी हतायां ई करती ही अर साग-सागै बंदेज कर ही। तगाद रो काम कोनी हो। पाटियां माथै लाग्योडी गीदया चितकबरी हुयोडी ही। ठपा पड़्या पड़्या सूकै हा।

बिसायती बठा बठा माख्या उडाव हा। मेट, चोटी, मण, चालणी जिसी धणकरीक चीजा खरीददारा न अडीक ही। रजो सू मण रो रग बदळतो जाव हो। मण री गध उड उडर घर री मीठी याद दिराव ही। गेलै मे वैवतो नालो आ सगळा सू ऊंचो भभको मार हो। मोटियोर-लुगायां दरसण कर कर न पाछा आवै हा, केई जाव हा। राणो सगळा री देखी मणदेखी करतो जाव हो। रेल सागै मिंदर में गयो, तुळछी चरणामत लेयर आचमण करयो। भगवान री किरपा मागी।

मिंदर सू निकळर शहर रा हाल चाल मालम करण न राणो सेठ-साहूकारा रै घरा कानी मिलण भिटण न चाल्यो। दो तीन जागा मिल्या पछ ठा पडी क भटनेर रो मोरचो हाल ताई चालू है। राज र बिगडतै धाण रो पतो लाग्यो। नामी आदमी खतर मे दीख्या। बैंदा री पिरोळ मे गयो। बोहळी बाता सुणी। काची मौत रा समाचार सुण्यो। राज र काम रो लोगा नै की पतो कोनी चाल हो क क्यं काई हुय जासी। इण कारण सगळा ई दुखी हा। सगळा अधारै मे डोटा मार हा। कथण-सुणण री बात कोनी ही। सगळा सू बडी चुप ही। मोजीज आदम्या न डर हो। वखत जावय ई माडो हो। राज माय किणी रो विसवास कोनी हो। सगळा रा चित उठधोडा हा। राणै सगळी बात सोच न समझ्यो क इण वेळा कोई किणी रो धणी धोरी कोनी है। क्र गुजर जिको ई आप रो है। धणी बोहळा ई है, अेक ई कोनी। इण वासत कोई किणी नै पूछ कोनी। सगळी बात समझर राणो पाछो बगेची आयो।

●

षडयंत्र

दोफारा पछ राणो धनकी सू मिलण वासत सफील र धारै वारै चाल पड्यो। शहर रो कूड़ो जागा जागा पड्यो हो। लुगाया जगळ जावण सारू सफील रो सारो लेवती ही। ज्यू ज्यू राणो सफील छोडर आग वधतो गयो उणनै झाड़का भरयो मारग मिलतो गयो। मारग मे ठौड ठौड सुसिया रा बिल ई निजर आव हा। झाडक्या र सार-सार राग काढयोडा खाडा ई हा। ऊंदरा रा बिल ठेट ताई दीख हा। कठई कठई मरयोडा जानवरा रा हाडका पडया हा। गिरझडा मांस चूंट चूंटर खायग्या हा अर हाडका सू रात न लोगां मै जिन रो वैम हुवै हो। राणो उतावळा पग राखतो चाल हो। मारग मे दो अेक तळाया ई दीखी, जिकी सूकी सडाक पडी ही। पाळ माथ ऊग्योडा दरखता र नीच सासर वठा वठा जुगाळी कर हा।

राण न सुरजनसिंघजी र डेर कन पूगता पूगता घडी खड लागगी ही। अठै पूगर गमछै सू मूंढो पूछयो। पोळ मे वडताई देख्यो कै चूतरी माथ माचो ढाळर पोळियो वठो वठो तावडो लेव हो। अर चिमठी बजायर सुसती उडाव हो न सुगन मनावण रो जतन कर हो। पण तावड मे सुसती ओर गरी हुवती जावै ही। आख्यां म सुसती री झलक निजर आवण लागगी ही। राण न बडतो देख्यो तो मन मे गाळ काढी अर होटा सू मुळकतो थको बोल्यो—

'जै माताजी री। आवो, पधारो।

'ज माताजी री। तावडियो लेवो हो काई ?

हा। माचो खाली करतो बोल्यो— आओ बठो।' आग कयो— 'हाल ताई पाछा गांव गया कोनी काई ?

'कास ताई जासू ।' माच माथ बठतो राणो बोल्यो—'मिलतो जाऊं अर समाचार ई लेवता जाऊ, आ सोचर आपन तकलीफ देवण नै आयग्यो ।'

'म्हान काई तकलीफ है ? आपनै जरूर आवण जावण री तकलीफ हुयी हुसी ।'

'म्हानै कांय री तकलीफ । अेक पैंडो बेसी करग्यो सही जिकै सू आप लोगा सू मिलणो ई हुय जासी ।

'हा, आ बात तो साची है ।' चर माथ जीवण र आखरी सास री आभास लावतो बोल्यो—'आपरो आवणा तो कदई-कदई ही हुव अर म्हे अबै किसा सदाई बठपा रैंमा ।'

'इसी काई बात है ?' धीरज बधावतो राणो बोल्यो— हाल किसा पाच बीसी बरसा रा हुमग्या ?'

'बरस तो हाल ताई' सोचतो सोचतो पोळियो बोल्यो—'तीन बीसी बन ई पूग्या है, पण दम सू डील ढीला हुयग्यो ।' पछ जोस लायर बोल्यो— 'नी तो हू ई आज मोरच माथ हुवतो ।'

मोरच रा काई हाल है ?' बात मे रस घोळतो राणो बोल्यो ।

'हाल तो माडा ई है ।' पोळिय कयो—'बारया मे ई बगत गुजार दियो । चिलम-पाणी रा पूछयो ही कोनी ।' अर बो चिलम भरण न उठयो ।

थोडी ताळ दोनू चिलम पीवता रया । 'अब धनकी नै हेलो पाड दो ।' राण कयो ।

'थे ही नीच खडा हुयर हेलो पाड दिया । आप रो नाव सुणता ई आ जासी । मनै क्यू फोडा घालो हो ?' पोळियो बोल्यो ।'

कोई बात नीं ।' राणो उठर जावतो बोल्यो ।

राण जनानी डोढी कन आयर दो तीन पेडया ऊचो चढर हेलो पाडयो । आवण सारू उथळो आयो । चौक मे सगळी लुगाया बैठी ही । हेलो

सुणता ई धनकी मिलण सारू नीच आवण लागगी। पेडया सू धनको खायी खायी उतर ही, पण उण खथावळ मे अेक ठराव हो। मैंदी रच्योडो हाथ जणे बा भीत र लगावती उतरण लागी जण राणै न द्या लाग्यो जाण आ भीत ई धनकी र सागै नीच उतर है। चाल मे मधराई ही। आख्या र मवारा माथ कामदेव रो धनुप तण्योडो हो। कोया री चाल कामण कर हीं। पेडया सू नीच उतरती री कमर झालो मारती सी दीख ही। पेट ऊपर दूधडिया छळकता हा। राणो फागण रो रसिया सो देखतो रया।

धनकी री उखडती सास राण र लागी जणै उणर होस बापरयो। थूक गिटतो राणो बोल्यो— काल हू जासू। काई समाचार कॅवणा है ?'

'राजी खुसी रो कैय दिया।' काळै कोया सू की पूछती सी बोली।

राणो होळ होळ सक बुदबुदायो। सगळी बात बतायर खखारो करन जोर सू बोल्यो—'तो हू जावू। राजी खुसी रा कय देसू।

राणो मुडर डोढी र बारण सू बार आयो अर चूतरी माथ जायर गट माय सू तमाखू काढ न चिलम भरी। साफी निचोयर लपेटी अर मीगणी फोडर तमाखू माथ राख्यो। हळकी सीक फूक खाचर पछ जोर सू खाची। चिलम माथ अेकर तो जोर री लौ उठी अर पाछी मिटगी। धूवो छोडतो पोळिय कन आयो अर चिलम देवतो बोल्यो—लो, ये ई फूक खाच लो।'

'ये ई पीवो। मनै धासी आ जासी।' पोळियै कयो।

राण दो तीन कस सागोपाग खाच्या। तमाखू बळर राख हुयगी ही। चिलम झाडतो राणो बोल्यो—'तमाखू तो सातरी बणायी है।'

'हा हू आप ई झाड कूटर बणावू हू।' राजी हुवतो पोळियो बोल्यो।

थोडी ताळ हताई करन राणो पाछो टुरयो। उण रा पग तो मारग माथ चाल हा अर माथो योजनावा माथ विचार कर हो। दिन आथण लागग्यो हो। ठड बधण लागगी ही।

•

निकळग्या। आगे फेर सीधो राज मारग छोडर धाडवी मारग स लियो
जिको छोटो अर सीधो पडतो हो। पण इण मारग म खतरो ई घणो रवतो।
रात दिन मौत र मूंड रवण आळां न अ खतरा कोई खतरा को लगावता नी।

दोपारा पछ ई जोरां चढ़ हो तो पछ ई मोळो पड हो। पण ज्यूं-ज्यूं
पिछमपुर सार रवण लागग्या, बादळवाई ई सार रवण लागगी। धून र
साग दौडता बाग्ळ आभ न काळो करता जाव हा। आसमानी आभ म
आठम रो अधगिघलो चांद डांफर र साग-साग मुळकण लागग्यो हो। तारा
छिपता जाय हा पण चानण र साग ठड वधती जाव ही। ठडी टार हुयोडी
आगळयां माय म मोरी पड़ पड़ हुव ही। पागडा मे पग अकडीजण लागग्या
हा। पेगा गू गूघर बणायोडी मोरी भीजी तो कोनी ही पण सीली हुयण सूं
चिमटी बरफ बणती जाव ही। नाक सूं सास लेवणा मुसकल हुयग्यो हो।
दोनूं हाथ अर पग बराबर हाल्ता जावं हा अर थोडी थोडी ताळ पछ
अेडी लगावता जाव हा। साढ लार आग नम हुलावती सीधी ढाण म
घालती जाव ही आण लार वाजी पग दबावता आव है। डील ठड सूं अकडर
जरू हुयग्या हो। मवार बोलाराला बठा हा, आण उणा रो अेक ई काम हा
आग चालणो। साढ धर कूचा धर म जला चालती ई जाव ही।

रात वधती जाव ही अर मारग कटतो जाव हो। सामन लाबी चौडी
फैल्योडी निदरोही चानणी रात म सिनान करती सी लाग ही। साढ री मोरी
ज्यूं ज्यूं ढीली पड ही, साग हवा हुवती जाय ही। गाव गूमडा सा उभर हा अर
मिट हा। शुक्र पीळो पडण लागग्यो हो। त्रिरत्या छिपगी ही। सप्तर्षि ध्रुवजी
रा चकर लगावता लगावता थकग्या ह। हिरण्या दौडती दौडती थसक पडगी
ही। चाद आथूण न जावतो जावतो धोळो पडण लागग्यो हो। बीगावाटी
री धरती आयगी ही। खजडा दूर दूर ताई घूमता दीख हा। कठई कठई थोर
चावळिया सुगन मनाव हा। गांव र गोरवै पीपळ निजर आव हा। अगूण
काली आभो फाटण लागग्यो हो। जावती रात री छिया धोळी पडती जाव
ही। पून री ठड मे अेक नूई चेतना रो भान हुवण लागग्यो हो। काळजो चीरती
आगी रात री सफर सूं डाफर थकर आभ री जडया म छिपण लागगी ही।

अभिसार करतो रात थकर सोवण लागगी ही। आभ री जडया म फूटती लाली अेक नूवो उत्साह पदा कर ही। नूव उत्साह रै साग बेयी नूवा सवाल आग्या आगे आय हा। आघो भविष्य छाती माथ सांप सो लोटण मागग्यो हो। राणो गमछ सू मूडो पूछर जाण आपरी सगळी चिंतावा मिटा वणी चाव हो पण भविष्य री समस्यावा ओर घणी भारी हुय न चर माथ जमण लागगी ही। पावयोडे तूव-सो सूरज सामन दीखण लागग्यो हो। परभाती पून डांफर न थपकया देयर सुवाणती जाव ही।

धनकी नै उबास्या आवण लागगी ही। चुटकी देयर वा नींद री मुसती भगावणी चाव ही पण वा ओर गरी हुयन आवं। उबासी लावती धनकी बोला—'और कितोक अळगो चालणो है ?'

'अब डूगरी आयी ई समभो। नींद आव ता । किरची देवता बोल्या—'इणन मलाफ नीच दबाय ल। नींद उड जासी।

सूरज रै तावड मे डूगरी अळग सू ई चिलकती निजर आव ही। डडा थोर पून र सागै हालती, उणा रा स्वागत करती सी निजर आव ही। डगरी माथ वगली चांदी उय चमक ही। पून मू लाल धजा फरावती निजर आव ही। ठड हळरी हुवण लागगी ही। आगळया म जान आवण लागगी ही। मीली गुधी पसवाड हुवती जाव ही। साड नूव जोस सू और लाथी चालण लागगी ही। भाठा री पको मारग आयग्या हो। चेत चेत करन राणो सान गल री विकटता सू सावचेत कर हो। पण कणैई कणई साढ न ठोकर लाग ई जावती ही। डूगरी री गुफा बिल ज्यू साफ दीखण लागगी ही।

जडया मे पूग्यां पछ साढ जवायर उतरया। जीण उतारन लेजडी र सार राखी। साढ न बाधर दोनू गुफा कानी चाला पडया। जावण सू पली साढ रा दोनू कान उतार न रखी म घाल लिया अर रखो वाघ राख ली। ठावा ठावा पग रापता दोनू जणा गुफा कानी जाव हा। गुफा री टाडी आटी टटी अर ऊची नीची हुवण सू चढण मे दारो ही। दोनू जणा बरावर चढता ई जाय हा।

•

वाडी कनै

ि्न घडी अेक चढग्या। बाबाजी धूणी कन बठा हा। धूवो होळ होळ धूणी माय सू उठ हो। मोमणा छाणा अर डडा थोर रा टुकडा नाखर बाबाजी बासती जगावण री कोसीस कर हा। चीपियो धूणी म खडो कर राख्यो हो। तूबी कन ई पडी ही अर सार ई चिलम आडी मेल्योडी ही। बाबाजी अवार-अवार ई बगली ढकन नीच आयर उठया हा। धूणी चितायर दो बाटया बणावण रो विचार कर हा। इत न पैडा माय सू ऊचो उठतो साफो देखर सोचण लाग्या क कुण हुसी। होळ होळ राण रो चरो साफ निजर आयग्यो। चरो पचाणर इचरज करयो क साग आ कुण हुसी। ...सी ठड मे अठ किया आया?

पाय लागू बाबाजी!' राणा बाबाजी न आमण माथ बठा देखर बोल्यो।

खुस रवो। आज कठीन सू?

'विक्रमपुर कानी सू।'

आखी रात चालता आया हो काई?

'हा।

'साग कुण है? आवो, पली हाथ तपा लो।'

धनकी बाबाजी र पगा म नमस्कार करन धूणी कानी अपूठी बठगी। राणो हाथ तपावण लागग्या। बाबाजी बोल्या—हाथ तपा ल।' धनकी थाडी ताळ हाथ तपायर गुफा कानी सुसतावण सारू गयी परी। राण सगळी

बात बतायी अर सलावाटी कानी हुवण आळी नूई बातां री जाणकारी करी। सगळी बातां हुयां पछ राण मूड वन जायर कमडल र पाणी सू हाथ मूढो धोयर पाणी र घुटक साथै किरची लो। धनकी न ई हाथ मूढो धोवण रो कयर पाछो आयन बैठग्यो।

दोफार पछ राणो धनकी न लयर पाछो टुरग्यो। कोस आठ धोर वन राणो मारग छोडर ऊजड़ हुयग्यो। धनकी पूछयो— अठीन सिधारू चालो हो ?'

'आपां र रवण रा जठ बदोबस्त है वठ चालां हां। साढ थोड़ी ताळ ताई धोर री जड़ा म चालती रयी। धार र पसवाड़ अेक हरयो झुरमुट दीस्यो। साढ सीधी वठीन चालती रयी। सिझ्या पड़ण म आधी पोहर बाकी ही जित तो राणो झुरमुट कन जाय पूग्यो। बाड़ी माय मूळा, कांदा, गाजर सूआ पालक अर पोदीनै री गांठड़यां पड़ी ही। जावण री त्यारी ही। सवार न देखता ई बाड़ी मांय सू माळी बार आयो अर पचाणर बोल्यो— आवो राणा ! ▌तो जावण रो त्यारी म ई हो।

साढ जकायर दोनू जणा उतरया। माळी राण न बाड़ी म लजायर सगळी बात बता दी अर झूपड़ो दखायर रवण री जागा बता दी। चाव दिखायर ताजो पाणी पीवण री बात बता दी। बाड़ी च्यार पांच बीघा म ही। बाड़ी र च्यारूमेर बाड़ लगायर सासरा सू बचाव करयोड़ो हो। बाड़ी म बड़ता ई छोटी छोटी क्यारयां बणायोड़ी ही। बाड़ी री ऊचाण माथ ढरी बणायर चाव लगायोड़ी ही। माटी री कोलयो बांध्योड़ी ही, अर अेक कानी दसक सेर रो भाठो बांध्योड़ो हो। सेजड नीच छोटी झूपड़ी ही जिकी मे अेक माचो हो। दो च्यार माटी रा बरतण हा। माच माथ ओढण बिछावण सारू गूदड़ा राख्योड़ा हा। बाड़ी मे दस बार क्यारयां ही जिकयां म हरी सबजी लगायोड़ी ही। माळी सिझ्या ताई बाड़ी म काम करतो, पाणी देवतो, सबजी उपाड़तो, धोवता अर खारिया म का चादरा म बाधर घरै ले जावतो। दिनूग घर रा लुगाई टाबर धान सट बेच आवता। माळी पाछो दिनूग अठ

आ जावतो अर सिह्या ममान ले जावता। सार सीयाळ ओ ही हिसाब रवता। चौमास अठ ई रवता। खेती ई करतो। माळी न जावण रो कया पछै राण धनकी नैं भूपडी म चन सू रैवण रा कया।

साढ री जीण उतारन पाणी पायर बाडी म पडो रैं बाध दी।

धनकी भपडी मे सोयगी ही। राणो घूणी चेतार कामळ ओढ्या तप हो। अेक अेक छाणा अर थोडी थोडी भुरक्स जरूरत मुजब उणम नाखतो जावै हो। भुरक्स नाखता ई अेक साग लो जोर सू उठती अर थोडी ताळ पछ पाछी दब जावती। रात र साग ठड ई बधती जाव ही। च्यारू कानी पाणी हुवण स ठड आप र भाव मू ई जाणीज ही। रात रो ओभको डोल मे मुसती लाव हो। पून ठड र भार सू मधरी पडती जाव ही। दूर-दूर ताई बोलता गादडा नीद री भेरचा न तोड हा। राण नीद उडावण सारू टसरिय माय स किरची चादर सेम ली ही। पण किरची ई ठड री मारी ठडी पडगी ही। राणो घूणी कन कूकडो बण्योडो पड्यो हो। आधी रात पछ धनकी बार आयी अर राण न देख र हासी अर उणन हाथ भालर भूपडी मे ले जायन सोवाण्यो।

तीन च्यार दिन बाता बाता म ई निकळग्या। राणो दूजरी माय जायर पता करन आय जावतो, पण हाल ताई बली पूगी कोनी ही। तीजी बार गयो जणै बली मिली ही। गाडीवान सू सगळी जाणकारी ली अर दूसर ई दिन बेगो ई धनकी न लेयर पाछो आवण रो क्यर पाछो आयो। धनकी न अगल दिन चालण री बात बतायी अर बेगो ई गाव पूगण रो कयो।

•

याद री दसतक

दूजै दिन धनकी नै डूंगरी बन लायर छोड दी। पछी धनकी नै लेयर रवाना हुयगी। राणो बन गडा देखता रया। जीवण रै अध्याय रो अेक पाठ पूरो हुयग्यो अर अब नूवो पाठ सरू हुवै हो। आखो दिन बली चालती रयी। धनकी सोचती रयी। हिचकोळा रै साथ विचारा रा तातण टूट हा अर जुड हा, पण धनकी रो लारो कोनी छोड हा। पण सोचण सू धनकी और घणी अळूझती जाव ही। इण उळझाड रो ना तो कोई आदि हो अर ना अंत ई हो। पाणी-पसाव सारू बळी धणई कोई कूव बन ठरती अर पाछी चालण लाग जावती। धनकी सोचै ही ओ जीवण बली दाई है जिण नै रात दिन चालणो है। चालता चालता अेक दिन बळध बूढा हुय जासी, जूवा इणा रै खाध सू उतार नै दूजा नूवा बळधा रै खाध माथ राख दियो जासी अर आ बळधा नै मरण खातर खेता मै छोड दिया जासी। आज धनकी कन रूप है गुण है, पूछ है, काल बुढापो आसी जण झूपड मे भेज दी जासी अर रावळ री तरफ सू पैटियो मिलसी, गुजार खातर। पण मन ओ कोनी भुगतणो पड ज मदास पेनडियो हुय जावै

धूजो आवण सू झटका लाग्यो। चालता विचार टूटग्या। काल ठाकरा नै ओ पतो लागग्यो क टाबर किण रो है तो दोना रो जीवणो ई मुसक्ल हुय जासी। इण भय सू बा डरपण लागगी। आदमी री समझ डर सू आधी हुय जाव अर डर नै सामन देखर तो नाठ जाव। जे समझ नी नाठ तो सामल रा भय नाठ जाव अर तू तू मे ई सगळो निपटारो हुय जाव।

हां, ब नव हा नी क ठाकर तो मारच माथ गया परा हुसी। दो तीन महीना पछ आसी जण सारी बात हुसी अर किण नै पतो चालसी क ओ किण

रा है । हू चित्रमपुर स दिन चढायर आयी हू । आज अर काल म कोई फरक कोनी । जीव न ध्यायम दियो । पण काळजो बार बार जाणा दाझतो जावै हा । ना सासरो ना पीहर अर ना नानाणो । राड हू पण रडापो कोनी । सगळा है पण की कोनी । मन मा कानी भाग्यो । मा सगळी बात समझ है पण उण रो सारो कोनी । जे सारो हुवतो ता आपरी औलाद न कुण इया बेचणी चाव । हुय, जण कोई लायी हुयी न कोई पीठी । ब्हावण हुया । अकूरडी माथ र टाबर ज्यू पालण पोषण हुयो । कोई बाप भी हुसी, अेकली मा तो पदा कोनी कर सक ही । कोई पुरुष नाव रो प्राणी जरूर हुसी । पण उणन कदई देख्यो कोनी । आग र लार मा न ई देखी । बा भी सदा हा अमूझी अमूझी रवती । थोडी बडी हुयी जण रावळ म फिरण लागगी । मा न छोट मोट काम म सारो देवण लागगी । उतरिया पुतरिया गाभा सू तन ढाकण लागगी । रात अर दिन भाजता भाजता ई निकळण लागग्या ।

कवराणी सा रो ब्याव मंडचो जण मन घणो ई हरख हुया पण म्हारी मा तो आखी रात बम सू ई रावती । उणरो बम सायो निकळयो अर मन कवराणी र साग मेल दी । मन की पतो कोनी हा । जीवण इतो करडो है, रोटी इती मूधी है । मैं मन मे सोच्यो क मा रो रोवणो फालतू है । दस बीस दिना रो अठीन बठीन रवणो है इण मे मन काई दुख है । बीती जण पतो चाल्यो क मा रो जी मैण सू ई मुलायम है अर उण रो अनुभव बडो ई खारो है । भोग्योड जीवण न पाछो कोनी भोगणो चाव ही अर ना आप री औलाद न भोगण देवणो चाव ही । पण विधाता रो खेल बडो ई विचित्र है । उणरी मरजी र मुजब खेल न खेलणो ई पडसी ।

अकूरडी रो धन निखरण लागग्यो । पीठी हुयो अर बनडी रा गीत गायीज्या । रातूरात ब्याव हुयग्यो । अेक घडी म सगळा नम दसतूर हुयग्या जण पतो लाग्यो क म्हारो माल टक री हाडी सू ही हळको है । मन म मसोजर मरगी । पण काल काई हुवण आळो है, इण रा आज मन पता कोनी हो । और आग ई चालर हुसी । समय रो फायदो उठाया कवरसा दिन

ढाळ सी। धनकी तिलमिलाय नैं उठी। अ किता कुजीवला है। आप रै स्वारथ सू सामलै रो नास ई कर देवै। साळा कुत्ता दाई गळी गळी भटकता फिर अर मनैं ई भटकण नैं मेल दी। इण भटकतै जीवण रो अेक नूवो अनुभव हुयो। आस्था हुयी। आदमी मार भी सक है अर मरत न बचाय भी सक है। राणो बचावतो निजर आयो। साळा! घडी अेक खेल खेलता अर लात री देयर पाछी काढ देवता। बैं आप री तुष्टि चावता अर म्हा सगळया नैं कुत्तडया समझता। मजबूरी रो फायदो उठावता। ओ पछ ही पतो चाल्यो क मोटियार लुगाई आखी रात किया कनैं सोव? आत्मविश्वास अर त्याग कांई हुवै है? थोडा दिन रो सरग हो अर उण सरग रो फळ पेट म तैयर चालू हू। अचाणचूक ई हाथ पेट माथ फिरग्यो अर पल सू पेट न चोखी तर ढक्यो। किती बडी विडबना है, आज जिक रो पतो ई कोनी उण माथ किसो इतमिनान, किती सुखद कल्पना।

फेर विचार पसवाडो फोरण लागग्या। जे धाखो दे दियो तो? आपणो कांई लियो। आपणो विश्वास आपण साग है, आगलै रो धाखो आगलै कन! ओ धाखो भी बडो मीठो है। याद करता-करता ई जीवण निकळ जासी। अंत में वो ही तो काम हुसी जिको आज ताई हुवतो आयो है। आपणो आपणै साग ई खतम हुय जासी। अेक नूवो खेल फेर खेलीजसी अर उण रा पात्र हुयसी आपणी औलाद अर उणा रा करम। पण उण सू पली पुराणैं खेल रो पटाक्षेप को हुवण दू नी। आग

वली चालती रयी, बात फिरती रयी। दो दिन अर अेक रात विचारा म ई निकळग्या। गाव पूगी जण दिन चिलकारो मार हो। गढ मे सरणाटो छायोडो हो। वली र साग ही अेक ईर्ष्या चेतन हुयर फिरण लागगी।

•

बोध री छिया

धनकी र बेंरी म चढर रवाना हुयां पछ राणो घणी ताळ ताई बळधां र खुरा सू उडती रजी न देखतो रैयो। धूळ रो गुबारो अेकदम लोप हुयग्यो जण हारन बो पाछो गुफा कानी चाल पड्यो। आख दिन राणो पसवाडा फोरतो रयो। सरदी रो दिन छोटो हो पण राण न पाड सो लाबो लाग्यो। बडी मुसकल सू सिंझ्या पडी। बाबाजी आरती करण सारू बगली म जावण लाग्या जण बा राण न आरती करण सारू सागै चालण रो कयो। राणा इया बोल्यो जाण कोई छव महीना रो रोगलो हुव। बाबाजी हसर कयो— हाल बोहळो जीवणो है' । अर आरती करण न गया परा।

राणो सूनो सो बोहळी देर ताई धूणी कन बठो रयो। हार न, उठर कामळ ओढर गुफा र बारण कन साग्यो। अधारी रात होळ होळ उतरण लागगी। सगळी डूगरी अधार म छिपगी। पून रो जोर बधण लाग्यो। गाभा फाडती ठड पडण लागगी ही। सूनी निंदरोही सूसाडा मारण लागगी ही। तारा म भरयो आभो ससार र जीवा री करणी न निरख हो। पून र फटकार सू धोर पलीतणो रो राग गाव ही। गुफा अधार घुप ही। राणो आख्या फाडर अधार मे खोज हो, पण उण री निजर खाली हाथ ई पाछी आव ही। चेताचूक सो हुमोडो राणो च्यारा कानी देख हो अर हारन आंख्या पाछी काठी मीच लेव हो। अधार म राणो अपण आप सू ई डरण लागग्या हा। कण ई उणन इया दीस हो जाण साप उण र कानो आव है। कण ई उणन पदचाप सुणीजता। राण न रात आधी सू घणी बीतगी लाग ही। मन म सोच्यो आज बाबाजी नीच आसी का कोनी। अेकल न ई आखी रात रवणो पडसी। इया सोचता-सोचता ई राण री मीट लागगी।

बावाजी वेगा ई आरती कर न नीच आयग्या। राण न सूतो देखर बाबाजी धूणी म छाणा, मीगणा नाखर वासती जगायो अर आटो ओसणर बाटिया बणाया अर सीरां माथ सजण लागग्या। सिकयां पछ वां बोभर म ओट दिया। सिकता बाटियां री सामीठी सुगध आव ही जिकी पून र फटकार सू गुफा म ई गयी परी। राण री भूख चेतन हुयगी। अस्थिर बिचारा न छोडर वो धरती माथ आयग्यो। उठर बार आयो अर बाबाजी सू बोल्यो—'आज तो बोहळी जेज लगाय दी ?'

नही तो, आय ता बगा ई गया हा। तन सूतो देखर बाटिया बणाय न बोभर म सिकण सारू ओट दिया है। अबार सिज जासी।

बाबाजी छाणा, मीगणा नाखन ठूठिय रो सारा दियो। फूक लगायर जगाय दिया। धूणी सू निगळती भळ मू राण रो चरो चमक हो। राणो आपरो मूडो लुकावणो चावं हो। घडी घडी लिलाड माथ हाथ फेरतो जाव हो, जाण किणी गम्योडी चीज न जोवतो हुवं। पण बठ ना ता नूवा बिचार आव हा अर ना पुराणा बिचार आपरी जागा छोड हा। बो सूनो सो बठो हो। बाबाजी राणं कानी दया देख हा जियां मावळा बरसा र लाव इतिहास रा पगलिया लिलाड माथ मडं हा। राणो उणा न मिटावणो चाव हो पण व और घणा उघडता जाव हा। बरसा सू भेळी हुयोडी पीड और सघन हुवती जाय ही। राणा टूटतो जाव हो अर कण टूटर बिखर जावला, की पतो कोनी चाल हा। अेक बिखराव भेळा हुयडो हो, राण र माय।

मून भांगता राणा बोल्यो—'बाबाजी ! काई बताऊ, घटना घटगी अर हू उण घटनावा रो अेक साखी मात्र हू। सगळी घटनावा न भेळी करणो चावू तो भी बा सगळचा नं पाछी भेळी कोनी कर सकू। उणा न भेळी करणी चावू तो भी व सगळी बिखरचोडी रसी अर हू बा सगळी वाता रो अेक कण मात्र ई रयग्यो हू। विक्रमपुर मू चाल्यो जण धनको न आगल आसण बठायी ही। ठड तो वव ही क पडसू जिकी आज इ पडसू। चालती डाफर गाभा फाड फाडर काळज न चीर ही। मारग मे दो वार तुस लेवणी पडी। आधी

कय न बाबाजी चुप हुयग्या। राणो आपरी आतमा मे झांकण लागग्यो। सरीर, आतमा अर धनकी–आ तीना री आकृति राण रै सामै आवण लागगी।

चाद सूवै विचाळ आयोडो हो। रात आधी कन पूगगी ही। घून मे ठह वधण लागगी ही। सूसाडा भरती घून री चाल खाथी ही। तारा रूपसी रै आचळ मे छुपण लागग्या हा। बाबाजी गुफा मे जावता बोल्या—'हू समाधी लगावण न जाव हू।' राणा घोर काळी अधारी आधी मे घूमण लागग्यो हो। बोहळी ताळ ताई राणो घूणी कुचरतो रयो, सोचतो रयो पण माथा की काम कोनी करै हो। हार न सोवण सारू चाल्यो।

बोहळी ताळ ताई राणो पसवाडा फोरतो रयो पछ पलका माय नींद मीठी मीठी थपक्या देवण लागगी। नींद र साग साग धनकी रा सपना ई आवण लागग्या। पेडया सू उतरती गोखी। पोमच र पल साग मन तडफतो हूवया माय कसीजत जोबन साग दिल पसीजतो दीस्यो। पाछी जावण लागी जण कसणा मे मन बध्योडो गैस्यो। लुगाई लुगाई मे फरक दीस्यो। गुदगुदा हाथ सोवणा लाग्या। मैंदी लाग्योडा हाथ नूतो देवता लाग्या। आखी रात मनै सोयी जण दारू ज्यू मीठी लागी। वार वार पीया र बाद भी तिरस जिया मिट कोनी बधती ई जावे। ठाबर साची ही कव हा क धरणी रा मरम धनकी र मन ई है। उण म अतीद्रिय आकर्षण है।

इत न धनकी री आवाज सुणीजी—'आ सगळां र खून म दारू अर अफीम रा इसो गहरो रस भरया है क थान निर्वीय बणाय दिया है। थ औरत न औरत ही नी समझ। उणां री तमन्ना दारू सी छिटनी है, उणर मोटियार री मीठी तमन्ना कोनी। कारण ब सगळा मृग मरीचिका म मर जावता पण सतान देवण म नाकाम रवता। औरत सो कौं देयर फळ भी चाव जिया मन इणा सू मिलणो दीस्यो कोनी। थार सू मिलया पछ मन ओ अहसास हुयग्यो क हू पत्थर लुगाई ही कोनी हू, जननी भी हू। इण कारण थार साग हू दिल खोलर सोयी अर मन इण सोवण रो गरव है।' राणो हडबडायर उठ्यो अर सोचण लाग्यो—साजाणीज जीवण मुरझायो कोनी। फळ देवता रयो—'हू जाम।'

रात ताई चालता रया। काळजा ठड सू कापतो जाव हो। मोरी आगळचा सू सिरक नै नीच पड ही। आधी रात टाळण सारू घास री डूगरी कनै ठरघा। पछ उणन स्यारल आसण बठायर चाल पडचा। केई दिना बाडी म राखी जण पतो चाल्यो क धनकी म काई गुण है ठाकरसा इण न वयू चाव है। लुगाई लुगाई म फरक है। और

बीच म ई बाबाजी ई बोल्या— छी। की फरक कोनी है। मन रो फरक है। जरूरत रो फरक है। मेहनत रो फरक है। लुगाई लुगाई मे की फरक कोनी है। थार मन रो बम है। वात करण र साग साग वाबाजी बाटिया बोभर माय सू काढता जाव हा अर भडकावता जाव हा। पछ राण न बाटियो देवता बोल्या— जिया भूख रो भाडो अन्न है उणी तर डील रो भाडो औरत है।' अर बाबाजी ई बाटियो खावण लागग्या। बाबाजी कोरी मोटी रोटी न इत चाव सू खाय हा जित चाव सू राजा राजसी भोजन कर।

राण भूखा मरत अेक बाटियो वगो वगो खायर दूसरो लियो। बाबाजी इतमिनान सू भोजन करचो अर कनै राख्योडी तूबी माय सू पाणी पीय न मूढा पूछघो अर तापणा सरू कर दियो। राणो छव महीना रो भूखो सो बाटिया खाया जाव हो।

बाबाजी बोल्या—'जीव आव जणै आप र साग लाव लोथ। पण पाछो जाव जण उणन छोड जाव अर साग ल जाव करम। जीव री ना तो की जरूरत हुव अर ना स्वारथ। जरूरत सगळी लोथ री है—मोह अर स्वारथ। सगळा लोथ न राख जीव नै नी। जीव परमातमा रो अश है, अजर है, अमर है। लोगा री नासमभी म अेक समभ है, व जीव न कोनी रोव क्यू क बो अमर है, लोथ न रोव जिकी मरणशील है। सरीर रो धरम है क बो जीव र साग चाल अर निरलेप भाव सू पाप पुन री पेडी चढ। पाप म लिप्त हुयन बार बार कर ता वा आचरण मू गिर। हुयोड पाप सू पाठ पढ लेव तो पाप कोनी। इण वास्त थारो पाप थारी आतमा री सुदरता माथ निभर कर।' आ

कय न बाबाजी चुप हुयग्या। राणो आपरी आतमा मे झांकण लागग्यो। सरीर, आतमा अर धनकी–आ तीनां री आकृति राण र साम आवण लागगी।

चाद सूवे विचाळ आयोडा हो। रात आधी कन पूगगी ही। पून म ठड वधण लागगी ही। सूसाटा भरती पूर री चाल खायी ही। तारा रूपसी रै आंचळ मे छुपण लागग्या हा। बाबाजी गुफा मे जावता बोल्या—हू समाधी लगावण न जावू हू।' राणो घार काळी अधारी आधी मे घूमण लागग्यो हो। बोहळी ताळ तांई राणो धूणी कुचरतो रयो, सोचतो रयो पण माथो की काम कोनी कर हो। हार न सोवण सारू चाल्यो।

बोहळी ताळ तांई राणा पसवाडा फोरतो रयो पछ पलका माथ नीद मीठी मीठी थपक्या देवण लागगी। नीद र साग साग धनकी रा सपना ई आवण लागग्या। पेडयो सू उतरती गोरी। पोमच र पल साग मन तडपतो हुयग्या मांय कसीजत जोबन साग दिल मसीजतो दीस्यो। पाछी जावण लागी जण कसणां से मन बध्योडो दीस्यो। लुगाई लुगाई म फरक दीस्यो। गुदगुदा हाथ सोवणा लाग्या। मैदी लाग्योडा हाथ नूतो देवता लाग्या। आखी रात मन सोयी जण दारू ज्यू मीठी लागी। बार बार पीयां र बाद भी तिरस जिया मिट कोनी बधती ई जाव। ठाक र साची ही कव हा क धनकी रा मरम धनकी र मन ई है। उण म अतीद्रिय आकपण है।

इत म धनकी री आवाज सुणीजी—'बा सगळा र खून म दारू अर अफीम रो इतो गहरो रस भरग्यो है क बान निर्वीय बणाय दिया है। ब औरत न औरत ही नी समझ। उणा री तमन्ना दारू सी छिछली है, उणमे मोटियार री मीठी तम ना कोनी। कारण ब सगळा मृग मरीचिका में मर जावला पण सतान देवण मे नाकाम रवला। औरत सो की देयर फळ भी चाव जिका मन दर्णा सू मिलतो दीस्यो कोनी। थार सू मिल्या पछ मन रो असास हुयग्यो क हू फक्त लुगाई ही कोनी हू जननी भी हू। इण कारण थार साग हू दिल खोलर सोयी अर मन रण सावण रो गरब है। राणो हडबडायर उठ्यो अर सोचण लाग्या—साचाणीज, जीवण मुरझायो कोनी। फळ देवतो रयो—हू जासू।

दिन ऊगण आळो हो । बावाजी अरती कर हा । चिड़या बोल ही । राणो उठर जरूरी कामा सू फारक हुयर साढ माथ जीण कसन लारल आमण बठर चाल पडया ।

'आज सू तीन महीना पलो हो तू इया ही अठ स उठर गयो हो अर आज उण सागी सवाल न लेयर पाछो आयो है । तू कायर है बुजदिल है । जिकी बात तू कवणी चाव हो बा कय कोनी सक्यो अर जिको काम करणो चाय हो बो कर कोनी सक्यो । इस आत्माहीन आदमी न लुगाई करैं ही चाव ? मजबूरी अलग है । समाज री करडी रेखावा र कारण बा छोडर अलग कोनी हुय सक पण घुट घुटर जीवणो ई कानी चावँ ।' आ कयर बाबाजी उठया अर गुफा कानी जावता बोल्या— तू जिमदार आदमी बण । पछ सोच समझर की कर ।'

बाजाजी कवता कवता चल्या गया अर राणा दूयड चिंता मे पड़यो रयो । लारला तीन महीना आत्महत्या री तर बाड़ी अर करबूजकोट कर बिताया । बम म ही मरग्यो । लुगाई टाबर काई सोचता हुसी । धनकी काई कवती हुसी । राणो हतप्रभ हुयोड़ो सोचतो रयो । पौ फाटगी ही । तारा बिमूजण लागग्या हा । चमचेड़ा पाछी गुफा र बारण आग भेळी हुवण लागगी ही । घर री मोह करन राणो उठर गाव कानी टुर बहीर हुयो ।

•

अेक सवाल

ग्रू घालती रैंयी, साढ भागती रयी। च्यारां कानी फल्योडी निंदरोही भोडळ ज्यूं चमचमाट करै ही। तावडो गाभा माथकर डील ताईं पूग हो। पसीन रा बाळा बवै हा। आम्यां पूरी खुल ही कोनी ही पण सवार तो अेड लगावता जावै हो अर नक्सो काना आळी साढ भागती जाव ही। मारी कान रै बन पडी ही। सांढ रो पसीनो भभको मार हा, अजीब सो ई। आळ्या मे रावळिया पड हा। सामन बाळू रेत रो मारग भूत ज्यूं लांबो हुवतो ई जाव हो। सूरज सिर माथकर चमकतो चमकतो आयूण कानी आवै हो। पण सवार ना सूरज कानी देग ही कानो हो। निजर अेकमात्र मारग माय ही। कण ही धोरा री चढाई आवै ही अर कण ई ढळान। सवार नै ना तो साढ टूटण रो डर हो अर ना आपर मरण रो। साढ ढाण पडी दौडती ई जाव ही। कण ई धारा माथै सिणिया बूजा रा दरसण हुय जावता इको दुको खेजडो दीख जावतो। हरियाळी र नाव बम क्सो ई हो। धोरां माय नित हमेस नूवा मारग यण अर मिट। रोटी पाणी रा दरसण भी कठ ई हुया कोनी। लोटडी म पाणी नाव रो हो। सवार न वम हो क कठ ई इण तपस मे काळी पीळी आधी नी आय जाव अर बीच मारग म कठई रुकणो नी पड। इण वासत कागोलियो गीलो करण नै पाणी रो थोडो सराजाम चाहीज। होठ सूक हा पण कागोलियो आलो हो। कागोलिय री सील साळय ताइ पूग ही। साढ मूढो हलायर नाड रो पाणी होठा ताइ लाव हो। पून र साग इका दुका छाटा उडर सवार र मूढ माथ पड हा। सवार अेक हाथ मे लियोडै गमछ सू मूण्डा पूछ लेव हो।

दिन ढळण लागग्यो हो। तावडो बिसोई तेज हो। पून रो नाव निसाण ई को हो नी। उमस बधती जावै ही। सवार रो वम बधतो जावै हो। जे वेगो नी करघो अर मौसम म वदळाव नी हुयो तो जागळ री काळी-पीळी आंधी आ जासी। मगरा म पसीन रा रीगा चाल्ह हा अर सूक हा। बा माथ पडता रावळिया पसीन बठ ई सूका लेव हा जिक सू बुकतरी करडी हुवती जावै ही। धोळो रग मटमैला हुवतो जावै हो। आभ री जहघा मे धोरिय री चढाण माथ लीलो सैनाण नेडा आवतो निजर आयो। सवार न धीरज हुयो। गाव कनै ई हो। साढ री चाल ओर तेज हुयगी। बा ई समभ ही क गाव मे पीवण न पाणी मिलसी अर चरण न चारो अर लूग। आखी तिदरोही हथेळी ज्यू साफ ही। बूजा रावळिया न ढाव हा। बूई अर स‍ाट रा बगरा पून र साग फिरता फिर हा। साढ चालती जाव ही, मारग कटतो जाव हो। घडी अेक न गाव री सीव पार करन सवार गाव कन पूग्यो। गाव र बार मारग माथ खार मीठ वळवळ पाणी रो कुवा हो। कूव कन दो अेक खेजडा अर पीपळ हो। गाव सौ अेक पावडा मारग म हटर कूव सू दूर हो।

कूव र अेक कोठो अर दो अेक घडोया ही। चाठ मे चडस पडी ही। कूव रो पाणी टूटग्यो हो। कोठ म गोडा सूधो पाणी हो। खेळी मे विलात अेक पाणी हो जिकी काई अर धूड स भरयोडी ही। पाणी री कमी तो कोनी ही पण मुरळायत ई को ही नी। मिनख जिनावरा न पीवण न पाणी घणो ई हो पण ढोळण साळ कमती हो। पणघट खाली हो। दो अेक ढावा बेला पाणी भरण साळ खडा हा। कूवो बावण आळा लोगा न लेयर 5 6 लोग चाठ माथ बठा सुसताव हा। ओपरी साढ न अेक सास भागती आवती नै देखर की बग री निजर सू देखण लागग्या। अणहूणी री कल्पना करन चिंतित हुयग्या। सवार कन आयर साढ स उतरघो अर गाळी ढीलो करन लोटडी काढर मरव सू बाधर चाठ कानी हाळ हाळ आवण लागग्यो। आपर मूढ रो ढाटो ई खोल लियो। धाडती रो थोग्नो बग हो जिका की कम हुवतो जाव हा। मू अधार मूढी दीख कोनी हो चाल पचाणीजी कोनी। कन पूगर ज माताजी री करी जण सगळा पचाणर कयो— ज माताजी री।''

आवो राणाजी, बाहुला किना सू दौल्या ?

'हां, बीदावाटी कानी गयोड़ा हा।'

है तो सा केरियत नी ?'

'हा, रवा दवणो हो।

म्हान सा की बम पड्‌यो।

'थान सा म्हारो बम पडणो ई चाहीज। राण मुळकर क्या।

रूप ई इसा बणाय राख्यो हा। बम र कोई आल्या वाडी ई हुव। थोडा सरमार माळी बाल्यो।

'आखा दिन चालनै न हुयो है रोटी न पाणी। सास गायर भाग बोल्या—'गरमा, भूख तिस अर लाबो मारग भला भला रा रूप बिगाड देव, म्हारो कवणा ई काई ?

'अर घर पधागे, रोटी जीमो।' गाव रो चौधरी बाल्यो।

जीमणो तो है ही। आज री गरमी देखअर आधी रो बम रया क कठैई गाव पूग्या पली ई नही आय जाव।'

बम तो साचो ई हो, पण सिल्या पड्या पछ पूल अगूण न यवण लागगी ही।' खेजडी माथ हालती धजा कानी आगळी सू इसारो करतो माळी बोल्यो। 'अ ह्राम धोय न अठ ई जीम लेसी, रोटी तो बणै ई है। चौधरी रो मान राखर कैया।

'हा, दा पाहर रात गया पछ टुरणा ई है। गाव म जायर काई करसू। अर रात हुनाया मे जासी परी।'

'तो ठीक है म्ह सा चालां हां।' चौधरी बोल्या। होळ होळै सगळा उठर बहीर हुया। राणै उठर साढ नै पाणी पायो अर सिनान कर नै खाणो खायो। माळी साढ नै नीर दी। अध घडी रात बीती जित साढ जुगाळी करणे लागगी। राणो कूव री सारण माथ माचो ढाळर सोयग्यो। आभ मू

चाद आवण लाग्या हा । तारा विचारा मा बिगराव लिया'ग हा । जेठ रा सूनो चाद चादणी मू मुसकराव हो । धोरा माथ पल्योडी चादणी मोन ज्यू चमक ही । दूर दूर ताई सानलिया धारा, सान र पाड ज्यू लाग हा । ठडी चालती पून सान र पाड्रा माथ थपक्या देवती चाल ही । धोरा माथ वण्योडी नरा दया लाग ही जाण सोन र समदर म तरगा उठती हुव । किता आकपण है आ धोरा म कितो नि स्पृह अपणायत है आ धोरा मे !

आधी रात ताई राणो सूनो रया । पछ उठर पाणी पीय म साढ माथ जीण कसो । लाटडी पाणा मू छलर बाधी । अर टुर पड्यो । ठडी रात म राणो हेत रा हुलास लिया चालतो जाव हा । मारग म दिन ऊग्यो । आखो दिन चाल्यो अर पाछो विसूजण न लाग्यो तो इ राणो तो चालतो ई रयो । घडी अेक रात गयाँ गाव मन पूग्यो ।

कूव माथ भीड ही । मोटियार लुगाया पाणी ल जाव हा । मोटियारा र सिर माथ पोतिया बध्योडा हा । ठाकरा न गुजरया न पनर बीस दिन हुयग्या हा । अेक महीन रा साग राखणो जरूरी हा । इण वासत गाव-भाळा रात न पाणी भर लवता अर दिन मे घर रा छोटा मोटा काम निमटायर माजीसा कन उठण न जावता । इण कारण कूवो रात न देर ताई चालता । दिनूग सासरा र पीवण वास्त पाणी कोठ माय सू ई दिया जावता । गाव रो धणी गुजरग्यो हो । सगळा काम वद हुयग्या हा । ब्याव सावो, गीत गाळ गाव मे की कोनी हुवतो । वन बटी अर बहू र पीर सासर आवण जावण माथ ना तो ओळयू गायीजती अर ना कोई बधावो । गाव रा सगळा मोटियार भदर हुयोडा हा । लुगाया पची ओढण्या ओढ राखी ही । कूव कन राणो पूग्यो जण सगळा उण र कानी देखण लागग्या । राण न अचभो हुयो—ओ काई ? सगळी बात रो पतो चाल्यो क ठाकरसा न गुजरया थोडा ई दिन हुया है । उणर पली रा समाचार को कोचा हा । इण वास्त उण भी आपर साफ माथ सोग रो निसाण गमछो बाध लियो । बूडो माचो रोयो ई । लोगा धीरज बधायो । मढो धोयर पाणी पीयो अर साढ न पाणा पायर घरा पूग्यो । घरधिराणी अबार जवार ई माजीसा मू मिलर आयी ही ।

नूई समस्या

राणो दिगूग भन्र हुयन अणमण मन सू काटडी गयो। गाव रा बूढा बडेरा दो च्यार जणा बठा हा। परवार रा ई स्याणा आदमी और बार स आयोडा मोटियार वठा हा। सगळा र चरा माय मुरदानगी ही। ठाकरा र वेट भवानीसिंह नै ठाकर वणाय दियो हो जिको हाल कोई च्यार वरसा रो ई हा। पुराणो कामदार नन बठो मैमाना स बात्या कर हा। मन मे केई राजी हा केई दुखी हा। दुनिया म सगळी भात रा लोग हुव। राजी हुवणो अर हसणो साग ई बध्योडो है। सण अर दुसमण कठ जासी ? अै तो वठ ही रैसी जठै दुनिया हुसी। राण न मूढो उतारघा बडत न देख्यो जण केइया री आख्या म फरक आयग्यो अर केइया र आसू। भवानीसिंह भी बाप र भायल न देखर रोय पडचा। राण उण न छाती मू लगायो अर सगळा सू ज 'माताजी री करी अर कन बैठग्यो।

विक्रमपुर सू आयोडो रवा कामदार कन हा। बोल बतळावण हुयगी जण बूढो कामदार बोल्यो—अन्नदाता रो हुकम हुव तो हू अरज करू। भवानीसिंहजी कानी देखर, उणा रो मून हुकारो जाणर आग बोल्यो—'विक्रमपुर सू हुकम आयो है क राणोजी न ठाकर भवानीसिंहजी रो सरक्षक नियुक्त करयो है अर राज कानी सू बाघावास र ठाकरा साग बीदावाटी री देखरेख करणी है। ठाकर भवानीसिंहजी राजी हुयो अर केई भाई वध वेराजी हुया। टूटत राण माथै अेक नूई जिमदारी रो भार पडघो। राणो इनकार करै तो किण न, अठ कोई हुकम देवण आळो ही कोनी हो। अर मजूर कर तो इ किण र साम, अठ सुणण आळो कुण हो ? नूवै आदेस रो पाळण करणो है—

जिदो वो मरतो मरतो ई करसी। आदेश र माय ही मरसी। आ सोचर बो चुप हो।

आखो दिन बैठक म ई गुजरग्यो। मिलण भिटण आळा आवता जावता रवता। नूव आदश मू रुतबो और बधग्यो हो। राणो आखे दिन सगळी बाता सुणतो रयो। सा'तो रयो नूव जीवण र विस मे। भायला गयो परो अर जावता जावता आप री जिमग्गी उण र काधा माथ नाखग्यो हो। ना ता नन सू जीवण दिया अर ना मरण स्सी। राणो चुप हो। घर न ग्हर गाव न देखर अब राव ता किण र आग ? राण र सामन घणी समस्यावा आयगी, राज परवार री। राज परवार रा केई लोग राजी हा केई नाराज हा। घात लगाया जिक बठा हा व निरास हुयन काइ बखेडा ग्रडो नी कर देव। राण न बडो साच समझर काम करणो हो। सगळा न साग रासर बीदावाटी कानी जावणो अर राज परवार सू चोखो रिसतो रासर ठाकरा रो मान ई बधावणो हो। इण वासत राण न आप रा बिसवासी अर बिसवास घाती दोना न परग्णा हा। हाजरिया सू सावधान रवणो हो। सगळी बाता न गराई सू सोच समझर राणो इण नतीज माथ पूग्यो क जे सगळा न अठ बठाय लिया तो घर हाण र अलावा और की नी हुव। सला सूत करन जिका ठाकरा रै साग मोरच सू आया हा उणा न मोरच माथ जावण री सला दी। इण बात रो सनेसो विक्रमपुर र रा'ाजी कन भिजवाय दियो। और बाकी रयोडा न आप र साग बाथावस र ठाकरा कन जायर बीदावाटी री सुरक्षा रा काम सभाळण रो समाचार भिजवाय दियो।

सिझ्या पडया पछ राणो माजीसा कन मिलण वासत गयो। उणन पखा साळ मे बठायो। राण सगळी बाता माजीसा न बिगतवार बता दी। सारी बाता हुयगी जण माजीसा बोल्या—"कुलखणी न ये अठ क्यू मेल दी ? इणर आवता ई ठाकरसा धाम पधारग्या अर राड किणरो पेट रास राख्यो है, आ आफत और है। इण वासतै इणरो इतजाम करा। राणो आ बात सुणर सरणाट मे आयग्यो। थूक गिटर आस्वासन दियो क आप जिणी बात री

फिकर मत करो, सगळो इतजाम कर दियो जासी। राण रो मन तो उचाट हुयग्यो हो अर आ इछा हुवण लागी कै अबार रा अबार धनकी सू मिलू। पण लोकलाज सू बचण सारू वी कोनी कर सक्यो। चुपचाप उठर घर आयग्यो। रात न घरधिराणी घणाई पोचो करयो क इसी काई बात हुयी जिक सू थारो चित इतो उदास है? माजीसा को कय दियो काई? पण राणा कवै तो काई कव? आपरी भूल आपन ई मताव श्रौर खुलर कव तो लोगा म हसाई हुव।

न्हूग राणो धनकी कन मिलण सारू गयो। गोर मे बीन अेक झूपडो दियोडो हो, जठ बा आपरै भाग भरोस पडी ही। वखत रा इतजार कर ही। उणर चर माथै पीळास लिया अेक गैरो अपमान झलक हो। पेट आपर गौरव सू ऊचो हो। भाग्योडो काल आज वतमान हो। जीवण रो आरम सतोप गरो निखरतो जाव हो। पण चिता री उणीज तर अेक गरी रैखा उणर चर माथ रम ही। राण न देखर झूपड र बारण सारै घूघटो काढर बोली—आवो।'

राण रा पग धरती सू चिपण लागग्या अर जीभ ताळव सू। थूक गिटर बोल्यो—आ काई?

'ओ आप रा न्योडो है' 'जिको भोगू हू।'

पण इता ?

जे ठाकर रवता तो मार दी जावती।

'पण ।

पण काय री? म्हारो कोई अस्तित्व कोनी। म्हे गुलाम हा। म्हार तन रूप हुव जित म्हारी कदर रव अर जे कदई भूल सू पट भारी हुय जाव तो मौत कनै पुगाय दी जावै का गिराय दियो जाव। दानू ई हालत म मौत र मन जावणो है। जे कोई स्याणो हुव तो किणी रो नाव गळ मढ देव। नाव किणी रो घाल अर भोग कोई। ओ भाग रो खेल है। मरीज ई कोनी

अर जीयो भी कोनी जावै। ऊपरलो जम गुणमी, सगळो बात हुसी।' अर धनकी बसक्या फाटर रोवण लागगी।

राणो आगै बधर उणन बोली राणणी चाव हो पण पग उठर पाछा थमग्या। साधर बोल्यो—'घबरा मती। सगळो इंतजाम कर देसू।' आ कैयर पाछो आयग्या।

सारी दुपारी राणो आवण जावण आळा सू अर कामदार सू बाता करतो रयो जरूरी काम सलटावतो रयो। रात न पाछो माजीसा कन जायर धनकी न पाछी भेजण री बात कैयो अर आग री सगळी व्यवस्था करण री खास बतायी। माजीसा तो आ ही चाव हा क आ पाप अठ सू टळ। अेक गोली ओछी ई सही।

दो तीन दिनां पछ अेक दिन तडक ई उण सागी बली म धनकी न पाछी थाडी कानी भिजवाय दी।

•

अणजाण्यो मारग

गाव गे सीव पार करी जित सूरज आभ मे भाकण लागयो हो। धनकी बलो म्हायर हेठ उतरी। गाव कानी देखर, सीव र सेजड़ री पेडी र हाथ लगायर लिलाड अर आख्या माथ हाथ लगायो। आख्या आसुवा सू रलगी। धोली धोली पाछी बठर हालण रो कयो। बली चाल पडी। धनकी आपरी छल्योडी आख्या सू देख्या जाव ही। रोयी तो कोनी, पण बाकी की कानी रयो। त किती रहस्यमयी है! पैदा कठ ई हुयी, पळी कठ ही। भायी किणी र साग ही। ब्याव कानी हुया पण साग सावण आळा बाहुळा जणा निकळ्या। अर अब जाव कठई ही। ना तो आग रो पतो अर ना लार रो। कुण कुण आसी कुण कुण जामी काई कथसी अर काई करसी? ब्याव तो हुयो पण ना तो पीठी हुयी, ना बनडी बणी। क्यार सहेल्या साग घूमी! सावण म हीडा हीडी। भादव म सातू आसीज्या। रीत रा रायतो हुया। अर पट ब्याव हुयग्यो। गीत घणा ई गाया है अर गावती रमी। पण

आयो सगा रो सूवटो अे
लेग्यो टोळी माय सू टाळ,
सोदर बाई सिध चाली।

रा सूवटो ना तो कदई आयो अर ना कदई इणन इत मान सू लेग्यो। जीवण किती घृणित है। नाळो है जिको रात दिन बवतो रव। मरजी म आय जिका चळू पाणी पी लेवै। मा न बाप। धनकी र बसक्या फाटण लागगी। गळो फाडर रोय ई कोनी सकी। काळजा फाटतो जाव हो। ना मा ना बाप। कुण छाती सू चिपाव कुण सिर माथ हाथ फेर, कुण उणर दुख न

बटावै ? ना चवरी आळो मोटियार, जिको ई छाती मू लगायर हुळव। कर। सगळा सुलफिया यार है। जे धनकी, तू पदा ई नी हुवती तो काई साभर सूनी रैवती ? थार विना किसो अणसरघो पड्यो हो ? जे म्हारी मा आ भूल नी करती तो किती आछो रवतो ? पण आ भूल उण री को ही नी। हरेक लुगाई चाव क वा मा बण, मोटियार सू मा बण। जे वो खसी करघाडो नीकळ तो आडोसी पडोसी सू बण। अर ण स्वारथ र कारण ई उणरी माटी पलीत हुव। वा सगळी बाता न सहन कर किण वासत, मान सताम वासत। वा मुरभावणी तो चाव पण फूल देयर।

धनकी सोचती जाव ही, गाडी चालती जाव ही। आ ही जीवण री विडवना है। आ ही भूल म्हारी मा करी अर आ ही मैं। पेट माथ हाथ फेरती सोच्यो। सरमावती पल्लो उठायर पाछो छाती अर पट माथ होळमक राख्या। दुख र असह्य दरद म ओक मुळक ही, जिकी मरघा पछ ई लार रसी। नाव राखसी। फलाणी री डीकरी है, फलाणी रो डीकरो है। किती दरद, किता दुख, अणबूझतो अपमान आ सगळा मायक्र निकळर आपरी औलाद न देखणी चाव राजी राखणी चाव दुखा सू बिलमणी चाव अपण आपन पुनर्जीवित करण सारू। आ जात किती निकमी, टुकडा माथ पळणआळी फाटघाडा परणआळी, किती ओछी है। किती खुसमिजाज है, सतोषी है, जे कोई थोडो सो सारो देवै तो उण माथै कुरबाण हुय जावै। अेर हू ई इसी भोनी, म्हार जिसी घणी ई है जिका रो जीवण म्हार सू ओर ही घणो खराब है, नीचो है।

सूरज रा घोडो दोडता जाय हा, बली रो पहिया चालतो जाव हा। बली र छीक माथ राख्योड घड रा पाणी भचळकतो जाव हो। बली र भटक साग विचार टूट हा, ठैर हा। सार मारग साग पाछा चालण लाग जाव हा।

जलमी अण मा न देखी। बाप रो नांव ई सुण्यो की। जण नाव सार समभण लागगी तो केई नाव सुणीज्या। बसक्या फाटतो आवाज सू मा न

बाप रो नाव पूछ्यो जण दो च्यार गदीड़ पड्या। आख्यां सू आसू भरण लागग्या। पूठ फोरन मा ई धीरज छोडण लागगी ही। धनकी तू अेक सवाल है जिक रो जबाव ना तो थारी मा कन है, ओर ना थार कन। बेमाता उण रो उत्तर देय सके है, पण बा अदृश्य है। इण थासत थारा सवाल थार साग ई जासी। अर तू बिना उत्तर ई मरसी। किती बडी बात है, किती ओछी बात है! ओर धनकी मन मन म बोली—धनकी! तू आ सगळा सू पर है।

धनकी सोच ही—म्हारी ओलाद भी इया ही बापू रा नाव पूछती रसी काई? नही, नही। हू उण रो पड्‌तर देसू, बतासू, देखा सू, मिलासू। ओ है थारो बाप। हू निरलज कोनी। हू म्हार काम सू लजित भी कोनी। जिका काम करयो है, सोच समझर करयो है। अेक नूवो सवाल फेर उणर सामन आयो क त जिको काम करयो है सोच समझकर करयो है? सगळा र सामन क्य सक है? पण आगलो इण बात न मजूर करया कोनी? अर ओ ही सवाल जण थार सामन दूज रूप म आयो जण तू चुपचाप रोवँ ही। पेट किण रो? इण रो पड्‌तर आज ताई किणी न दियो कोनी। सायद तू जाण ही कोनी, ओ किण रो है? मुळकर क्यो—कोई लुगाई इती अणजाण कोनी हुव। बा नाव बताव का नही, आ बात दूसरी है। लोगा रो काम है बम करणो, अर ब बम रँ नाव माथ ई जीव। अर धनकी! तू क्य सक्सी? नही-नहीं, हू को कवू नी। घुट-घुटर मर जावूली। विचारा म ही बडबडावण लागगी। रोवण लागगी। बलिय रोकर पूछ्यो काई हुयो? पाणी पायो। पड्‌तर की को दियो नी।

दो दिना ताई बली चालती री। धनकी बादी म बकती रयी। गाडी बान पाणी पावतो रँयो। काळी डूगरी कम बली पूगी जित तारा सू आभा खचाखच भरीजग्यो हो। आख दिन री तपती मिटगी ही। ठडी पून चालण लागगी ही। जीव सोरो हुवण लागग्यो हो। जीवण सा लाबो मारग ठरतो सो लाग्यो अर इया मालम पडण लागगी क जीवण रा विसराम अठ ही है। तारा मे उभरती आकाश गगा पूयू सी लांबी ही।

और धनकी विचारा म खोयोडी, हरारत सू परेशान हुयोगी गुफा कन पूगी जण बाबाजी धूणी कन बठा बठा रोटियो खाव हा। बलीवान सगळी बात बतायी, जण बाबाजी बोल्या—'ओ तो हुवणो ई हो। रात भर अठ ई विसराम करो। दिनूग बाडी कानी चल्या जाया।' थोडा ठर न बोल्या—'हाडी मे आटो पड्यो है, रोटघा बणायर खालो।

'नहीं, मारग म खायर टुरघा हा।'

•

धरम री भोजाई

धनकी सोवणा चाव ही पण विचार, लारली घटनावा कानी दौड़े हा। ना तो बा री अत हा अर ना नींद ई लेवण देव हा। आखी रात तड़फड़ावती रयी। पसवाड़ा फोरती रयी। सोचती रयी। आज सू कई महीना पली जण बा अठ आयी ही, जण जवानी न ठोकर मारती चाल ही। किती बहिमुखी ही! पुरुषा म आकषण दीखतो। आज, आज बा सगळी बाता सू किती दूर हुवती जाव है अतमुखी हुवती जाव है। काना म सगळी आवाजा आवणी बद हुयगी। जाण बार रा सगळा हेला आवणा बद हुयग्या हुव। टाबर री किलकारी रात दिन काना र कन सुणीजे है। आकषण भेळो हुय न पेट म बड़ग्या है। ओ जीवण नूवो है का जीवण री नूई बिडवना है?

काल रो भोग, आज नूव जीवण रा मारग बणतो जाव हो। काल ताई हू जिन काम न रात दिन भोगणो चाव ही उण सू ही आज मन नफरत है। म्हारा कान लारली सगळी बाता न भूलर तोतली अवाज म सुणणो चाव है—'मा तू कठ है?' आ आवाज म कितो ममत्व है। कितो आणद है। इण सुख रो ना ता आदि है अर ना अत। आकाश गगा सो पवित्र है, बिसो ई लाबो है। आदमी इण मारग माथ चालतो चालता खतम हुय जाव पण आणद कदई खतम कोनी हुव अर ना इण सू कदई पेट भरीज। आखी रात इण आणद री लरा म गुजरगी। आरती री टाली टण टण सुणीजी जण धनकी पाछी धरती माथ आयगी। हार न उठी अर जीवण रो मारग तय करण री त्यारी करण लागगी।

धोळ दाफार ताई चालता रया। बाडी कन पूग्या। माळी माळण मूळी, गाजर, कादा लगावण सारू जमीन साफ करन क्यारघा सावळ कर

हा। टाबरिया तवडका मारता फिरै हा। आ सगळा न देखर अचभो करयो। अचाणचक धोळ दोफार किया आया ? बलिय सगळी बात समझायी। राण र पाच-सात दिनां मे पूगण रो समाचार दिया अर इता दिना सारू बासो चावण री बात कयी।

धनकी सू जण माळण री रात न बात हुयी अर पग भारी हुवण रा मालम पडयो तो वी जाण्यो क धनकी दुखा री पाटळी है। लुगाई, लुगाई रो दरद समझ। आपरी धरम री नणद बणायर राखी अर हुसो, जिसो चाकरी करण रो आश्वासन दियो।

भागतो-सो चोमासो आयो। दा च्यार मूदा नाखी अर भागग्यो। बापडा किसानां मोठ, बाजरी, गवार माग तागर खेतां मे नाख्यो हो, पण सूसाडा मारतो आध्या चालो जिण म सगळो धान उडग्यो। खेता रा ऊमरा ई साफ हुयग्या। जेठ सो तपता तावडो भादव मे ई दिन भर बाळबो करतो अर रात न पडती सागीडी ठड। सावण मे आध्या चाली कानी, रोहिणी नखत तप्यो कोनी जण बिरखा कठ ! काळ रो दूसरो साल हो। हरचा हुवता आवडा जर सा लागै हा। पण करयो काई जावै ? भगवान ही बरी हुय जाव। दस पनर दिना पछ राणो बीदावटी कानी आयो जण दा दिन काढर अठीन आयो। काजळी तीज निकळगी ही। गोग री खीर खायर माख्या भागगी ही। बगत भागतो रयो। भूखा मरत करसा रा मरघोडा माईता रा सराध आयग्या। जीवता ही जठ भूखा मर हा बठ मरयोडा न कागोळ कुण घाले हो ?

कूई सूकण लागगी ही ता ई चाच चालती ही। अेक दो क्यारी, जिती ई सीचीज विती ई चाखी। सरदी पडण लागगी ही, दीयाळी आवण लागगी ही। दीयाळी काय सू मनायीज ? अठ ता काळजो ई काढ लियो हो। फेर भी सुगन तो सगळा मनावणा ही पडसो। झूपडा नीपीजण लागग्या हा। झाडण झडकावण रो काम सरू हुयग्यो हो। धनकी रा दिन नडा आवता जावै हा। अेक तो काळ अर ऊपर सू इधक मासा ! रोटया रा सासा अर ऊपर सू सुवाड। राम निभावै जिया ही निभसी। धनकी घणाई कोनी कवणो चावती ही पण, अेक दिन कय ही दियो। माळण जण पाछा पड तर दियो क जहर खायर ओ अर बो जलम बिगाडण री बात क्यू करै ? हाल तो थार भाई रा हाथ गोडा चाल है, अर भोजाई भी पागळी कोनी हुयी है।

मरद पू यू आयगी। मतीरां न भगवान इ तावता रयग्या। गौर ई पूरी सी मिली कोनी। समै रो प्रभाव जाणर सगळी बात भूलणी पड़। भगवान इणरा अपवाद कानी। न्नि छोटा हुवण लागग्या, रात बडी।

लाफसी हुयी, सागै दीया ई धस्या। सदमा पूजन हुया। मूसाडा म दीया चोखो तर जगमगाया ई कोनी। सूणशास्त्र सगळा ई करया। मैंदी लागी, पण उणरी महक फूटी ई कोनी। आगळचां रा पेरवा माथ ही लाल निसाण माडर सूख ही। गोरधनजी काय सू पूज? बारिया नीं, कायर नी, सिटी नी। पण गोरधनजी जरूर पूज्या जासी, चाव की ना हुवो। दीयो भी चसला, चाव बाट आली करन ई चसाव। काम सगळा ही करिया, पण जी र ऊपर क र। धनकी र दिन ज्यू ज्यू नडा आव हा, चिंता वधती जाव ही। पण करया काई जावै? हुणी है जिकी हुसी। सराजाम सगळो ई हुव हा, पण धनकी र जी मे बाकी की कोनी हो। बखत कितो माडो है! कोई समझ ही कोनी। धनकी रो मन घृणा सू भरतो जाव हो। अब कोई पूछ ही कोनी। पराम घर मे टुकडा खातर माज राखी है। विचार आवरा है, उणां न चाला राज ता सारो ससार चोखो दीख अर बुरा राख ता सगळा बुरा दीख है। ना ता कोई बुरो है ना कोई भलो। सगळा आदमी है। बीखो भी आव, पण धीरज खोया काम कोनी चाल।

अेक दिन राण रो भेज्याडो आदमी पूछतो पूछतो आयो। सगळी बाता हुवणै सू रोटी खायन पाछी जावण री हाथोहाथ ही त्यारी करता बोल्यो—मन राणा विसेस घडू काम सू भेज्यो है। बान तो विक्रमपुर गया नै दो ढाई महीना हुयग्या है। मन भी कोई दीयाळी कन अठ पूगणो हो पण जरूरी काम आवण सू आय को सक्यो हो नी। अब मारग जावता अेक पोहर काढर आया हू। आटी माय सू रास्ता काढर दिया क बखत बेवखत आडा आसी, अ राणाजी भेज्या है। सवार चल्या गयो अर बो धनकी रो अेक भार उतारग्यो अर दूजो छाती माथ नाखग्यो।

•

बीदावाटी

राणै नै बीदावाटी आया नै थोड़ा ई दिन हुया है । लारै सू विक्रमपुर री हालत और बिगड़ण लागगी । जागां जागा लूट मार हुवण लागगी । धाड़ती बधण लागग्या हा । दूसरै साल ओरूं काळ पड़ण सू लोग और घबरायग्या । राज रा कारिंदा चोरां सागै मिलर रयत नै लूटण लागग्या हा । मिंदर लार पड़िता नै दीयोड़ी जमीनां माथ रैस चाकरी रा माफीनामा हा । पण राजाजी आय घटण सू दोलड़ा परेसान हुयग्या । सगळा माफीनामा रद कर दिया । इण सू कोई फरक कोनी पड़यो, पण दुसमण घणा हुयग्या । मिंदर रा दो पुजारी राजाजी कनै फरियाद करण सारू विक्रमपुर आया जण बात मिलण कोनी दिया अर मारनै पाछा काढ दिया । जणै ए दोनू पुजारी गढ रै सामनै चिता बणायर बळ मरया अर मरता मरता सराप देयग्या क जा तूं ई बिना औलाद रै मरलो । आ सुरसुराट अर बाबा ज्या ज्या राजाजी कन पूगया, बा माफीनामा पाछा कर दिया । और उण जगां रै खुदायर बठै तळाव बणावण रा हुकम दियो । जठै ताई तळाव नी बण, जपिया जप करण न लाग जाव ।

ऊनाळो बीतग्यो । सीयाळो आयग्यो । थोड़ी छांटया पड़ण सू सी घणो बधग्यो । आ दिनां म ई सदेस मिल्यो क बंबई रै लाट साब रो खास आदमी विक्रमपुर हुवतो पठानकोट जावलो । उण री सुरक्षा रा सगळो इंतजाम कर दियो जाव । इण वासत बीदावाटी कानी भेज्योड़ आदम्या नै पाछाविक्रमपुर बुलाय लिया । राणो भी साग हो । साबीड़ी सरदी पड़ण लागगी जण लाट साब रो आदमी आयो । सरदी मे उणांरा दो तीन आदमी सियां मरता मरग्या हा । लाट साब रो आदमी तो वेग सू विक्रमपुर री काकड सू निकळर आग जावणो चाव हो । राजाजी आपर विसवासी आदम्या साग हिसार ताई उणनै पुगावण री व्यवस्था कर दी । राणो बी व्यवस्था रो ओक मारग दरसक हो । हिसार सू पाछो विक्रमपुर आयो जिन ता पोह रो महीनो उतरण लागग्यो हो ।

राणो विश्नमपुर सू पाछो बीदावाटी हुवतो काळी डूगरी र बाबाजी कन पूग्यो। बाबाजी कन केई वाता हुयी । दोफारो सगळो हुतायां म निक्ळग्यो। राणो रात भर बठ ही रयो। दीया बाती हुयां पछ राटघा वणायर सेक्ण लागग्या। बाबाजी बात याद अणायी क आज सू तू वाहुळा महीना पली तू इया ई अठ आयो हो। छव महीना रो बीमार सो लाग हो।

हा ।'

आज की फरक लाग है ?'

फरक काई, हू तो घणा अळूभता जावू हू ।'

अ थारा काम, अळूभ आळा ई है।

हू तो कद ई को अळूभतो हो नी, पण भगवान री मरजी ।'

'कूडो, थारी मरजी ही जण ओ सगळा काम हुया ।

म्हारी मरजी ?' अचभा करता राणो बोल्यो—'हू किसो विश्नमपुर सू इण काम सू ही चाल्या हा ?

तू चाल्यो तो ठाकरा रा काम करण सारू ई हा। पण बीच म थार मन मारग छोड दियो। आग बाबाजी बोल्या— ज ठाकर नी मारघा जाता तो थारी खाल उधेड ली जाती, पण थार आग सारा दे दियो।

कठ ? हाल ताई ता बिना ई भटकू हू । ज ओ झमट नी हुवतो तो मन काई बायड आव ही क राजाजी र काम माथ हतो घूमतो।' सास खायर राणो बोल्यो— रोटी पाणी ई छूटग्या ।'

'थार मन म सुधार नी हुसी जठ ताई हसर बाबाजी बाल्या— घणो फरक को पड नी।

राणो सरमायर चुप हुयग्या। राटघा कादर खायी। पाणी पीया। गुफा म सोवण न चल्यो गया। थाडी ताळ म बाबाजी गरी नींद म चल्या गया। राणो चित उठयोडो सो पसवाडो फोरतो रयो। कण ड धनकी दीख ही कणई घरधिराणी। आ दोना र बीच चित अ्रात हुयोडो सो राणो आखी रात घूमतो रयो। बाबाजी वगा ई उठर पूजा करण खातर बगली चाल्या गया। दिनूग ताई राणो आळस मरोडतो रयो। तावडो सागीडो

चढग्यो जण त्यार हुयर बाडी कानी चाल पड्यो । मारग मे सूचना मिली क पिंडारी लूट मार करता सखावाटी ताई आयग्या है। राणो रो आग जावण रो मता ऊश चूक हुवण लागग्यो । पण बिया ही वाडी तो गयो परो पण बठ की कोनी लाध्यो । हारन गाव गयो ।

गाव मे घर पूग्यो जण उण न पतो चाल्या क धनकी र डीकरो हुयो है। राणो राजी हुयो । पण अेक नूवी समस्या उण रै सामन आयगी । रातवास रयो । दिनूग पाछो टुर पड्यो । आस दिन पाहूर रात ताई चालतो रयो । चौकी पूगर हालचाल पूछ्या जण पिंडारिया री सूचना मिली । बिक्रमपुर पक्की सूचना लेयर सगसो भेजणा जरुरी हो । दूसर दिन पक्को आदमी सूचना लेयर आयग्यो । जण राणा टोळी बणायर बिक्रमपुर कानी चाल पड्यो ।

बिक्रमपुर आयर आ सनेसो राजाजी कन पुगायो जित्त तो पिंडारी सरदार रो रुका ई पूगग्यो । राजाजी केई दिना ताई सोच विचार करयो । पछ जयपुर र सेठा र नाव हुड्या लिखर पिंडारी सरदार कन भेजी । लण देण रा मामलो बेगा सुळझ्या कोनी । उतर पडूतर आवता जावता रैया । दो महीना इण म ई निकळग्या । हार न पिंडारी हुडी लयर शेखावाटी सू ही पाछा टुरग्या । जण जायर राण न चन पड्यो । रुत न पतो चाल्यो क लाट साब रा खास आदमी पठानकोट मू पाछा आवती वेळा बिक्रमपुर ठरया हा अर राजाजी वा मू मदद मागी है ।

इण बिस म ब भरोसो दिरायर गया है क लाट साब सू बात करन पडूतर भेजसू । इत्त म पिंडारी सरदार रो आदमी हुडी री ओळभो लेयर पाछो आयग्यो । जयपुर मे इण नाव रा कोई सेठ ई कोनी हा । हुडी खोटी ही । पण साब रै भरोसै रो समाचार सुणर बो रातारात ई पाछो विक्रमपुर मू चल्यो गयो । लाट साब र भरोस र नाव मात्र सू ई बिक्रमपुर री आफत टळगी । वा तीन महीना मे घटनावा इती तजी सू घटी क की पतो ही कोनी चाल हो क आग काई हुसी ? ना राण नै सोचण री फुरसत मिल ही । रात दिन चकरी बम सो घूमतो रवतो का धावा मारण री त्यारी म लाग्यो रवतो । जेठ सामन आयग्यो हो ।

•

अतहीन अत

जेठ मे बिरखा हुयगी ही। हळ वाय दिया हा। आभ मे घणघोर घटावा तो कोनी ही पण लोर चालै हा जिका कठई कठई बूदाबादी करै हा। बाजरी न इसी बिरखा ई घणी। गुफा रै सामन बाबाजी बठा हा। लोर सामीं सू जाव हा। केई फुवार नाख हा अर केई योथा ई उड हा। कूड मे गोडसूणो पालर पाणी हो जिक म मीडका कूद हा। मीया मीया जिनावर पाणी माथ उड हा। बाबाजी सोच हा ओ मीडको भी जोरदार जिनावर है जिको पाणी री बूदा मिलता ही जीवतो हुय जाव। पाणी सूकता ई समाधी लगायर सेलर ज्यू सूक जावै। उणरी माया अपार है। कणई तावडो जोर सू निकळ हो। मगरा माथ हुयोडी अळाया लाल हुवती जावै ही, पण जण पाणी री फुहारा पडै ही, ब पाछी माय बडण लाग जाव ही। थोडी ताळ मे बादळा रा लार चालता चालता साफ हुवण लागग्या। आभो अेकदम आसमानी हुयर चमकण लागग्यो। बाबाजी उठर गुफा मे जायर खूटी माथै टगिय इकतार न उतार लियो अर डूगरी री पडती छिया म आसण नाखर बठग्या न इकतारो बजावण लाग्या। इकतार र तार सागै अेक राग काढली—

> इण तो आगणिय हे सखी !
> केई नर खेल्या, केई खेलसी
> केई नर खेल सिधाया सखी !

पून री लरा र साग इकतार री आवाज च्यारा काना गूजण लागगी। सारी निंदरोही जीवण री अस्थिरता म सिनान करण लागगी। बाबाजी मगन हुयर आस्या मीच्या गावता जाव हा।

पड़घा चढत मिनख रै पगा र खडक सू बाबाजी री मसती टूटी। आस्या खोलर देख्यो तो राणो गोदी म टाबर लिया हाळ होळ चढ हा, जिया भाव सू उठर चालणो सीख हो। कन आयर राण डोकर न भन वठावता डडोत करी। बाबाजी इचरज सू छोर र माथ ऊपर हाथ फेरन आसीस दी अर राणै कानी देखर बोल्या— इया काई ?'

'धोखो देयगी।' वसथ्या फाटतो बोल्यो[illegible]

'काई ?' धीरज दवता बाबाजी [illegible]—'चालती रैयी ? ओ ससारे रा नम है। काम हुयो, गयो। इण म दुख री काई बात है ?' धीरज [illegible] उण री निसाणी न पाळ। थारा काम करै [illegible] बावळा पली बता तो सरी काई बीमारी हुयी ?' [illegible] पाणी आयग्यो हो।

रोवता रोवतो राणो बोल्यो—'हू पिंडारघा र सकट मे पज्योडो हो। तीन च्यार महीना इण सकट मे ई लागग्या हा। इणनू पली अठीन जावतो आपन सगळा समाचार भुगतायग्यो हो। पछ मन की पतो कोनी हो लारै काई हुयो ? छोरो दस पनर दिना रा हुयग्या हा। हू विक्रमपुर सनेसो लेयर चग्यो गयो हो। बठै ही मन भडं लाट माव र आदमी रो सनेसो भरोम रो मिल्यो हो। पिंडारघा रा झूठी हुडी रा तगादो बार बार आव हो। राजाजी देवणो तो चावै हा, पण मांग लूठी ही जिको पूरी कोनी करी जाय सक ही। सौदो पटावण म वखत बोहळो लागग्या। सेखावाटी ताई आयर सगळा पाछा आय हा जण हू खरबूजीकोट जावण सारू मारग माथ ही टळग्या।

गाव कानी गयो जण गाव रै बार ई मेडी मन ढोल बाज हा। हू मारग छोडर बठ देखण सारू गया। म्हारा तो करम ई फूटग्या। बठ धनकी नै मेडी माम नाग राखी ही। भोपो छिया मे आयोडो हो। ढोल जोर-जोर सू बाज हा। भोपो साकळा री जोर जोर सू माथ माथ माय खाव हो। म्हारो भायलो अर उणरी घरधणियाणी छोर न लिया बैठा वठा रोव हा। गाव रा दो च्यार

जणा मन गळ्या पायस बधावै हा । मोपो सून घुस तूतर भूख हा । जर छाती ताई पड्‌ग्यो हो । मठ मूं नीच उतर हो कोनी हा ।

म्हाने देखतां ई सगळा रोवण लागग्या । धनजी न होश आव हो जाव हो । म्हारो नांव सुणतां ई धनजी न होस आवड्यो । घुघळकी सावनी बोली— 'आपग्या ?' छोर कानी न्हैसर बोली—'गभाळ लिया थारी सनामी नै ।' फेर हिचकी आयगी । सांस न्हायर बोली—'इण म्हारी भावज अर इण म्हार भाई म्हारी सगळी इछावां पूरी कर दी । म्हा न कदई मत भूल्या ।' सगळा आदमी खड्या हा जिक रोवण लागग्या । फेर म्हार कानी देखर बोली—'हूं तो जावूं हूं । अंतर ।'

मैं गोदी म उठायी उणर साग ई बा आपरा प्राण त्याग दिया ।

'बाबाजी, मैं सगळा कारज करया पण म्हारो काळजो मन छोड दियो जिको पाछो कोनी आयो ।' गळगळो हुयर राणो बोल्यो—'हूं अब काई करूं ? बाबाजी की समझ म को आवेनी ।

धायस बधावता बाबाजी बोल्या— धनजी री अेक ई तमन्ना ही मा बणण री, अर बा पूरी करगी । तू स्वारथ सू भरयोडा है । बा लुगाई ही, अर लुगाई ई रवणो चावै ही । आ इछा त पूरी करी । उणरो मासूम फळ थार सामन है । इणन थार टाबरा साग बेटो कयर पाळ । बाकी रो मारग अतहीन है ।'

ओ ही करस ।' राण पडूतर दियो ।

सिंझ्या पडण लागगी ही । बाबाजी उठर बगली कानी आरती करण न चल्या गया । थोडी ताळ पछ निदरोही मे दूर दूर तांई टाली री आवाज सुणीजण लागगी ही ।



जनम एक जनवरी इकतीस

भणाइ एम ए, बी एड, प्रभाकर

लिखणू राजस्थानी और हिन्दी

पोथ्या वळतीरात (काणी सग्रह) पुरस्कृत 1972-73
काळ भरवी (ऐतिहासिक तान्त्रिक उपन्यास) पुरस्कृत 1981 (श्री विष्णु हरि डालमिया पुरस्कार सू)

माझळ (ऐतिहासिक उपन्यास) 1983 84 माय श्री पृथ्वीराज राठौर पुरस्कार सू पुरस्कृत सोधनिबध अर काण्या राजस्थानी री नामी पत्र पत्रिकावा माय छपती रवै। आकासवाणी सू वातावा अर काण्या प्रसारित हुवती रवै।

- सन्स्य (राजस्थानी परामस मण्डल) साहित्य अकादमी नई, दिल्ली।
- सन्स्य राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी, बीकानेर